इस प्रकार अंतिक कर लिया कि अपने भाई के मरने पर मेसीडोन के तख़्त पर बैठते ही उसने उसी छाया के आधार पर शासन करके मेसीडोन को भूविख्यात कर दिया । फिलिप (ई० पू०) ३६० में राज्याधिकारी हुआ । उसने अपनी प्रजा में आध्यात्मिक और युद्ध विद्या सम्बन्धी दोनों प्रकार की शिक्षाओं का प्रचार इस योग्यता से किया कि वे मेसीडोनियन जो कि एक समय में निरे असभ्य और जंगली थे थोड़े ही समय में समस्त यूनानवासी मनुष्यों में शिरोमणि कहे जाने योग्य हो गए । फिलिप ने एप्रियस के बादशाह की बेटी ओलंपियस से ब्याह किया । ओलंपियस वनदेवी डोनियस की बड़ी भक्त थी । एक समय जब कि वह शृंखलाबद्ध सर्प माला से लपटी हुई सुन्दर अंगूर की लहलही लताओं के मध्य में भक्तिरस में डूबी हुई आनन्द में मग्न होकर नृत्य कर रही थी फिलिप उसे देख कर उसके अकृत्रिम सौन्दर्य्य पर ऐसा मोहित हो गया कि उसने राज्य सिंहासन पर सुशोभित होते ही ओलंपियस को अपनी पटरानी बना लिया ।

सिकन्दर का जन्म और बाल्यकाल ।

(ई० पू०) ३५६ जुलाई मास में पीलानगर में ओलंपियस के गर्भ से सिकन्दरशाह ने जन्म लिया । जिस समय सिकन्दर का जन्म हुआ उस समय राज्यवंश की आराध्य देवी अरटिमिस के मन्दिर में आग लगी थी । फिलिप के प्रसिद्ध सेनानायक पेरमेनियों ने इलेरियंस पर विजय प्राप्त की और फिलिप के घोड़े ने ओलेंपिक के खेल में जै प्राप्त की । इससे ज्योतिषियों ने ऐसे समय में जन्मे हुए बालक सिकन्दर का भविष्य में एक होनहार और प्रताप-

शाही बादशाह होना स्वीकार किया। कहा जाता है (१) कि विवाह रात्रि के एक दिन प्रथम ओलंपियस ने स्वप्न में देखा कि एक अग्निप्रभा-समूह अकस्मात उसके पेट पर गिरा। उससे पुनः एक उज्वल जाज्वल्यमान प्रकाश की शिखा प्रगट होकर प्रचण्ड प्रदीप्ति से चारों ओर फैल कर सहसा शान्त हो गई। इधर कुछ दिन पश्चात् फिलिप ने स्वप्न में देखा कि उसने अपने हाथ से ओलंपियस के गर्भ स्थान पर सिंह की छापवाली मोहर छापी है। उनमें से बहुतों ने तो इस स्वप्न को ओलंपियस के दुश्चरित्रा होने की दैविक सूचना बतलाई परन्तु अरिस्टेंडर नामक एक वृद्ध विद्वान ने कहा कि आपका स्वप्न ओलंपियस के गर्भधारण करने की सूचना है क्योंकि एक खाली चीज पर व्यर्थ मोहर नहीं लगाई जाती और ऐसे गर्भ से जो पुत्र जन्मेगा वह सिंह के समान बलवान और भूविख्यात प्रचण्ड प्रतापशाली बादशाह होगा।

प्रथम संतान प्रसव के समय मनुष्य मात्र के हृदय में जिस अद्वितीय आह्लाद का श्रोत प्रवाहित होता है वही श्रोत सिकन्दर के पिता फिलिप के हृदयसमुद्र में पावस के

---

(१) जिस पुस्तक से मैंने इस कथा को लिया है उसमें यद्यपि "कहा जाता है" ऐसे वाक्य का प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु यह एक ऐसा विषय है कि विश्वसनीय होने पर भी ऐतिहासिक घटना से सम्बन्ध नहीं रखता-बरावंच जब कि मैं किसी विशेष लेख का अनुवाद न कर के केवल उसके आधार पर ही लिख रहा हूं तो मुझे अपने विचार से इस अवसर पर "कहा जाता है" का प्रयोग करना उचित जान पड़ा।

प्रसार प्रवाहमय अगणित गंगधारा की भांति उमड़ रहा था, क्योंकि एक तो प्राण प्रियतमा से प्रथम पुत्र उत्पन्न होने वाला था, साथ ही इस बात की सूचना मिली थी कि यह पुत्र अद्वतीय बलशाली बादशाह होगा । फिलिप ने उसी समय हकीम अरस्तू को लिखा कि मुझे पुत्र के प्रसव के आनन्द से भी अधिक उत्साह इस बात का है कि यह पुत्र आप ऐसे योग्य पुरुष द्वारा शिक्षा प्राप्त करेगा ।

शिशु सिकन्दर के पालन पोषण के लिये लेनिक (Lanike) नाम की एक स्त्री नियत की गई, किञ्चित वयोवृद्ध होने पर यद्यपि लियोनिडास (Leonidas) जो कि ओलंपिया का सम्बन्धी था, उसका संरक्षक नियत किया गया, किन्तु इसका संरक्षन नाम मात्र ही को था क्योंकि अरस्तू के मत और आदेश के अनुसार सिकन्दर को सात वर्ष की अवस्था तक केवल उन्हीं बातों की शिक्षा प्राप्त होने दी गई थी जिन का अनुभव मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं कर सकता है । सात वर्ष की अवस्था के पश्चात् उसकी पठन पाठन सम्बन्धी शिक्षा आरम्भ हुई और इस शिक्षा के लिये लेसिमेकस (Lysimachus) नामक विद्वान पुरुष नियत किया गया और इस लिये सिकन्दर का प्रथम शिक्षक या निरीक्षक यही कहा जाता है । लेसिमेकस ने सिकन्दर को वर्णों की लिपि और उच्चारण का ज्ञान होने उपरान्त होमर काव्य का पढ़ाना आरंभ कराया । सिकन्दर के आतंकमय, जघन्य और ओज-वर्द्धक शूरता के समस्त कार्य्य, उसकी ज्ञानेन्द्रियों में व्याव-हारिक बातों का ज्ञानसंपादन करने की शक्ति का अविर्भाव होने के समय से ही उसे ऐसे विकट काव्य के पढ़ाए जाने

के ही फल, कहे जा सकते हैं। यह काव्य सिकन्दर को ऐसा प्रिय था कि उसने उसकी एक प्रति "इलियेड" सदैव अपने पास रक्खी और अन्त में अन्तिम स्वांस के छोड़ने तक उसे न छोड़ा।

सिकन्दर के सम्बन्ध में आगे और कुछ कहने के पहिले उसकी शारीरिक बनावट के विषय में कुछ परिचय दे देना अच्छा होगा। उसकी एक पाषाण की मूर्ति में दिखाया गया है कि उसकी गर्दन कुछ बाईं तरफ को झुकी हुई थी परन्तु उससे उसके रोबीले दिखाव और सैान्दर्य्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती थी। उसका कद मामूली, चेहरा सुडौल और खूबसूरत आंखें कुछ तिरछी साधारण, परन्तु विचित्र चमकदार थीं। अपिलीज़ ने अपने लिखे हुए चित्र में उसका रंग अधिक भूरा होना दिखाया है, परन्तु वास्तव में उसके शरीर का रंग लामिया था और उसके सीने और मुंह पर बारीक बारीक सुर्खदाग से थे। यूनानी ग्रन्थकारों ने लिखा है कि उसके स्वेद से अनोखी सुगंधि फैलती थी और यह बात माननीय भी है परन्तु मिस्टर जान लेगहार्न लिखते हैं कि इस सुगंधि का कारण उसका अधिक स्वादिष्ट शराब पीना था।

सिकन्दर की भविष्य होनहार उसके बाल्यवस्था के आचार व्यवहार और स्वभाव से ही प्रगट होने लगी थी। जब कभी कोई परशिया का एलिची फिलिप के दरबार में आता और फिलिप के हाजिर न होने से सिकन्दर को उस से मिलने को जाना पड़ता तब वह उस एलिची से बड़ी ही योग्यता और राज्योचित शिष्टाचार के साथ मिलता। उससे

सिर को पकड़ कर यह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर उसे बिना चाबुक या लगाम के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त होगया तब उसे लाकर फिलिप के सामहने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तू अपने लिये अपने बाहुबल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य ले.जाकर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा—अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता था। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू* की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और वीरोचित कार्य्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त करली जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू

लड़कपन का सा व्यवहार या बात चीत न करके बड़े चाव से पूछता कि यहां से परशिया कितनी दूर है ? बीच में मार्ग कैसा है ? उत्तरीय एशिया खण्ड का भूभाग किस प्रकार का है ? वहां का जल वायू कैसा है ? वहां कैसे मनुष्य रहते हैं ? परशिया के बादशाह की सैनिक और प्रजा सम्बन्धी नैतिक दशा कैसी है ? वह अपने शत्रु से किस प्रकार का व्यवहार करता है ? परशिया किन किन बातों के कारण शत्रु से अजेय और दुर्दम कहा ज सकता है ? जब कभी उसे समाचार मिलता कि उसके पिता फिलिप ने अमुक अमुक प्रदेश पर विजय प्राप्त की, अमुक शत्रु सेना को परास्त किया, तब वह अपने भविष्य राज्य की सीमा की वृद्धि से प्रसन्न होने के बदले मलिन मन होकर कहता कि यदि मेरा पिता ही समस्त भूभाग का विजेता बन जायगा तो मैं आगे क्या करूंगा ।

जिस समय सिकन्दर तेरह वर्ष का हुआ तो एक सौदागर एक ऐसे घोड़े को लेकर फिलिप के पास आया कि जिसपर कोई भी सवार नहीं हो सकता था । यद्यपि घोड़ा बड़ा ही सुन्दर तेज चंचल और अच्छे खेत का था किन्तु उक्त दुर्गुण के कारण फिलिप ने उसे लेने में नाहीं की । इस पर सिकन्दर ने पिता से आज्ञा मांगी कि यदि मुझे हुक्म हो तो मैं इसपर सवार होऊं । फिलिप के दरबारी सर्दार इसे सिकन्दर की एक बाल बुद्धि और अव्यय धृष्टता जान कर मुस्कराने लगे परन्तु फिलिप ने स्वयं आज्ञा प्रदान करके सिकन्दर के उत्साह को और भी बढ़ा दिया । सिकन्दर ने घोड़े के पास जाकर घोड़े को इस प्रकार से खड़ा किया कि जिसमें उसकी छाया स्वयं उसके साम्हने रहे और तब उसके

सिर को पकड़ कर यह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर बसे बिना चाबुक या मनरेल के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त होगया तब उसे लाकर फिलिप के साम्हने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तूं अपने लिये अपने बाहुदल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य ले जकर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा—अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि यह कोई साधरण मनुष्य नहीं है। यह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता था। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और वीरोचित कार्य्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त करली जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू

लड़कपन का सा व्यवहार या बात चीत न करके बड़े चाव से पूछता कि यहां से परशिया कितनी दूर है? बीच में मार्ग कैसा है? उत्तरीय एशिया खण्ड का भूभाग किस प्रकार का है? वहां का जल वायू कैसा है? वहां कैसे मनुष्य रहते हैं? परशिया के बादशाह की सैनिक और प्रजा सम्बन्धी नैतिक दशा कैसी है? वह अपने शत्रु से किस प्रकार का व्यवहार करता है? परशिया किन किन बातों के कारण शत्रु से अजेय और दुर्दम कहा जा सकता है? जब कभी उसे समाचार मिलता कि उसके पिता फिलिप ने अमुक अमुक प्रदेश पर विजय प्राप्त की, अमुक शत्रु सेना को परास्त किया, तब वह अपने भविष्य राज्य की सीमा की वृद्धि से प्रसन्न होने के बदले मलिन मन होकर कहता कि यदि मेरा पिता ही समस्त भूभाग का विजेता बन जायगा तो मैं आगे क्या करूंगा।

जिस समय सिकन्दर तेरह वर्ष का हुआ तो एक सौदागर एक ऐसे घोड़े को लेकर फिलिप के पास आया कि जिसपर कोई भी सवार नहीं हो सकता था। यद्यपि घोड़ा बड़ा ही सुन्दर तेज चंचल और अच्छे खेत का था किन्तु उक्त दुर्गुण के कारण फिलिप ने उसे लेने में नाहीं की। इस पर सिकन्दर ने पिता से आज्ञा मांगी कि यदि मुझे हुक्म हो तो मैं इसपर सवार होऊं। फिलिप के दरबारी सर्दार इसे सिकन्दर की एक बाल बुद्धि और अव्यय धृष्टता जान कर मुस्कराने लगे परन्तु फिलिप ने स्वयं आज्ञा प्रदान करके सिकन्दर के उत्साह को और भी बढ़ा दिया। सिकन्दर ने घोड़े के पास जाकर घोड़े को इस प्रकार से खड़ा किया कि जिसमें उसकी छाया स्वयं उसके साम्हने रहे और तब उसके

सिर को पकड़ कर वह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर उसे बिना चाबुक या मसरेज के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त होगया तब उसे लाकर फिलिप के साम्हने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तूं अपने लिये अपने बाहुबल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य खोज कर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा—अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता था। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और वीरोचित कार्य्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त करली जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू

लड़कपन का सा व्यवहार या बात चीत न करके बड़े चाव से पूछता कि यहां से परशिया कितनी दूर है? बीच में मार्ग कैसा है? उत्तरीय एशिया खण्ड का भूभाग किस प्रकार का है? वहां का जल वायू कैसा है? वहां कैसे मनुष्य रहते हैं? परशिया के बादशाह की सैनिक और प्रजा सम्बन्धी नैतिक दशा कैसी है? वह अपने शत्रु से किस प्रकार का व्यवहार करता है? परशिया किन किन बातों के कारण शत्रु से अजेय और दुर्दम कहा ज सकता है? जब कभी उसे समाचार मिलता कि उसके पिता फिलिप ने अमुक अमुक प्रदेश पर विजय प्राप्त की, अमुक शत्रु सेना को परास्त किया, तब वह अपने भविष्य राज्य की सीमा की वृद्धि से प्रसन्न होने के बदले मलिन मन होकर कहता कि यदि मेरा पिता ही समस्त भूभाग का विजेता बन जायगा तो मैं आगे क्या करूंगा।

जिस समय सिकन्दर तेरह वर्ष का हुआ तो एक सौदागर एक ऐसे घोड़े को लेकर फिलिप के पास आया कि जिसपर कोई भी सवार नहीं हो सकता था। यद्यपि घोड़ा बड़ा हीं सुन्दर तेज चंचल और अच्छे खेत का था किन्तु उक्त दुर्गुण के कारण फिलिप ने उसे लेने में नाहीं की। इस पर सिकन्दर ने पिता से आज्ञा मांगी कि यदि मुझे हुक्म हो तो मैं इसपर सवार होऊं। फिलिप के दरबारी सर्दार इसे सिकन्दर की एक बाल बुद्धि और अव्यय धृष्टता जान कर मुस्कराने लगे परन्तु फिलिप ने स्वयं आज्ञा प्रदान करके सिकन्दर के उत्साह को और भी बढ़ा दिया। सिकन्दर ने घोड़े के पास जाकर घोड़े को इस प्रकार से खड़ा किया कि जिसमें उसकी छाया स्वयं उसके साम्हने रहे और तब उसके

सिर को पकड़ कर वह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर उसे बिना चाबुक या मगरेल के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त होगया तब उसे लाकर फिलिप के साम्हने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तूं अपने लिये अपने बाहुबल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य ले.जकर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा—अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता था। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और वीरोचित कार्य्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त करली जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू

लड़कपन का सा व्यवहार या बात चीत न करके बड़े चाव से पूछता कि यहां से परशिया कितनी दूर है? बीच में मार्ग कैसा है? उतरीय एशिया खण्ड का भूभाग किस प्रकार का है? वहां का जल वायू कैसा है? वहां कैसे मनुष्य रहते हैं? परशिया के बादशाह की सैनिक और प्रजा सम्बन्धी नैतिक दशा कैसी है? वह अपने शत्रु से किस प्रकार का व्यवहार करता है? परशिया किन किन बातों के कारण शत्रु से अजेय और दुर्दम कहा जा सकता है? जब कभी उसे समाचार मिलता कि उसके पिता फिलिप ने अमुक अमुक प्रदेश पर विजय प्राप्त की, अमुक शत्रु सेना को परास्त किया, तब वह अपने भविष्य राज्य की सीमा की वृद्धि से प्रसन्न होने के बदले मलिन मन होकर कहता कि यदि मेरा पिता ही समस्त भूभाग का विजेता बन जायगा तो मैं आगे क्या करूंगा।

जिस समय सिकन्दर तेरह वर्ष का हुआ तो एक सौदागर एक ऐसे घोड़े को लेकर फिलिप के पास आया कि जिसपर कोई भी सवार नहीं हो सकता था। यद्यपि घोड़ा बड़ा ही सुन्दर तेज चंचल और अच्छे खेत का था किन्तु उक्त दुर्गुण के कारण फिलिप ने उसे लेने में नाहीं की। इस पर सिकन्दर ने पिता से आज्ञा मांगी कि यदि मुझे हुक्म हो तो मैं इसपर सवार होऊं। फिलिप के दरबारी सर्दार इसे सिकन्दर की एक बाल बुद्धि और अव्यय धृष्टता जान कर मुस्कराने लगे परन्तु फिलिप ने स्वयं आज्ञा प्रदान करके सिकन्दर के उत्साह को और भी बढ़ा दिया। सिकन्दर ने घोड़े के पास जाकर घोड़े को इस प्रकार से खड़ा किया कि जिसमें उसकी छाया स्वयं उसके साम्हने रहे और तब उसके

सिर को पकड़ कर वह हिलाने लगा यहां तक कि घोड़ा अपनी ही छाया को देख कर एक प्रकार से डर सा गया; तब सिकन्दर ने उसपर सवार होकर उसे बिना चाबुक या मसरेल के सीधा दौड़ाना आरम्भ किया और जब दौड़ते दौड़ते घोड़ा थक कर पस्त होगया तब उसे लाकर फिलिप के साम्हने खड़ा कर दिया। इस पर फिलिप ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा कि, हे पुत्र, तू अपने लिये अपने बाहुबल द्वारा ही दूसरा विस्तृत राज्य खोज कर; क्योंकि यह छोटा भूभाग तेरे ऐसे भाग्यवान और पुरुषार्थी पुरुष के शासन करने के लिये बहुत थोड़ा है। यह घोड़ा सदैव के लिये सिकन्दर का साथी बना।

शिक्षा—अरस्तू और सिकन्दर।

यद्यपि अरस्तू का मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् आरम्भ होनी चाहिए, परन्तु सिकन्दर की पूर्व्व कथित योग्यता और उसके साहस ने फिलिप और उसके दरबारियों पर यह भली भांति प्रगट कर दिया कि वह कोई साधरण मनुष्य नहीं है। वह आध्यात्मिक शिक्षा की अवधि में तीन वर्ष न्यून होने पर भी ऐसी शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण योग्यता रखता था। अतएव सिकन्दर उसी समय से अरस्तू की मानव जीवन सम्बन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर ने जन्म से सात साल का समय तो खेल कूद कर शारीरिक सुधार में ही बिताया, शेष ६ साल में उसने लिखना पढ़ना और योरोचित कार्य्यों की शिक्षा भली भांति प्राप्त करली जिसका एक प्रमाण भी दिखाया जा चुका है। अब अरस्तू

के शिष्य होकर सिकन्दर ने न्याय और पदार्थ विज्ञान के तत्वों की शिक्षा लेनी आरम्भ की। जिस प्रकार सिकन्दर की विचार शक्ति बहुत सूक्ष्म और उत्तम श्रेणी की थी उसी प्रकार उसका हृदय भी गम्भीर और स्वच्छ था, इसलिये उसने अपने सुयोग्य शिक्षक को ऐसा प्रसन्न कर लिया कि जिससे उसने उसे न्याय के गहन तत्वों का भली भांति बोध करा दिया, जो कि संसार भर के मनुष्य जाति मात्र के व्यवहार करने योग्य हैं और इसी सूक्ष्म न्याय तत्वों ने ही सिकन्दर को अपने जीवन में अद्वितीय योग्यता और प्रशंसा का पात्र बना कर भूविख्यात किया, जैसा कि आगे यथावसर प्रगट किया जायगा। अरस्तू स्वयं एक बड़ा भारी तत्ववेत्ता था किन्तु उसने सिकन्दर पर केवल तत्व ज्ञान सम्बन्धी कल्पना शक्तियों का आविष्कार नहीं किया वरन उसे यथोचित राज्य शासन सम्बन्धी शिक्षा दी। वह जानता था कि एक राजा या बादशाह को सम्पूर्ण विद्या और कला कौशल का जानने वाला और गुण ग्राहक होना जरूरी है, क्योंकि जब तक वह उस सम्बन्ध में वास्तविक गुण दोष का न्याय करने में कदापि समर्थ नहीं हो सकता। वर्क्स आफ़ वर्दीज़ के एडिटर ने लिखा है कि अरस्तू ने सिकन्दर को राज्य शासन सम्बन्धी एवं मनुष्य के उच्च जीवन सम्बन्धी समस्त शिक्षाएं दी थीं; परन्तु उसने अपने युवा शिष्य को सन्तोष वृत्ति एवं निज निग्रह की शिक्षा नहीं दी थी।

सिकन्दर के ऐसे होने में अरस्तू का दोष नहीं था वरन तेज मिज़ाजी स्वेच्छाचार और असीम साहस ये बातें सिकन्दर ने अपने माता पिता से स्वाभाविक ही सीखी थीं।

अरस्तू ने सिकन्दर को राजनैतिक तत्वों को ऐसी अच्छी तरह समझाया था कि उसने उन्हीं के सहारे यथासमय योग्यता से काम लेकर समस्त एशियाखण्ड पर विजय पताका उड़ाई। अरस्तू की शिक्षा से सिकन्दर को पुस्तक पठन पाठन का ऐसा प्रेम और अभ्यास होगया था कि वह अपने अन्तरंग या राज्य सम्बन्धी कार्य्यों से अवकाश पाते ही सदैव भांति भांति की पुस्तकें पढ़ा करता था, यहां तक कि जब वह एशिया में रात दिन लड़ाई झगड़ों में लगा रहता था उस समय भी अवकाश पाकर पठन पाठन में प्रवृत्त हो जाता था।

शिक्षा प्राप्त कर चुकने के पीछे भी सिकन्दर अपने योग्य गुरु अरस्तू का अपने पिता की भांति आदर करता था, केवल आदर ही नहीं वह पिता की भांति उससे श्रद्धा भी करता था और साफ साफ कहा करता था कि जन्मदाता हो कर पिता पूजनीय है तो जन्म सुधारक होने के कारण शिक्षक का महत्व पिता से कम नहीं है। अरस्तू ने सिकन्दर को नीति, न्याय, तत्व, ज्ञान, इत्यादि के सिवाय कुछ विशेष विशेष बातें ऐसी बतलाई थीं कि जो सिवाय उन दोनों गुरु चेले के और किसी को मालूम नहीं थीं। एक समय जब कि सिकन्दर परशिया में था उसने सुना कि अरस्तू ने एक पुस्तक लिखी है, और उसमें इन गुप्त विषयों का लेख है जो कि अब तक उसके सिवाय और किसी को नहीं मालूम थे—इस पर उसने अरस्तू को लिखा कि यदि आप "एक्रोमेटिक और इपोप्टिक (Acromatic and Epoptic) विद्या का सर्वसाधारण में प्रचार करेंगे तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। इसका उत्तर अरस्तू ने इस प्रकार से दिया कि मैं उस विद्या का

के शिष्य होकर सिकन्दर ने न्याय और पदार्थ विज्ञान के तत्वों की शिक्षा लेनी आरम्भ की। जिस प्रकार सिकन्दर की विचार शक्ति बहुत सूक्ष्म और उत्तम श्रेणी की थी उसी प्रकार उसका हृदय भी गम्भीर और स्वच्छ था, इसलिये उसने अपने सुयोग्य शिक्षक को ऐसा प्रसन्न कर लिया कि जिससे उसने उसे न्याय के गहन तत्त्वों का भली भाँति बोध करा दिया, जो कि संसार भर के मनुष्य जाति मात्र के व्यवहार करने योग्य हैं और इसी सूक्ष्म न्याय तत्वों ने ही सिकन्दर को अपने जीवन में अद्वितीय योग्यता और प्रशंसा का पात्र बना कर भूविख्यात किया, जैसा कि आगे यथावसर प्रगट किया जायगा। अरस्तू स्वयं एक बड़ा भारी तत्ववेत्ता था किन्तु उसने सिकन्दर पर केवल तत्त्व ज्ञान सम्बन्धी कल्पना शक्तियों का आविष्कार नहीं किया वरन उसे यथोचित राज्य शासन सम्बन्धी शिक्षा दी। वह जानता था कि एक राजा या बादशाह को सम्पूर्ण विद्या और कला कौशल का जानने वाला और गुण ग्राहक होना जरूरी है, क्योंकि जब तक वह उस सम्बन्ध में वास्तविक गुण दोष का न्याय करने में कदापि समर्थ नहीं हो सकता। वर्क्स आफ़ बर्दीज़ के एडिटर ने लिखा है कि अरस्तू ने सिकन्दर को राज्य शासन सम्बन्धी एवं मनुष्य के उच्च जीवन सम्बन्धी समस्त शिक्षाएं दी थीं; परन्तु उसने अपने युवा शिष्य को सन्तोष वृत्ति एवं निज निग्रह की शिक्षा नहीं दी थी।

सिकन्दर के ऐसे होने में अरस्तू का दोष नहीं था वरन तेज मिज़ाजी स्वेच्छाचार और असीम साहस ये बातें सिकन्दर ने अपने माता पिता से स्वाभाविक ही सीखी थीं।

अरस्तू ने सिकन्दर को राजनैतिक तत्वों को ऐसी अच्छी तरह समझाया था कि उसने उन्हीं के सहारे यथासमय योग्यता से काम लेकर समस्त एशियाखण्ड पर विजय पताका उड़ाई। अरस्तू की शिक्षा से सिकन्दर को पुस्तक पठन पाठन का ऐसा प्रेम और अभ्यास होगया था कि वह अपने अन्तरंग या राज्य सम्बन्धी कार्य्यों से अवकाश पाते ही सदैव भांति भांति की पुस्तकें पढ़ा करता था, यहां तक कि जब वह एशिया में रात दिन लड़ाई झगड़ों में लगा रहता था उस समय भी अवकाश पाकर पठन पाठन में प्रवृत्त हो जाता था।

शिक्षा प्राप्त कर चुकने के पीछे भी सिकन्दर अपने योग्य गुरू अरस्तू का अपने पिता की भांति आदर करता था, केवल आदर ही नहीं वह पिता की भांति उससे श्रद्धा भी करता था और साफ साफ कहा करता था कि जन्मदाता हो कर पिता पूजनीय है तो जन्म सुधारक होने के कारण शिक्षक का महत्व पिता से कम नहीं है। अरस्तू ने सिकन्दर को नीति, न्याय, तत्व, ज्ञान, इत्यादि के सिवाय कुछ विशेष विशेष बातें ऐसी बतलाई थीं कि जो सिवाय उन दोनों गुरु चेले के और किसी को मालूम नहीं थीं। एक समय जब कि सिकन्दर परशिया में था उसने सुना कि अरस्तू ने एक पुस्तक लिखी है, और उसमें इन गुप्त विषयों का लेख है जो कि अब तक उसके सिवाय और किसी को नहीं मालूम थे–इस पर उसने अरस्तू को लिखा कि यदि आप "एक्रोमेटिक और इपोप्टिक (Acromatic and Epoptic) विद्या का सर्वसाधारण में प्रचार करेंगे तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। इसका उत्तर अरस्तू ने इस प्रकार से दिया कि मैं उस विद्या

सर्वथा प्रचार नहीं कर रहा हूं परन्तु हां मेरे लेखों में उस भाग से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। क्या जाने इसी कारण से हो कि सिकन्दर का मन अरस्तू की तरफ से कुछ खटक सा गया। यद्यपि सिकन्दर ने अरस्तू को किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचाई और न उसने उसका कभी अनादर किया परन्तु उसकी अचल भक्ति में अवश्य बट्टा लग गया।

फिलिप ने अरस्तू को इस शिक्षा सम्बन्धी कार्य्य के बदले में जो पारितोषिक दिया वह यह था कि अरस्तू का जन्मस्थान शहर स्तनजिरा जिसको फिलिप ने पहिले किसी कारण वश बरबाद और उजाड़ कर दिया था, फिर से आबाद करवा कर उसे हाट, बाट, चौहटे, बाजार, बाग, बगीचे आदि सब भांति से एक सुन्दर राजधानी की भांति सज कर कुछ जागीर के साथ अरस्तू को दिया गया। स्तनजिरा में कुछ टूटे फूटे मकान और पत्थर पड़े हुए हैं जो कि अब भी अरस्तू के प्रबन्ध में उपरोक्त स्थानों के चिन्ह कहे जाते हैं।

सिकन्दर का यौवन काल।

जिस समय सिकन्दर की उम्र केवल सोलह वर्ष की थी उसके पिता फिलिप को एथिनियन लोगों पर चढ़ाई करनी पड़ी जो कि डिमास्थानिज़ नामक गायक के उभाड़ने से मेसीडोन के विरुद्ध सन्नद्ध हो कर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। फिलिप सिकन्दर को राजधानी की रक्षा पर छोड़ कर जिस समय आप शत्रुओं के सम्मुख गया तो इधर मेदी नामक एक पुराने बागी ने उपद्रव मचाना शुरू किया। सिकन्दर ने स्वयं उस पर आक्रमण कर के उसे

सपरिवार दमन कर डाला और उसके निवासस्थान पर आस पास के मनुष्यों को बटोर कर एलोकजेण्ड्रोपोलीज़ नामक शहर आबाद किया। तब तक थीबीयन लोगों ने सर उठाया अतएव सिकन्दर ने पिता की आज्ञानुसार उन्हें सदैव के लिये मेसीडोन के अधीन बना लिया। उसने थीबियन लोगों को इस बात का भी विश्वास दिला दिया कि वे सिकन्दर के रहते अब स्वतंत्रा की इच्छा न करें। फिलिप सिकन्दर की इस वीरता और पराक्रम से ऐसा प्रसन्न और सन्तुष्ट हुआ कि वह अब कभी कभी प्रेम में आकर सिकन्दर को मेसीडोन का बादशाह और अपने को उसका सेनापति कहा करता था।

परन्तु पिता पुत्र का यह वात्सल्य प्रेम बहुत दिनों तक न निभ सका। पिता पुत्र दोनों के हृदय में शीघ्रही ऐसा वैमनस्य उत्पन्न हो गया कि आगे लिखा हुआ जिसका परिणाम सिकन्दर ऐसे बुद्धिमान पुरुष के सम्बन्ध में किसी प्रकार कलंक का कारण भी कहा जा सकता है, परन्तु वह उसका हेतु नहीं था। इस वैमनस्य का हेतु विलक्षण है। इस लिये इसका सम्पूर्ण दोष होनहार ही रक्खा जाना उचित है।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर की माता ओलंपियस को अपनी इष्ट आराध्या देवी होनियस की बड़ी भक्ति थी। इसी कारण उसे सर्पों से इतना अधिक प्रेम था कि पांच काष्ठस्वरूप काले काले कालिया भुजङ्ग सदैव उसके पास रहा करते थे और क्या जाने उसके इसी व्यवसाय से फिलिप को उससे एक प्रकार ऐसी घृणा और

सर्वथा प्रचार नहीं कर रहा हूं परन्तु हां मेरे लेखों में उस भाग से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। क्या जाने इसी कारण से हो कि सिकन्दर का मन अरस्तू की तरफ से कुछ खटक सा गया। यद्यपि सिकन्दर ने अरस्तू को किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचाई और न उसने उसका कभी अनादर किया परन्तु उसकी अचल भक्ति में अवश्य बट्टा लग गया।

फिलिप ने अरस्तू को इस सिक्षा सम्बन्धी कार्य्य के बदले में जो पारितोषिक दिया वह यह था कि अरस्तू का जन्मस्थान शहर स्तनजिरा जिसको फिलिप ने पहिले किसी कारण वश बरबाद और उजाड़ कर दिया था, फिर से आबाद करवा कर उसे हाट, बाट, चौहटे, बाजार, बाग, बगीचे आदि सब भांति से एक सुन्दर राजधानी की भांति सज कर कुछ जागीर के साथ अरस्तू को दिया गया। स्तनजिरा में कुछ टूटे फूटे मकान और पत्थर पड़े हुए हैं जो कि अब भी अरस्तू के प्रबन्ध में उपरोक्त स्थानों के चिन्ह कहे जाते हैं।

सिकन्दर का यौवन काल।

जिस समय सिकन्दर की उम्र केवल सोलह वर्ष की थी उसके पिता फिलिप को एथिनियन लोगों पर चढ़ाई करनी पड़ी जो कि डिमास्थानिज़ नामक गायक के उभाड़ने से मेसीडोन के विरुद्ध सन्नद्ध हो कर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। फिलिप सिकन्दर को राजधानी की रक्षा पर छोड़ कर जिस समय आप शत्रुओं के सम्मुख गया तो इधर मेदी नामक एक पुराने बागी ने उपद्रव मचाना शुरू किया। सिकन्दर ने स्वयं उस पर आक्रमण कर के उसे

सपरिवार दमन कर डाला और उसके निवासस्थान पर आस पास के मनुष्यों को बटोर कर एलोकजेण्ड्रोपोलीज़ नामक शहर आबाद किया। तब तक थीबीयन लोगों ने सर उठाया अतएव सिकन्दर ने पिता की आज्ञानुसार उन्हें सदैव के लिये मेसीडोन के अधीन बना लिया। उसने थीबियन लोगों को इस बात का भी विश्वास दिला दिया कि वे सिकन्दर के रहते अब स्वतंत्रा की इच्छा न करें। फिलिप सिकन्दर की इस वीरता और पराक्रम से ऐसा प्रसन्न और सन्तुष्ट हुआ कि वह अब कभी कभी प्रेम में आकर सिकन्दर को मेसीडोन का बादशाह और अपने को उसका सेनापति कहा करता था।

परन्तु पिता पुत्र का यह वात्सल्य प्रेम बहुत दिनों तक न निभ सका। पिता पुत्र दोनों के हृदय में शीघ्रही ऐसा वैमनस्य उत्पन्न हो गया कि आगे लिखा हुआ जिसका परिणाम सिकन्दर ऐसे बुद्धिमान पुरुष के सम्बन्ध में किसी प्रकार कलंक का कारण भी कहा जा सकता है, परन्तु वह उसका हेतु नहीं था। इस वैमनस्य का हेतु विलक्षण है। इस लिये इसका सम्पूर्ण दोष होनहार ही रक्खा जाना उचित है।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर की माता ओलंपियस को अपनी इष्ट आराध्या देवी होनियस की बड़ी भक्ति थी। इसी कारण उसे सर्पों से इतना अधिक प्रेम था कि पांच कालस्वरूप काले काले कालिया भुजङ्ग सदैव उसके पास रहा करते थे और क्या जाने उसके इसी व्यवसाय से फिलिप को उससे एक प्रकार ऐसी घृणा और

सर्वथा प्रचार नहीं कर रहा हूं परन्तु हां मेरे लेखों में उस भाग से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। क्या जाने इसी कारण से हो कि सिकन्दर का मन अरस्तू की तरफ से कुछ खटक सा गया। यद्यपि सिकन्दर ने अरस्तू को किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचाई और न उसने उसका कभी अनादर किया परन्तु उसकी अचल भक्ति में अवश्य बट्टा लग गया।

फिलिप ने अरस्तू को इस शिक्षा सम्बन्धी कार्य्य के बदले में जो पारितोषिक दिया वह यह था कि अरस्तू का जन्मस्थान शहर स्तनजिरा जिसको फिलिप ने पहिले किसी कारण वश बरबाद और उजाड़ कर दिया था, फिर से आबाद करवा कर उसे हाट, बाट, चौहटे, बाजार, बाग, बगीचे आदि सब भांति से एक सुन्दर राजधानी की भांति सज कर कुछ जागीर के साथ अरस्तू को दिया गया। स्तनजिरा में कुछ टूटे फूटे मकान और पत्थर पड़े हुए हैं जो कि अब भी अरस्तू के प्रबन्ध में उपरोक्त स्थानों के चिन्ह कहे जाते हैं।

सिकन्दर का यौवन काल।

जिस समय सिकन्दर की उम्र केवल सोलह वर्ष की थी उसके पिता फिलिप को एथिनियन लोगों पर चढ़ाई करनी पड़ी जो कि डिमास्थानिज़ नामक नायक के उभाड़ने से मेसीडोन के विरुद्ध सन्नद्ध हो कर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। फिलिप सिकन्दर को राजधानी की रक्षा पर छोड़ कर जिस समय आप शत्रुओं के सम्मुख गया तो इधर मेदी नामक एक पुराने बागी ने उपद्रव मचाना शुरू किया। सिकन्दर ने स्वयं उस पर आक्रमण कर के उसे

सपरिवार दमन कर डाला और उसके निवासस्थान पर आस पास के मनुष्यों को बटोर कर एलोकजेण्ड्रोपोलीज़ नामक शहर आबाद किया। तब तक थीबीयन लोगों ने सर उठाया अतएव सिकन्दर ने पिता की आज्ञानुसार उन्हें सदैव के लिये मेसीडोन के अधीन बना लिया। उसने थीबियन लोगों को इस बात का भी विश्वास दिला दिया कि वे सिकन्दर के रहते अब स्वतंत्रा की इच्छा न करें। फिलिप सिकन्दर की इस वीरता और पराक्रम से ऐसा प्रसन्न और सन्तुष्ट हुआ कि वह अब कभी कभी प्रेम में आकर सिकन्दर को मेसीडोन का बादशाह और अपने को उसका सेनापति कहा करता था।

परन्तु पिता पुत्र का यह वात्सल्य प्रेम बहुत दिनों तक न निभ सका। पिता पुत्र दोनों के हृदय में शीघ्रही ऐसा वैमनस्य उत्पन्न हो गया कि आगे लिखा हुआ जिसका परिणाम सिकन्दर ऐसे बुद्धिमान पुरुष के सम्बन्ध में किसी प्रकार कलंक का कारण भी कहा जा सकता है, परन्तु वह उसका हेतु नहीं था। इस वैमनस्य का हेतु विलक्षण है। इस लिये इसका सम्पूर्ण दोष होनहर ही रक्खा जाना उचित है।

यह तो कहा ही जा चुका है कि सिकन्दर की माता ओलंपियस को अपनी इष्ट आराध्या देवी डोनियस की बड़ी भक्ति थी। इसी कारण उसे सर्पों से इतना अधिक प्रेम था कि पांच कालस्वरूप काले काले कालिया भुजङ्ग सदैव उसके पास रहा करते थे और क्या जाने उसके इसी व्यवसाय से फिलिप को उससे एक प्रकार ऐसी घृणा और

असमंजसता उत्पन्न होगई कि वह उससे दूरही रहने लगा। यद्यपि दंपति में उक्त व्यवहार इसी रीति पर बहुत दिन से चला आता था परन्तु वे बालक सिकन्दर को समान रूप से प्यार करते थे पर सिकन्दर पिता से अधिक अपनी माता को ही चाहता था। कुछ दिनों पीछे फिलिप का चित्त ओलंपियस से ऐसा खट्टा हो गया कि उक्त विरोध का अंकुर दोनों के दिलों से फूट निकला और वे एक दूसरे के पूरे विरोधी बन गए, फिलिप ने चिढ़ कर अतलस की पुत्री क्लियोपात्रा से अपना दूसरा विवाह कर लिया। ओलंपियस का स्वभाव अत्यन्त क्रूर और डाही था इसलिये उसने पति के इस व्यवहार से क्रुद्ध कर सिकन्दर को पिता के विरुद्ध उभाड़ना चाहा, किन्तु बुद्धिमान सिकन्दर इस बात को टालता ही गया अन्त में एक दिन का जिक्र है कि फिलिप की नवीन भार्य्या के सम्बन्धियों में से किसी की शादी थी। उसमें फिलिप सिकन्दर तथा राज्य के अन्य कर्म्मचारी गण प्रस्तुत हुए। जिस समय आमोद प्रमोद में मग्न होकर लबालब मद के प्याले ढलने लगे उसी समय नव वधू महारानी के पिता ने यह कह कर शराब का प्याला खाली करना चाहा "कि नव वधू के गर्भ से जन्मा हुआ बालक मेसीडोन का उत्तम शासक हो"। इस पर सिकन्दर से न रहा गया उसने साम्हने रक्खा हुआ प्याला उक्त दरबारी के सिर पर ऐसे जोर से फेंक कर मारा कि वह बेहोश हो गया। इस पर फिलिप मदान्ध अवस्था में अत्यन्त आवेग और क्रोध के वशीभूत होकर म्यान से तलवार खींच कर सिकन्दर पर ऐसा झपटा कि जो अधिक मदोन्मत्तता

के कारण लड़खड़ा कर गिर न पड़ता तो तुमने सिकन्दर को फाटकर दो टुकड़े कर ही दिया होता। फिलिप के लड़खड़ा कर गिरने पर सिकन्दर ने एक गम्भीर स्वर मे केवल यही कहा जो शख्स समस्त एशिया देश पर विजय प्राप्त करना चाहता है उसकी यह दशा है कि एक कदम भी अच्छी तरह आगे नहीं बढ़ सकता।

इतना कह कर सिकन्दर वहां से चल दिया। उसने उसी समय अपनी माता को तो एपिरस भेज दिया और आप इलेरिया (Illyris) को चला गया। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद फिलिप ने सुना कि सिकनदर वहां पर किसी हीन कुलकामनी से सम्बन्ध करना चाहता है इसलिये उसने उसे किसी प्रकार अपने पास बुला भेजा "यह बुलाना किस कारण से था सो तो ईश्वर ही जाने"–परन्तु फिलिपस्वयं उसी नवीन स्त्री के भाई भतीजों के बीच में रहता जिससे राज्य के प्राचीन सम्बन्धियों की मान मर्य्यादा में भी किसी प्रकार बट्टा लगने लगा जिस से वे सब के सब गुप्त रीति से सिकन्दर के सच्चे मित्र और सहकारी बन गए।

कुछ दिनों के बाद सिकन्दर की छोटी बहिन के विवाह होने का समय आया। इस विवाह के उत्सव में जब फिलिप श्वेत वस्त्र धारण किए राजसी ठाठ से उत्सव भवन को जा रहा था औसिया नामक एक पुरुष ने जिसको फिलिप ने किसी समय भरे दरबार में अनुचित बातें कह कर बेइज्जत किया था सहसा आकर फिलिप के पेट में तलवार घुसेड़ दी और आप भाग कर निकल गया होता परन्तु अंगूर की बेल में पैर लपट जाने से गिर पड़ा और

फिलिप के शरीर रक्षकों ने उसे काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।

सिकन्दरशाह का शासन।

इस रीति से फिलिप के मारे जाने पर बीस वर्ष की अवस्था में सिकन्दर शाह मेसीडोन के राज्यसिंहासन पर बैठा। उक्त घटना के दो महीने पीछे तक राज्य कार्य्य सब ज्यों का त्यों चलता रहा। इस अवसर पर सिकन्दर ने पिता के मृत कर्म से निश्चिन्त होकर एवं अपने दरबारियों और राज्य सम्बन्धी सब पुरुषों को अपने भविष्य में होने वाली राज्य शासन प्रणाली की सूचना देकर उन्हें युक्तिपूर्व्वक यह समझा दिया कि मैं अपने से विरोध करने वाले को दण्ड देने में जितना उद्दण्ड हूं अपने अधीन होने वाले पर मैं उतनाही कृपा करने वाला हूं। सिकन्दर ने सब से पहिले राजधानी मेसीडोनिया के प्रबन्ध का पूरा पूरा इन्तजाम करके मेसीडोन की पहाड़ी सीमा पर रहने वाले लोगों पर अपना आतङ्क जमा कर उन्हें मेसीडोन राज्य की अधीनस्थ प्रजा बनाना चाहा और तब यूनान की अन्यान्य जातियों पर अधिकार जमा कर उसने अपने को यूनान देश का प्रधान नेता बनाना चाहा। अपनी इच्छा के विषय में अपना मन्तव्य स्पष्ट करके उसने अपने राज्य मन्त्रियों की सलाह पूछी तब उन्होंने उत्तर दिया कि यदि आप अपनी ऐसी इच्छा प्रगट करते हुए अन्यान्य जाति के नेताओं से पत्र व्यवहार करके सन्धि द्वारा ही उनके नेता बने सकें तो अच्छा हो। इस पर सिकन्दर ने उत्तर दिया कि

ये जो सदैव से स्वतन्त्र रह कर नितान्त स्वेच्छाचारी हो गए हैं मेरी ऐसी इच्छा प्रगट करने पर मेरा तिरस्कार करेंगे और क्या संभव है कि वे सब लोग इकट्ठे मिल कर एक साथ ही इस राज्य के विरुद्ध बगावत ठान दें तो फिर उस अवस्था में उनका सम्हालना भी कठिन पड़ जायगा अतएव मेरे विचार से यही सिद्ध होता है कि मेरी उक्त इच्छा यूनान की समस्त भिन्न जातियों पर आतङ्क जमाने से ही पूर्ण हो सकती है। सिकन्दर का यह विचार सबने निर्विवाद स्वीकार कर लिया।

यद्यपि फिलिप ने करीब करीब यूनान देश की सब जातियों पर आक्रमण करके उन पर मेसीडोन का प्रभुत्व प्रगट कर दिया था, परन्तु फिलिप की ये चढ़ाइयां ऐसी न थीं कि जिनका आतङ्क बहुत समय तक रहे। इसलिये सिकन्दर ने एक बड़ी भारी सेना लेकर मेसीडोन के उत्तर भाग की तरफ कूच किया और मारामार मार काट करता हुआ वह डेनूब तक चला गया। डेनूब पर उसको ट्रिबली के बादशाह सरमस का साम्हना करना पड़ा, इस पथरीले और पहाड़ी मैदान में सिकन्दर की शिक्षित फौज ने बराबर चार महीने तक बड़ी बड़ी कठिनाइयां सहन कर सरमस को परास्त किया। जिस समय सिकन्दर इस पहाड़ी कन्दराओं में लड़ भिड़ रहा था उस समय ग्रीसके और द्वीपों में यह खबर फैल गई कि सिकन्दर मार गया है, इसलिये थीब्रि-यन लोग जो अब तक उसीके डर से मेसीडोन का अधिकार मानते थे, बिगड़ खड़े हुए और मेसीडोन के विरुद्ध बड़े बड़े षड्यन्त्र रचने लगे। सिकन्दर ने ज्यों यह खबर सुनी ही वह

हेनूब से थीब्ज़ पर इस वेग से आया कि जब वह सर पर ही आ पहुंचा तब थीबियन लोगों को मालूम हुआ कि सिकन्दर अभी जीता जागता है। सिकन्दर ने पहिले तो थीबियन के सरदार (Phanix) फानिक्स से कहला भेजा कि यदि वे उसे अपना अधिपत्ति स्वीकार कर लें तो वह उन्हें क्षमा कर देगा। अन्यथा वे पूरी तौर से बरबाद किए जायगे। सिकन्दर के इस सँदेसे को उन्हें।ने यों ही उड़ा दिया। इसलिये सिकन्दर ने इस वेग से आक्रमण किया कि उनसे सम्हालते न बन पड़ा। उसने थीबियन लोगों के गांव गांव शहर शहर को बरबाद कर दिया। पहिले तो बहुत से मनुष्य यों ही कत्ल में मारे गए, शेष जो पकड़े गए उनमें से बहुत से मनुष्य तो गुलाम की भांति बेच दिए गए शेष एक दम सैनिकों को चमकती हुई तलवारों के शिकार बने।

इसी समय कुछ सैनिक एक स्त्री को पकड़ कर एक अफ़सर के पास लाए और बोले इसने बहुत कुछ धन माल छिपा रक्खा है परन्तु बतलाती नहीं है, इससे जब अफ़सर ने पूछा तो स्त्री ने उत्तर दिया कि हां "मैंने लूट खसोट के समय अपना सब माल एक कुंए में डाल दिया है। अफ़सर यह कहता हुआ कि 'अच्छा बतलाओ' स्त्री के साथ हो लिया। स्त्री ने एक कुंए के पास पहुंच कर कहा कि यह है। अफ़सर ने ज्योंही उस में झुककर देखना चाहा कि स्त्री ने उसे उसी कूंए में ढकेल दिया और ऊपर से पत्थर डाल दिया। तब सिपाही लोग उसे पकड़ कर सिकन्दर के पास ले गए, सिकन्दर ने उससे पूछा कि तू कौन है, उसने

उत्तर दिया कि मैं उस थर्जिस की बहन हूं जो कि अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये तुम्हारे पिता फिलिप के सम्मुख कोनिया के युद्ध में मारा गया है। सिकन्दर उसका यह उत्तर सुन कर उससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने स्त्री के उक्त कार्य्य की प्रशंसा करके उसे छोड़ दिया। ईमास्थामीज़ के बहकाने से एथीनियन लोगों ने भी सर उठाया था किन्तु थीबियन लोगों की ऐसी दुर्दशा देख कर वे स्वयं चुप हो गए और उन्होंने अपने मुखियाओं को सिकन्दर के पास आप ही उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिये भेज दिया।

सिकन्दर की असली इच्छा यूनान भर का मालिक कहलाने की नहीं थी वरन यह यूनान देश को निज राज्य शासन सम्बन्धी एक्य में बांध कर उन देशों पर विशेष कर परशिया पर यूनान देश का आतङ्क जमाना चाहता जो, हजारों वर्ष से यूनान पर अपना आधिपत्य जमाए हुए उसे अपना गुलाम ख्याल करते थे। इसलिये उसने थीब्ज़ पर अपना प्रचण्ड प्रताप दिखला कर समस्त ग्रीस पर अपना ऐसा आतङ्क जमा लिया कि वे सब लोग जो अब तक अपने को स्वतन्त्र मानते थे उसे अपना अधिपति वा नेता मानने लगे। इसी समय कारिन्थ में एक दरबार रचा गया जिसमें यूनान देश की सब भिन्न भिन्न जातियों के नेता और स्वतन्त्र राजधानियों के प्रतिनिधि सिकन्दर की सेवा में आए, और उन सबने प्रसन्नतापूर्वक सिकन्दर को यूनान देश का सिरताज महाराज मान कर इस बात का प्रण किया कि वह यूनान देश को परशिया राज्य की गुलामी से छुड़ाने

जमाने की इच्छा से वीरशिरोमणि सिकन्दरशाह निज जन्म दाता ओलंपियस और गौरवाधार जन्मभूमि से विदा मांग कर उपरोक्त सैनसंख्या सहित यूनान और परशिया के बीच का समुद्र पार करने को किश्ती पर सवार हुआ। सिकन्दरशाह अप्रैल के महीने भर जल यात्रा करने के बाद एशिया द्वीप के किनारे पर जा उतरा और वहां से इलियन तक वे रो टोक आगे बढ़ता गया। इलियम में पहुंच कर उसने अपने डेरे डाल दिए और सब सेना को वीरोचित आमोद प्रमोद एवं उत्तमोत्तम व्यायोमादि करने की आज्ञा देकर आप अपने पूर्वभूत वीरवर पुरुषाओं को बलि प्रदान करने लगा। उसने एकीलीज़* के समाधि स्थान पर स्तूप बना कर उसको तेल से स्नान करवाया और अपने साथियों सहित उसके चारों तरफ नंगे पैर परिक्रमा लगाई। उसने उक्त स्तूप शिखर पर एक राज्य मुकुट भी चढ़ाया। उस समय उसने कहा कि वीर पुरुषों की सच्ची प्रसन्नता इसीमें है कि उनके जीवन काल में उन्हें एक ईमानदार आज्ञाकारी बहादुर और सच्चा मित्र मिले और मरने पश्चात् उसकी संतान में कोई उसीके समान वीर हो। इसके सिवाय उस ने शहर में जा कर परीस के तँबूरे को देखा और कहा कि मैं यहां इस तँबूरे की बहुमूल्यता देखने नहीं आया हूं पर यह देखने आया हूं कि यह वह तँबूरा है जिस पर से एकीलीज़ के वीरोचित गुणानुवाद गाए जाते थे। इसी अवसर में वे

---

* सिकन्दरशाह का प्रथम शिक्षक लालिमक्ष उसे एकीलीज़ का अवतार कहा करता था इस लिये उसको भी इसका विश्वास हो गया था और वह अपने को एकीलीज़ का ही अवतार मानता था।

यूनानी लोग जो परशिया की गुलाम प्रजा बन कर रहते थे सिकन्दर के साथी बन गए।

जिस समय सिकन्दर इलियम में पड़ा हुआ यह कौतुक कर रहा था परशिया की राजधानी का सेनापति मीमन एक उत्तम शिक्षित सेना लेकर मैसीडोन की तरफ इस विचार से चल पड़ा कि जिसमें सिकन्दर को अपनी राजधानी की रक्षा के लिये आपही परशिया छोड़ देना पड़े। परन्तु मीमन के रास्ते में मर जाने से यह सब विचार ही विचार रह गया। अतएव परशिया के बादशाह दारा ने बीस हजार सेना गरनिकम नदी के किनारे तक इस अभिप्राय से भेजी कि जिससे परशिया राज्याधीन एशिया-माइनर पर के ज़िले सिकन्दर के प्रबल आक्रमण से बचाए जा सकें। सिकन्दरशाह इस मैदान की ऐसी लड़ाई से बहुत प्रसन्न था, वह जानता था कि ऐसी लड़ाई में मेरी सेना अवश्य विजयिनी होगी, परन्तु जून के महीने की धूप और गरमी की प्रखरता के कारण उसके सैनिक कुछ ममहार थे, साथ ही इसके उसके पिता फिलिप का साथी विकट रणविद्याविशारद सेनापति परमिनो का भी यह कथन था कि बर्फ पिघलने से नदी की बढ़ वेढब हो रही है इसीसे मेरा भी चित शंका करता है, परन्तु सिकन्दर ने यह कह कर सबका उत्तर दिया कि जिस हिम्मत के सहारे हेलिसपांट की खाड़ी पार की उसके लिये यह गरनिकस नदी क्या चीज़ है। यह कह कर वह अपनी सेना को व्यूहबद्ध खड़ा करके दो समभागों में बांटकर गरनिकम के किनारे पर आडटा। सेना के वाम पक्ष का अधिपति परमिनो था और दाहिने का स्वयं सिकन्दर था।

नदी के किनारे पर खड़े हुए सन्नद्ध योधागण अपने स्वच्छ शस्त्रों को चमचमाते हुए सिकन्दर की आज्ञा पाने के उत्सुक थे कि इतने में सिकन्दर ने यह कहते हुए कि प्यारे भाइयो आओ मेरा साथ दो और अपनी वीरता से शत्रु सेना को परास्त करके संसार में अमर यश लो"—अपना घोड़ा गरनिकस की जलधारा में डाल दिया।

सिकन्दरशाह के घोड़े की बाग उठते ही समस्त यूनानी सेना उसी व्यूहवद्ध अवस्था में उसके पीछे हो ली। तुरही ढोला आदि रणवाद्यों के रव और कड़खों की कड़ी तान से गरनिकसके किनारे पथरीला मैदान गूंज उठा। सिकन्दर ने कुछ तिरछा रुख काट कर चाल दी और वह इस रीति से कि उतनी सेना के व्यूहवद्ध तारतम्य में तनिक भी गड़बड़ न हो सकी। यूनानी सेना ने जलधारा पार करके ज्योंही किनारे पर चढ़ना चाहा कि उधर से पारसी सेना ने आक्रमण कर दिया। इस समय यूनानी सेना की भी हिम्मत बढ़ी और यह वह दुरी का काम था कि ढलुए और कीचड़ के स्थान में होने पर भी ऊपर से आक्रमण करने वाली शत्रुसेना का वे मुकावला कर सकें। उन्होंने केवल मुकाबला ही नहीं किया वरन वे अपने तेज और तर्जदार चमकीले भालों की नोक से ठेल कर शत्रु को गरनिकस के किनारे पार की समतल भूमि पर ले गए। इस मैदान में बड़ी ही विकट मार पड़ी। सिकन्दर अपने राजसी भड़कीले बख़्र और कलगी से पहिचाना तो जाता ही था अतएव रोहतक़ और स्त्रीडोटस दो पारसी सैनिकों ने उसे आ घेरा। इसी अवसर में सिकन्दर का भाला टूट गया, तब वह तलवार से लड़ने

लगा परन्तु रोहसस ने बगल से फरसे का ऐसा वार किया कि हाथ ओछा पड़ने से सिकन्दर के सिर की केवल कलगी कट सकी और जब तक वह दूसरा वार करे कि सिकन्दर के भाई क्रीटस ने उसे ही भाले से छेद लिया तब तक सिकन्दर ने स्प्रीहोटस को काट कर दो कर दिया। इन दोनों सेना नायकों के मरते ही समस्त पार्सी सेना तीन तेरह होकर भाग उठी, केवल कुछ यूनानी लोग जो उस सेना में थे इस उम्मेद से डटे रहे कि सिकन्दर उनसे शिष्टाचार का बर्ताव करके उन्हें अपना ले और सिकन्दर को यह उचित भी था। परन्तु उसने ऐसा न किया। उसने तामसी वृत्ति के अधीन हो कर उनको भी दमन करना ही निश्चय किया अस्तु वे लोग भी प्राण का मोह छोड़ कर भिड़ पड़े। इन लोगों के मुकाबले में सिकन्दर को बड़ी कठिनता पड़ी क्योंकि वे भी युद्ध विद्या में वैसे ही दक्ष थे जैसे कि उसके निज सैनिक। अन्त में वे सब के सब काम आए और सिकन्दर ने फतह पाई। कहा जाता है कि इस युद्ध में पारसी सेना के दल के बारह हजार पैदल और दो हजार सवार काम आए और सिकन्दर के २५ सर्दार और कुछ सवार प्यादे *। इस समय उसके जो सरदार काम आए उसने उनकी पाषाण मूर्ति बनवाकर स्थापित करवाई। यह उनके सम्मान और अन्य सेनानायकों का उत्साह बढ़ाना दोनों का हेतु कहा जा सकता है।

---

* ये सब हालात केवल यूनान के इतिहासकारों की लेखनी से उद्धृत किए गए हैं इसलिये शत्रु की हानि के विषय में अत्युक्ति और निज हाथ का छिपाया जाना मालूम होता है:

सिकन्दर ने रणक्षेत्र को साफ करवा कर दोनों तरफ के मृतकों को मिट्टी दिलाई और घायलों की औषधि आदि का उचित प्रबन्ध करवा कर वह उनसे बड़े ही नम्र और सुहृद भाव से मिला, और अपनी सेना को लूट की आज्ञा न देकर सब प्रजा से निज सनातन प्रजा की तरह पेश आया, जहां के शासन की जो प्रथा प्रणाली थी उसमें भी किसी प्रकार का हेर फेर न किया, केवल पारसी अफसरों के स्थान में यूनानी अफसर नियत कर दिया। सिकन्दर की इस विजय और विजित लोगों पर उसके इस राज्योचित व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि समुद्र के किनारे की वहुत सी जातियां और प्रसिद्ध धनवान नगर जो फारस राज्य की प्रजा थे वे आप विन प्रयास सिकन्दर को अपना सिरताज मानने लगे। शहर सरीदस जहां पर खुसरो या कारू का मशहूर खजाना था वहां के सरदार ने शहर का सब धन धान्य सिकन्दर के आगे रख दिया। वहां से वहुत कुछ अमूल्य रत्न और स्वर्णादि लेकर वह एपसिस में आया जहां कि आर्टिस देवी का मन्दिर उसकी जन्म तिथि को जल कर भस्म हो गया था। वहां उसने उस मन्दिर को वनवाया। आगे चल कर सिकन्दर ने मलीटस को उड़ा कर वरबाद कर दिया।

यहां पर हेलीकारनेसस और मैमन ने उसका अच्छा मुकाबला किया किन्तु अन्त में वे गढ़ में दवक कर रह गए। सिकन्दर उनको बाहर न होने देने के लिये वहां पर १००० सिपाहियों का घेरा डलवा कर आप आगे बढ़ा। सिकन्दर ने शेष शीत काल के समय में लसिया, पामफेलिया,

पिसिडिया आदि स्थानों पर अपना अधिकार जमाते हुए मांगरस नदी के किनारे पर स्थित शहर गारडियम में आकर अपने सफर का प्रथम वर्ष पूरा किया।

सिकन्दर का यद्यपि मुख्य मन्तव्य पारस की स्वाधीनता के नष्ट करने का थी किन्तु यह बात उसे बहुत ही ज़रूरी जान पड़ी कि सब से पहिले समुद्र के किनारे पर ही वह अपना आतंक और आधिपत्य जमा लेवे। इधर समुद्र के किनारे किनारे अधिकतर उन यूनानी थीबियन और एथीनियन लोगों की बस्ती थी जो कि असभ्य पारसी लोगों के गुलाम की भांति जीवन व्यतीत कर रहे थे। यद्यपि यूनान देशान्तर्गत थीबियन और एथिनियन चाहे सिकन्दर के प्रभुत्व से सच्ची प्रीति न रखते हों, परन्तु ऐसे पराधीन लोग सिकन्दर को अपना सच्चा हितैषी करके मानते थे और वे उसके सहायक होते जाते थे। इसलिये सिकन्दर ने इन प्रदेशों के लेने में अधिक कठिनता न जान कर जाड़े के शुरू में अपने बहुत से साथियों को यूनान को वापस भेज दिया। इन वापस जाने वालों में प्रायः वे ही लोग थे जो कि सिकन्दर की यात्रा के कुछ दिन पहिले ही विवाह करके अपनी नव दुलहिनों को विरहाग्नि में तपता छोड़ कर उस के साथ चले आए थे। उसका इनसे यह भी अभिप्राय था कि वे लोग अपनी जन्मभूमि में जाकर उसके विजय की खबर दें जिसमें कि वहां के लोगों का भी उत्साह बढ़े और वे राज्य कार्य्य सम्बन्धी काम अच्छी तरह करते रहें।

जिस समय सिकन्दर कारिया में आया वहां की विधवा रानी वृद्धा स्वयं उसके पास आई। उसने सिकन्दर के

सम्मुख होकर कहा कि हे पुत्र मेरा बहनोई मुझे निकाल कर आप राज्य का स्वामी बना बैठा है। यह सुनते ही सिकन्दर ने उसका राज्य उसे दिलवाया और आप बहुत दिन तक उसका मेहमान बना रहा। इदा सदा सिकन्दर को पुत्र की तरह मानती रही और सिकन्दर भी उसपर माता की भांति प्रेम करता था। वह सिकन्दर के लिये नित भोजन बना कर भेजती थी। जिस समय सिकन्दर उससे विदा हो कर चलने को था इदा ने पाक विद्या में दक्ष कुछ उत्तमोत्तम रसोइएँ उसके साथ भेज देने चाहे परन्तु सिकन्दर ने उस की इस कृपा के लिये कृतज्ञता स्वीकार करते हुए यह उत्तर दिया कि मेरे गुरू अरस्तू के ये वाक्य ही मेरे जीवन भर के लिये उत्तम से उत्तम भोज्य पदार्थ हैं कि प्रातः काल शौच से निश्चिन्त हो कुछ भोजन करके बाहर जाऊं, रात्रि को हलका और कम भोजन करूं, मेरे साथ में कैसेही गुल गुले विस्तर क्यों न हों परन्तु सफ़र में सदा अपनी गठरी पुटरी पर ही आराम करूं।

सिकन्दर की दारा से पहिली लड़ाई।

(ई० पू०) ३३३ में वसंत ऋतु के आरम्भ होते ही सिकन्दर को फिर से मुड़कर कूच करना पड़ा क्योंकि इस समय वह एक ऐसे स्थान में था जो कि एशिया माइनर और सीरिया दोनों प्रदेशों का कोना है जहां पर कि तारस पहाड़ के शिखर और उनसे निकले हुए अड़गड़ झरनों के कारण वहां की भूमि ऐसी विकट है कि कुछ थोड़े से सैनिक भी वहां रह कर एक बड़ी भारी शिक्षित सेना को सहज ही परास्त कर सकते हैं और इस बात की भी सम्भावना थी

कि शायद पारसी सेनापति मीमो से कुछ रोक टोक करनी पड़े। इसलिये सिकन्दर ने इस पहाड़ी रास्ते से ही इस तरह निकल जाना विचारा कि जब तक पारसी फ़ौज उसके मुकाबिले को तय्यार हो तब तक वह स्वयं उसके सर पर जा जमे। सिकन्दर ने सुना कि पारसी सेना शहर तारसस को जलाने के लिये जा रही है और तारसस के जलजाने पर सिकन्दर के वहां से समुद्री सफर का मार्ग बंद हो जाना संभव था, इसलिये वह तारसस को बचाने के लिये बड़ी तेज़ी से पहाड़ी मार्ग ते कर मैदान में आन पहुंचा। इसी प्रकार सफर करता हुआ जिस समय सिकन्दर किडंस नदी पर पहुंचा वह रास्ते के गर्द गुबार से भरा हुआ और थका मांदा तो था ही, नदी के स्वच्छ जल को देख कर वैसे ही पसीना भरा जल में पैठ पड़ा। नदी का पानी बरफ के गलाव का था इसलिये सिकन्दर को उसी समय से इस ज़ोर से बुखार आने लगा कि उसके मरने जीने की पड़ गई। इसका बड़ा भारी कारण यह था कि मैसीडोनियों का यह नियम था कि यदि किसी हकीम की दवा से बादशाह की तबियत मामूल से और भी अधिक बिगड़े तो वह तुरंत ही कत्ल कर दिया जाता था। इससे डर कर इस बेबसी की अवस्था में भी कोई सिकन्दर को दवा पिलाने की हिम्मत न करता था। अन्त में उसके एक मुँहलगे दोस्त फिलिप ने उसके लिये दवा तय्यार की। इसी अवसर में सेनापति परमिनो ने सिकन्दर को लिख भेजा कि उक्त फिलिप को पारस के बादशाह दारा ने निज कन्या विवाह देने का प्रण करके आपको विष देने पर राज़ी किया है अतएव आप

की तरफ इस तरह बिखरा कर लगा दिया कि जिस
पारसी सेना उसे घेर न सके और वह आप स्वयं बाम पक्ष
का सेनापति बनकर विनारस नदी के बहावके रुखकी चाल
देकर प्रातःकाल होते ही पारसी सेना के साम्हने आपहुंचा;
पारसी सेना सिकन्दर को सिर पर आया हुआ देख कर
अपने अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर सामना करने को प्रस्तुत
हुई। दारा भी स्वयं सुसज्जित रथ पर सवार होकर अपनी
फौज के बीच हो लिया, पारसी सेना को लड़ने के लिये
बहुत ही थोड़ी और तङ्ग जगह थी इसलिये वे यूनानी
सेना के बाम पक्ष का मुकाबला करने के लिये नदी विना-
रस के बहाव की तरफ बढ़े। तब तक सिकन्दर अपनी
दक्षिण सेना सहित पारसी सेना के बीचोबीच ऐसा घुसा कि
उन्हें भागते ही बन पड़ा। यूनानी सिपाहियों के बर्छों से छेदे
हुए पारसी सिपाही पहाड़ों में जहां तहां तीन तेरह हो गए।
उनका सब साज समान सिकन्दर के साथियों ने लूट लिया
और दारा की [illegible] और उसकी दो अविव[illegible] ड़कियां
भी गिरफ़ार [illegible]।

[illegible] को मालूम हु[illegible] की
स्त्री [illegible] दि उसकी फौ[illegible] र
कर [illegible] मृत समझ[illegible]
को [illegible] कर अत्यन्त[illegible]
विह्ल [illegible] उसने क[illegible]
दारा म[illegible] भाग[illegible]
वे अपन[illegible]
न भय र[illegible]

प्रकार का पता नहीं लग सकता। सिकन्दर को यह मालूम था कि दारा की स्त्री संसार भर में अपने सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध थी परन्तु उसने इस अवस्था में भी उसके देखने की इच्छा न की। दूसरे दिन उसने दारा की माता से मिलना चाहा। उसने भी अपने विजेता से मिलना स्वीकार किया। जिस समय सिकन्दर उसके सम्मुख गया तो वह एक साधारण सिपाही की पोशाक में था। दारा की माता रोती हुई सिकन्दर के पैरों पर गिर पड़ी। सिकन्दर ने उसे हाथ पकड़ कर उठा लिया और कहा कि "माता आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। उसने दारा के नाबालिग पुत्र को भी प्यार से पुचकारते हुए गोद में उठा लिया और कहा कि मैं इसे जगद्विख्यात शूर वीर बादशाह बनाऊंगा। इसके पश्चात सिकन्दर ने दोनों तरफ़ के सैनिकों को यथोचित रीति से सत्कार के साथ मिट्टी दिलवाई। इस विषय के स्मारक में उसने तीन स्तम्भ बनाए।

जिस प्रकार दारा की स्त्री अपने समय की स्त्रियों में सौंदर्य में इकता थी उसी प्रकार पुरुषों में दारा भी अद्वितीय सुंदर गिना जाता था। अस्तु उसकी दोनों राजकुमारियां अपनी माता से कहीं बढ़ चढ़ कर सुन्दर थीं, इसलिये सिकन्दर के मुसाहबों की इच्छा थी कि वह उन्हें स्वीकार करे परन्तु सिकन्दर ऐसी इच्छा के सर्वथा विरुद्ध था। उसके विचार से एक मात्र विजयलक्ष्मी ही सुन्दर है; सौंदर्य पर मोहित हो कर स्त्रियों के प्रेमपाश में पड़ जाने से मनुष्य का केवल समय ही नष्ट नहीं होता वरन उसका पौरुष और उसकी आध्यात्मिक शक्तियां भी क्षीण हो जाती

हैं और इसलिये स्त्रीलोलुप मनुष्य किसी कठिन कार्य्य के करने में समर्थ नहीं रह सकता अतएव इन्हीं विचारों के आधार पर उसने अपनी सेना में यह आज्ञा दे रक्खी कि उसके साम्हने किसी भी स्त्री के सौन्दर्य्य की प्रशंसा न की जाय। यदि उस के साथियों में से कोई विजित स्त्री पर कुकर्म की दृष्टि से देखता हुआ भी सुना जाता तो वह उसे सख़्त सजा देता था। सिकन्दर ने यद्यपि प्रसिद्ध पारसी सेनापति मीमन की स्त्री पारसिन को जो मीमन के मरने बाद डिमासकस के पास कैद की गई थी–अपनी स्त्री बना लिया था किन्तु वह केवल उसकी रूपराशि पर मोहित होकर नहीं वरन इसका कारण पारशिन स्त्री की सहनशीलता थी जो कि स्त्रियों का सच्चा आभूषण है।

सिकन्दर केवल स्त्री सम्बन्धी व्यवहार में रूक्ष नहीं था उसके सब कार्य्य बड़े नियमबद्ध थे। वह जैसा शराबी कहा जाता है वास्तव में नहीं था। सिकन्दर शराब बहुत कम पीता था। परन्तु उसका अधिक समय वार्तालाप में जाता था। यद्यपि वह बादशाह था और उसके मुसाहिब लोग उसके नौकर थे परन्तु खानपान के समय वह उनका अपनी ही भांति सम्मान करता था, यदि कुछ उत्तम भोज्य पदार्थ या और कोई नवीन वस्तु सिकन्दर के सांम्हने लाई जाती तो वह अपने सब दर्बारी मुसाहिबों और यार दोस्तों को यथा भाग बांट देता, चाहे स्वयं उसके स्वाद से वचित रहे और यही कारण था कि वे लोग भी उसके हुक्म पर अपना तनमन न्योछावर करते थे। सिकन्दर का अवकाश समय कभी आमोद प्रमोद और व्यर्थ के वार्ता-

लाप में नहीं जाता था वह अवकाश के समय या तो अच्छे अच्छे राजनैतिक या आध्यात्मिक विद्या सम्बन्धी ग्रन्थ पढ़ता या बराबर जंगलों में शिकार खेला करता था, और उसको उसी नियमबद्धता और निरालस्य ने कभी भी किसी शत्रु के सन्मुख नीचा देखने का समय नहीं दिया।

जिस प्रकार ग्रेनिकस की लड़ाई से समस्त एशिया-माइनर सहजही सिकन्दर के हस्तगत हो गया था उसी भांति इसस की लड़ाई से साइबेरिया प्रान्त सिकन्दर का हो गया, अब उसे साइबेरिया पर केवल अपना आधिपत्य जमाना बाकी था। इसी अवसर में दारा ने एक राजदूत के हाथ एक पत्र भेजा जिसमें दारा ने सिकन्दर का अपने प्रति श्रपव्यवहार दिखला कर उसे अपने परिवार के लोगों को मुक्त करने के लिये लिखा था, दारा के इस पत्र का उत्तर सिकन्दर ने इस प्रकार से लिखा जैसे कोई अफ़सर अपने मातहत को लिखे, जिसमें सिकन्दर ने दारा के कारण अपने पिता फिलिप की तकलीफों का इजहार करते हुए लिखा कि यदि तुमने अब से आगे कभी मुझे एशिया का बादशाह करके न लिखा तो मैं तुम्हारे पत्र का उत्तर न दूंगा और यदि तुम्हें अब भी इस बात का घमंड है कि एशिया प्रान्त फारिस का है तो आओ मेरा सामहना करो भागो मत, मैं तुम पर फिर भी पहिले की भांति आक्रमण करूंगा चाहे तुम कैसे ही बलवान और सुरक्षित क्यों न हो।

दारा इससे बहुत दूर न था और यदि सिकन्दर चाहता तो पश्चिमी सिलसिले पर अधिकार करता हुआ दारा के पीछे पड़ कर उससे फिर भी लड़ाई छेड़ता, परन्तु

उसने ऐसा न करके समुद्र किनारे के उन पहाड़ी सिलसिलों पर ही अधिकार जमाना चाहा जिन्हें नौशेरवां ने फतह करके पारिस के अधीन किया था। इसलिये उसने पहिला वार फिनीशियन लोगों पर किया। ये लोग समुद्र किनारे के उत्तरी भाग पर थे परन्तु इनकी राजधानी टायर में थी। ये लोग यद्यपि राजसी बल में कुछ भी न थे परन्तु अपने समुद्रिक व्यापार के कारण धन सम्पत्ति में एकही थे और इसी से उनके धर्म्म सम्बन्धी विचार एवं मनुष्य सम्बन्धी जीवन आचार विचार अत्यन्त नीच और अश्लील होने पर भी सब लोग उनसे सम्बन्ध रखते थे। इस समय उनका ईरान से केवल इतना सम्बन्ध था कि वे कुछ खिराज देते थे और ईरानी सेना उनके बाहरी शत्रु के आक्रमण से रक्षा करने को थी परन्तु उन्होंने ईसस की लड़ाई में दारा को बहुत मदद दी थी इसी से वे सिकन्दर की नज़र में गड़ गए थे। फिनीशियन लोगों ने सिकन्दर का संदेसा पातेही आपही उसकी अधीनता स्वीकार करली। उन्होंने दूत द्वारा कहला भेजा कि वे सिकन्दर को उसी प्रकार से विजेता मानेंगे जैसा कि वे अब तक दारा को मानते थे, परन्तु सिकन्दर की इच्छा थी कि वह अपनी सब सेना को समारोह के साथ फिनीसियन लोगों की राजधानी में भेज कर अपनी कुल देवी के दर्शन करे और नियमानुसार बलिप्रदान करे। परन्तु उन्होंने समझा कि जो सिकन्दर यहां आवेगा तो किसी न किसी बहाने से यहां पर अपना दखल करके कुछ सिपाही यदि छोड़ जायगा तो हम सदैव के लिये उसके गुलाम बन जायंगे। इसलिये उन्होंने सिकन्दर

का उक्त प्रस्ताव स्वीकार करने से एक दम इनकार कर दिया और कहला भेजा कि यहीं पर जो पुराना मन्दिर है उसी में आप अपना पूजन और बलिप्रदान करलें, यहां पर किसी अन्य जाति के लोगों का आना जाना हमारे नियम के सर्वथा विरुद्ध है। न हमने ईरानियों को आने दिया न आपको आने देंगे

परन्तु सिकन्दर कब मानने वाला था उसने उसी समय आज्ञा दी कि भूभाग से टापू तक बराबर काठ और पत्थर पाट कर मुहाना कर दिया जाय और तब फौज चले। उसकी आज्ञा मानी गई और आधी दूर तक बराबर लकड़ी पत्थर से समुद्र का मुहाना पाटा गया, किन्तु बाद उसके पानी की गहराई अधिक होने से एक तो सिपाहियों को स्वयं अधिक परिश्रम करना पड़ा उधर से वे लोग भी जलते अंगारे फेंक फेंक कर इनको जान लेने लगे। इस पर सिकन्दर ने दिवार खड़ी करवा कर काम लगवाया। परन्तु कठिन मार के मारे ऐसी हिकमतें एक भी न चल सकीं।

इधर साइप्रस तक पहुंचने का प्रयत्न सोचते विचारते जाड़े का मध्य आगया। सिकन्दर को सुस्त बैठना तो वज्र से भी भारी जान पड़ता था, उसने सब फौज तो इसी मौके पर छोड़ी केवल आप कुछ अश्वारोही सेना लेकर उत्तरीय पहाड़ों के सिलसिले में पैठ पड़ा। कुछ दूर तक बराबर चला गया परन्तु ज्यों ज्यों सिकन्दर आगे बढ़ता था डाकू लोग इनका सामहना करते हुए पहाड़ी कन्दराओं के ऐसे स्थानों में पैठते जाते थे कि जहां पर मनुष्यों का जाना कठिन था। अस्तु सिकन्दर ने कुछ सिपाहियों के साथ छोड़े तो वहीं छोड़

दिए और वह आप कुछ चुनिन्दा सिपाही लेकर पहाड़ों में ध
पड़ा और रातों रात बराबर मारकाट करते हुए ११ दिन
सब डाकुओं को उसने अपने अधीन करलिया। इन डाकुओ
के मुकाबले में सिकन्दर को अधिक कठिनता इस बात में हु
कि इस अवसर में सिकन्दर का शिक्षक सलीमस भी उस
साथ था, वह एक तो स्वयं अत्यन्त बूढ़ा था तिस पर भ
पहाड़ों में पैदल चलना और वह शरीर का रक्त जमा देने वाल
बर्फीले पहाड़ों की वायु-इससे सलीमस मृतप्राय हो रहा था
किन्तु सिकन्दर ने किसी तरह उसे बचा लिया और डाकुओं
को जीत कर फिर वह शहर टायर के मुकाबिले में आ डटा।

सिकन्दर ने रात्रि को स्वप्न में देखा कि उसकी कुल देवी शहर टायर के शहर पनाह पर से हाथ उठा कर उसे अपने पास बुला रही है। प्रातःकाल होते ही सिकन्दर की कुछ सेना जो साइप्रस में थी आन पहुंची इसलिये सिकन्दर ने और भी उत्साहित हो कर ढाई सौ जहाजों का बेड़ा तय्यार करवाया और इस तरह से जल युद्ध द्वारा ही शहर टायर को फतह करना विचारा। सिकन्दर के बहादुर सिपाहियों ने तुरन्त ही उसकी आज्ञा का अनुकरण किया और वे बड़ी दिलेरी से अपने जहाज शहर पनाह की दीवार के पास तक ले गए परन्तु एक तो शहर पनाह ही मुहाने की तरफ़ १२० फिट ऊंची तिस पर भी फिनीशियन लोग ऊपर से बड़ी बड़ी चट्टान डाल डाल कर सिकन्दर के सिपाहियों को चूर कर रहे थे। वे ऊपर से आग के बड़े जलते हुए कोयले और गरम गरम बालू की भी वर्षा करते थे जिसके कारण सिकन्दर की बड़ी भारी क्षति हुई अन्त में

यूनानी सेना दीवार पर चढ़ ही गई। ये लोग तो मरने मारने पर मुस्तैद थे ही अब दोनों दलों में परस्पर हाथा बांही की मार होने लगी और इस प्रकार कई एक घंटे के बाद दोनों ओर के हजारों सैनिक मारे जाने पर यूनानी सेना ने शहर टायर पर अधिकार जमा लिया अतएव सिकंदर ने विजय होने की आज्ञा दी और शहर टायर निवासी लोग उन सब से भेड़ों की तरह काटे जाने लगे सिर्फ जिन लोगों ने देव मंदिरों में छिप कर प्राण बचाने चाहे वे बच सके। शहर टायर का कत्ल आम पांच महीने तक जारी रहा; सिकन्दर स्वयं लिखता है कि अब तक मैंने जितनी बड़ी लड़ाइयों में विजय पाई उन सब से मुझे टायर पर विजय पाने का बड़ा गर्व है। यह बात (ई० पू०) ३३२ के वसंत ऋतु की है।

इसी अवसर में दारा का एक एलची फिर से सिकन्दर के पास आया। उसने अपने परिवार प्रति सिकन्दर के सभ्य एवं राज्योचित व्यवहार पर धन्यवाद प्रकाश करते हुए लिखा कि मैं एशिया को छोड़ देता हूं और मेरे बाद आपही यहां के बादशाह रहिए मेरा विचार तो यह है कि इसवास के पूर्व के समस्त प्रदेश पर आप शासन करें और मेरी एक लड़की के साथ आप ब्याह करना भी स्वीकार करें तो अच्छा हो। इसके उत्तर में सिकन्दर ने दारा को लिखा कि मैं तुम्हारी चाहे जिस लड़की को ब्याह सकता हूं जब कि वे मेरी बन्दी हैं तब वे सर्वथा मेरे अधीन हैं, मैं उस वस्तु का एक थोड़ा सा भाग पाकर कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता जिस पर कि सर्वथा मेरा हक है।

इसके पश्चात् सिकन्दर ने सीरिया में पैठकर फिलि स्लाइन प्रदेश के किनारे किनारे कूच किया । फिलिस्लाइ निवासी जन समूह यद्यपि सब तरह से सिकन्दर का साम्हन करने योग्य थे परन्तु वे सदा से पूर्वीय जातियों के शास धीन चले आते थे इसलिये उनकी रगों में तेजस्विता क खून और स्वतंत्रता की इच्छा जरा भी शेष न थी । फ़िलि स्लाइन प्रदेश के पांच शहरों में से चार ने तो आपसे ह सिकन्दर का अधिपत्य स्वीकार कर लिया लेकिन पांच शहर गाज़ा के अधिपति ने जो कि एक हब्शी जनखा था अपने तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते दम तक स्वतंत्रत का रखना विचार कर सिकंदर का साम्हना करने का साह किया । उसकी उत्तेजना जनक एवं उत्कर्षमय शिक्षा के कारण बहुत से अरबी और स्वाधीनता खोए हुए फिला स्लोनियनस में से भी कुछ लोग उसका साथ देने को तय्यार हे गए । जनखे का नाम बतीस था ।

गाज़ा ।

जिस समय सिकन्दर की फ़ौज शहर गाज़ा के बाहर प्रान्त में घेरा डाले हुए साधारण रोक टोक कर रही थी और सिकन्दर अपने नियमानुसार कुछ ज्योतिषी और विद्वान यूनानियों की मंडली सहित अपने कुल देवताओं को बलि दे रहा था कि सिकन्दर के सर पर से उड़ते हुए एक गिद्ध ने एक ऐसा पत्थर का ढोका छोड़ा कि जिससे उसकी कंठमाला (हंसुली) पर कड़ी चोट बैठी । इस पर उसके ज्योतिषियों ने विचार किया कि इस युद्ध में सिकन्दर विजयी तो अवश्य होगा परन्तु उसे कोई गहरी चोट भी लगेगी । सिकन्दर के

सगुनिया लोगों ने और मैमारों ने भी यही बात कही कि गाजा का किला अभेद्य है परन्तु सिकन्दर ने उनकी इन बातों पर ध्यान न देकर अपनी फौज को किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। तीन दिन तक बराबर लड़ाई होती रही परन्तु किले वालों का बाल भी बांका न हुआ बरन किले वालों के चलाए हुए पत्थरों में से एक पत्थर सिकन्दर की ठीक कंठमाला में ऐसा लगा कि वह मूर्छित होकर गिर पड़ा किन्तु जब उसे कुछ चेत हुआ उसने फौरन किले की दीवार के नीचे सुरंग लगाने की आज्ञा दी। जब तक एक तरफ से सुरंग लगी तब तक सिकंदर के एक निज रिश्तेदार ने दूसरे बाजू से इस चाल से धावा किया कि किले का फाटक टूट गया और यूनानी सेना किले में घुस पड़ी। किले की फौज के सहस्रों सिपाही खड़े काट डाले गए—बहादुर बतीस अगनित घावों के कारण लोहू से तरातर अधमरा गिरफ्तार कर लिया गया— कहा जाता है कि सिकंदर ने बतीस को हाथी के पैर में बंधवा कर शहर पनाह के गिर्द घसीटे जाने की आज्ञा दी किंतु यह बात विश्वसनीय नहीं हो सकती क्योंकि सिकन्दर शूर वीर पुरुषों का बड़ाही सच्चा दोस्त था और क्या अचरज है कि उसने उस मृतप्राय कंचुकी की कुछ इज़्ज़त की हो।

गाजा की लूट में धूप और इत्र दो चीजें अधिकता से पाई गई थीं और ये चीजें अपनी किस्म की अच्छी भी थीं। सिकन्दर को इसी समय अपने बचपने की एक बात याद आ गई। एक समय उसकी मा कुछ पूजन अर्पण कर रही थी और वह खेल रहा था। उसने धूप का बड़ा भारी

ढेला उठा कर आग में डाल दिया इस पर उसकी धा
अत्यन्त कुपति होकर उसे बहुत झिड़का और डपटा इ
लिये सिकन्दर ने कई मन धूप अपनी बुड्ढी धा के पा
भेज कर लिख भजा कि मैं बहुत सा धूप भेजता हूं
देवताओं को अर्पण कीजिए और मेरी लड़कई का अपरा
क्षमा कीजिए।

जेरूसलम और मिश्र।

इस प्रकार गाजा पर अधिकार जमा कर सिकन्दर
अपने लश्कर की लगाम शहर जेरूसलम की तरफ फेरी
पहाड़ी और जंगली रास्ते तै करता हुआ वह जिस सम
जेरूसलम के पास पहुंचा तो उसने देखा कि समस्त जेरूस
लम निवासी जन समूह उसकी तरफ आरहे थे। उन लोगों
के हाथ में न तो कोई तलवार, बंदूक या तीर कमान वगै-
रह हथियार था, न कोई लड़ाई का सामान; वे सब के सब
नीले गोटदार ठिहुने तक लंबे सफेद अंगे पहने और सर
पर सफेद पगड़ी बांधे सोने चांदी की तुरही बजाते और
अपने उदासीन धर्म सम्बन्धी पवित्र गीत गाते हुए एक
बड़े समारोह से सिकन्दर को तरफ चले आ रहे थे। उनके
मुखिया या प्रोहित या नेता का नाम युद्दा था। उसकी
पोशाक भी उसी तरह की थी परन्तु उसमें चमक विशेष
थी और किनारे पर लैस (गोटा) भी लगी हुई थी और
सीने पर बहु मूल्य रत्न जड़े हुए थे। उसकी टोपी पहा-
ड़ियों की तरह थी जिसकी सलामी पर सुनहले अक्षरों में
लिखा हुआ था कि "ईश्वर पवित्र है"।

सिकन्दर के अन्य साथियों का अनुमान था कि वह इन फिनीशियन लोगों पर जो कि उस के साथी बग गए थे आक्रमण किए जाने की आज्ञा देगा। किन्तु ज्योंही वे कुछ और पास आकर दिखलाई में हुए सिकन्दर फौरन साष्टांग दण्डवत करके पृथ्वी पर लकुटाकार गिर पड़ा; उसने फिर उठ कर दोनों हाथ फैला कर बड़ी नम्रता के साथ गुरु को प्रणाम किया और उसका आशीर्वाद लिया। उसी समय गुरु के अन्यान्य साथी लोगों ने सिकन्दर को चारों ओर से घेर लिया। यद्यपि सिकन्दर के मुख्य सेनापति परिमिनो तथा अन्यान्य सैनिक नेताओं को सिकन्दर का गुरु के साथ इस प्रकार का सहसा मित्र भाव का व्यवहार अच्छा न लगा और उन्होंने अपना मत भी प्रकाश किया परन्तु सिकन्दर ने उनसे कहा कि मैं यह व्यवहार किसी मनुष्य के साथ नहीं कर रहा हूं वरन यह सब गुरु की टोपी पर लिखे हुए ईश्वर के नाम पर है। सिकन्दर इस साहस से अपने साथियों को संतोष देकर गुरु के साथ हो लिया। उसने गुरु के देवमंदिर में जाकर उचित श्रद्धा के साथ पूजन किया और बलि भी दिया, देवमंदिर से लौटते वक्त गुरु ने अपनी भविष्यवाणी के लेख का लपटा हुआ धर्मपत्र निकाला और इस प्रकार कहने लगा कि आपका आक्रमण हम लोगों को पहिले से मालूम था। हमारे उस प्राचीन नेता या बादशाहों ने जिन्हें पारस के बादशाह नौशेरवां और कैखुसरो वगैरह की गुलामी और कैद भोगनी पड़ी इस भविष्यवाणी में लिखा है कि उन्होंने स्वयं देखा कि पश्चिम की तरफ से एक घेड़े

ने आकर मेढ़ा और फारिस के सब मेढ़ों को मार भगाया, और इसका फल एक स्वर्गीय दूत ने यह बतलाया कि यह मेढ़ा (ग्रीस) यूनान का है अतएव आगे होने वाला यूनानी बादशाह इन सब को परास्त करेगा। युद्धा ने कहा कि जिस समय आपका डेरा गाजा पर पड़ा हुआ था तभी मुझे स्वप्न हुआ था कि भविष्यवाणी में वर्णन किया हुआ जगत् विख्यात विजेता आ रहा है शीघ्र ही उसके लिये शहर का दरवाजा खोला जाय और सब लोग उसकी अगवानी के लिये जांय अतएव हम लोगों ने वैसाही किया। जैरूसलम के युद्धा से इस प्रकार भविष्यवाणी सुनकर एवं उसके सद्व्यवहार से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने तमाम जेरूसलम के सिपाहियों पर तथा अन्य यहूदी जाति पर बड़ी ही कृपा दिखाई। उसने उनकी धार्मिक उदासीनता को भी उत्तम तत्व सूचक पंथ माना—सिकन्दर ने वहां से कूच करते समय यहूदियों को अपनी सेना में सम्मान सहित चलने की आज्ञा दी।

जैरूसलम हस्तगत होते ही मिश्र का प्रशस्त भूभाग भी बिना प्रयास सिकन्दर के हाथ लगा। क्या जाने मिश्र वासी लोग या तो सिकन्दर के प्रचण्ड प्रकोप से डर गए या फारिस के शासन से दुखी थे। खैर जो हो। यहां पर इतना और कह देना आवश्यक है कि उस समय मिश्र में यूनानी लोगों की बस्ती अधिक थी। सिकन्दर की यह भी इच्छा थी कि जहां तक हो सके यूनानी लोगों पर जो कि अन्यान्य देश में निवास करते थे और अन्यान्य जातियों के शासनाधीन थे अपना अधिकार केवल नाम मात्र को जमा कर उन्हें

यूनान देश की उन्नति शालिनी विद्याओं से परिचित कराके अच्छी अच्छी राजनैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएं देवे और इस प्रकार से उन्हें प्रदेश का स्वतंत्र नेता या शासक बनाकर संसार भर में यूनान के शक्तिशाली विचारों का आधिपत्य फैला दे। सिकन्दर की यह इच्छा मिश्र में पूर्णतया सफल हुई। सिकन्दर के मिश्र में पहुंचते ही समस्त मिश्र प्रदेशवासी जन समूह ने सिकन्दर के आधिपत्य को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। सिकन्दर मैसीडोन छोड़ कर अब तक जितने भूभाग का सफर कर चुका था उतने में उसे अन्य कोई स्थान ऐसा अच्छा न जंचा जैसा कि मिश्र। मिश्र की सर्वोत्तम उत्तम जल वायु, जहां तहां उमदा उमदा फल फूल और मेवों के वृक्षों तथा समस्त प्रदेश के हरे भरे उपजाऊ रमणीक स्थलों ने सिकन्दर का मन मोह लिया। उसने ऐसी उत्तम भूमि पर अपने नाम का अचल कीर्त्ति स्थंभ रोपने अथवा पूर्व और पश्चिम के देशों में व्यापारिक सम्बन्ध का द्वार खोलने के लिये एलेकजेण्ड्रिया के शहर की नींव डाली। कहा जाता है कि सिकन्दर ने पहिले तो उक्त शहर की नींव मिश्र देश के मध्य प्रदेश में स्थापित करना विचारा किन्तु उसी रात्रि को स्वप्न में एक वृद्ध पुरुष जो कि उसके अनुमान से उसका पूर्व पुरुष था दिखाई दिया और उसने सिकन्दर से कहा कि वह नाइल नदी के मुहाने पर अमुक अमुक स्थान पर ही अपेक्षित नगर को आबाद करे क्योंकि उक्त स्थान पर बसाया हुआ नगर केवल उसका कीर्त्ति स्तम्भ और व्यापारिक आय व्यय का द्वार ही न होगा वरन वह मिश्र देश निवासी यूनानी मनुष्यों की रक्षा के लिये

मिश्र देश रूपी दुर्ग का फाटक भी होगा। अतएव सिकन्दर ने ऐसा ही किया । जिस समय सिकन्दर उक्त स्थल पर पहुंचा उसे भी स्वप्न सम्बन्धी बातें बावत् ठीक जंची । इस लिये उसने उसी समय पिसान को पगेर कर सिकन्दरिया की नींव की डोरी डलवादी। सिकन्दिर ने सिकन्दिरिया में यहूदी यूनानी और प्राचीन मिश्र निवासी आदि सब लोगों को उचित स्थान दिए। जब सिकन्दिरिया हाट बाट चौहटे बाजार बाग बगीचे आदि सब भांति से सज बज कर एक उत्तम शहर बन गया तब उसने कहा कि वह मिश्र निवासी लोगों की इष्ट देवी के टूटे हुए मन्दिर को निज व्यय से बनवा कर दुरुस्त करदे। परन्तु मिश्र निवासियों ने सिकन्दर की इस उदारता को एक राजनैतिक चाल समझ कर किसी प्रकार टाल दिया।

इस ससय सिकन्दर की अवस्था केवल २४ वर्ष की थी। यूनान वासी लोगों का मत था कि उनके वे पूर्व्वज जो कि अत्यन्त भाग्यशाली एवं पराक्रमी पुरुष हो मरे हैं, किसी न किसी देवी या देवता के अवतार स्वरूप थे। सिकन्दर यद्यपि जानता था कि उसके माता पिता मनुष्य हैं, परन्तु लगातार फतहयाबियों ने उसके दिल में भी इस बात का ख्याल डाल दिया था कि वह भी अपने को किसी न किसी शक्तिशालिनी देवी का अवतार मानता था। उसके दल के ज्योतिषी और शकुनियां भी उसके इस विचार के उत्तेजक थे।

सिकन्दर को मालूम हु[illegible] [illegible]रा मरू भूमि के [illegible] ए [illegible] न कोस [illegible] दाम ऐसा है

जो कि अत्यन्त उपजाऊ होने के कारण सदैव हरा भरा रहता है। वहां पर सब किस्म के मेवे और अन्न इत्यादि की उपज है उसी भूमि पर एक देव मन्दिर है जो कि सोने का बना हुआ है और वह उसके पूर्व्व पुरुषों से कुछ सम्बन्ध रखता है। सिकन्दर का उपरोक्त विचार ऐसा दृढ़ था कि वह उस दृढ़ता के भरोसे कठिन से कठिन कार्य्य में हाथ डाल देता था। इसी प्रकार उसने कोसों लम्बा चौड़ा रेगिस्तान लांघ कर उक्त स्थान को जाना चाहा—मिश्र निवासी लोगों ने रेगिस्तान में सफर करने की तकलीफें बयान करके सिकन्दर को वहां जाने से रोकना चाहा। उन्होंने यह भी कहा कि फारिस के उन बादशाहों के जो उस मन्दिर तक गए थे परन्तु उन्होंने वहां पर उचित रीति से पूजन अर्चन और बलि प्रदान न किया इसलिये उनके ५०८० सिपाही सब के सब उस देवता ने धूल में दबा दिए—यह सुनते ही सिकन्दर का उत्साह दूना हो गया और वह कुछ साधारण सेना सहित उपरोक्त "छाग मन्दिर" की तरफ चला। रास्ते में चलते चलते लावलश्कर सहित सिकन्दर राह भूल गया और जब कि सब लोग बड़ी चिन्ता में थे दो सांपों ने सेना के आगे चलकर बराबर छाग-मन्दिर तक लकीर करदी। जिस समय रेगिस्तान में पानी न मिलने से सिकन्दर के बहुत साथी प्यास के मारे और बालू में चलने से थकावट के मारे मरने लगे तब दो बादल ऐसे खूब बरस गए कि सिकन्दर के सब कष्ट नष्ट हो गए और वह आसानी से छाग-मन्दिर तक पहुंच गया। सिकन्दर की अवाई का समाचार सुनकर छाग-मन्दिर के बड़े पुजेरियों धार्म्मिक

गीत गाते हुए बड़े गाजे बाजे से अगवानी देकर उसे मन्दिर में लाए। मन्दिर के मुख्य अधिष्ठाता पुजेरी ने सिकन्दर को यूनानी भाषा में "ओपैदियन" अर्थात् मेरा पुत्र कहकर सम्बोधन करना चाहा परन्तु वह न के स्थान में स उच्चारण कर गया और उसका अर्थ ओपैदियन अर्थात् देव (एमन) पुत्र हो गया जिसे सुनते ही सिकन्दर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने यथोचित रीति से पूजन अर्चन किया बलि प्रदान करके पण्डों को बहुत कुछ रुपए अशर्फियां दीं और अमूल्य रत्न मन्दिर में चढ़ाए। सिकन्दर को उक्त विचार इससे और भी पक्का हो गया कि छाग-मन्दिर के देवता ने स्वयं मुझे अपनी सन्तान होना स्वीकार किया है।

सिकन्दर ने अपने निज मन्तव्य के अनुसार मिश्र का राजकीय शासन सम्बन्धी पूरा इन्तजाम करके फिर शहर टायर की राह ली। टायर में रह कर सिकन्दर ने दारा के पीछे पड़ने की तय्यारियां कीं। उसने हरकल्स के मन्दिर में बलिप्रदान चढ़ा कर भांति भांति के सैनिक खेल तमाशे किए। तदनन्तर (ई० पू०) ३३१ की वसन्त ऋतु में सिकन्दर ने चालीस हजार पैदल और सात हजार सवार लेकर मय अपने कैदी गुलाम इत्यादि के लाव लश्कर सहित इफरात की तरफ कूच किया। इफरात पर रहने वाले पारसी सैनिकों को सिकन्दर के पेशखेमे वालों ने ही मार भगाया था। इस लिये सिकन्दर मय लावलश्कर के आसानी से इफरात पार होकर उत्तर पूर्व की तरफ लौट पड़ा क्योंकि यूनान वासी सिपाहियों को गर्मी के दिनों में कड़ी धूप असह्य थी। यद्यपि पूर्वोत्तर दिशा का मार्ग

ठंडा था वहां पर यूनानी सेना के लिये सम्पूर्ण प्रकार के खाद्य पदार्थ भी बहुतायत से मिलते थे परन्तु इस रास्ते में इतने नदी नाले झरने खोह खंदक और ऊबड़ खाबड़ जमीन थी कि जिससे सब को बड़ी ही तकलीफ हुई और इसी मार्ग को पार करते करते दो महीने व्यतीत हो गए और इन्हीं तकलीफों के कारण दारा की सुकुमार स्त्री स्तातिरा बीमार होकर अदुल के पास पहुंचते पहुंचते मर गई ।

अरबैला की लड़ाई ।

स्तातिरा के मरने पर सिकन्दर ने स्वयं बड़ाही पश्चात्ताप और दुःख प्रगट किया और वह दुःख इस बात का था कि वह उसके साथ कोई ऐसा उपकार न कर सका जो कि चिरस्मरणीय होता–सिकन्दर ने स्तातिरा को बड़े समारोह और गाजे बाजे के साथ दफन करवाया । इसी अवसर पर त्रियूस नामक एक पारसी कंचुकी (खोजा) जो कि दारा की स्त्रियों के साथ ही में कैद हो कर आया था समय पाकर सिकन्दर के लश्कर से निकल भागा और उसने यह समाचार दारा को आ सुनाया । संसार में अद्वितीया सुंदरी स्त्री अपनी प्रियतमा स्तातिरा का मरण सुनते ही दारा अत्यन्त दुखी होकर सिर पीटने और रोने लगा। उसने विलाप करते हुए यह भी कहा कि हा मैं कैसा अभागा हूं कि अन्तिम समय में तुम्हारी मान मर्यादा की रक्षा भी न कर सका; दारा को संतोष देने की इच्छा से त्रियूस ने कहा कि माता स्तातिरा को न तो किसी प्रकार का दुःख था और न अब तक उनका किसी प्रकार मान भंग हुआ । यदि दुःख था तो केवल इतना ही था कि वे आपके दर्शनों से वंचित थीं–

इसके सिवाय सिकन्दर ने उन्हें और किसी प्रकार से दुखी होने नहीं दिया। यह सुनते ही दारा के रोएं खड़े हो गए, उस के हृदय सरोवर का प्रेम रूपी रस क्षण भर में सूख गया और पाप एवं कपट रूपी कीचड़ बहने लगा। उसने त्रियूस को एकान्त में लिवा जा कर कहा, क्यों मेरे सच्चे मित्र त्रियूस! क्या तू कह सकता है कि मेरे घर की बन्दी स्त्रियों पर विजेता की ऐसी कृपा क्यों हुई? जो मनुष्य मेरे धन जन एवं प्राण का ग्राहक है वह वीर युवा स्त्रियों पर ऐसा दयालु हुआ तो इसका कुछ घोरतर कारण अवश्य है!! दारा की ये बातें त्रियूस अधोमुख किए चुप चाप सुन रहा था एवं वह यह भी विचार रहा था कि मैं अपने मालिक के मन की इस मलीनता को क्योंकर धो सकूं- दारा की बात समाप्त होते ही त्रियूस बोला कि हे प्यारे पिता आपकी ऐसी कलुषित कल्पना आपके ही मन को कलंकित करने वाली है, न कि स्तातिरा को और न सिकन्दर को। हे स्वामी सिकन्दर केवल एक बड़ी सेना का नेता और निर्बल जातियों का विजेता ही नहीं है वरन उसके मन हृदय तथा मस्तिष्क में दैवदत्त ऐसी प्रबल शक्तियां विद्यमान हैं कि वह मनुष्य जीवन सम्बन्धी कलह में सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ पथिक कहलाने योग्य है। वह कलह के समय जितना वीर पराक्रमी और क्रोधी है सन्धि के समय उससे कहीं अधिक नम्र दयालु और आर्द्र हृदय भी है।

त्रियूस की बातों का दारा के दिल पर ऐसा असर हुआ कि उसने उसी समय अपनी मित्र मंडली की अंतरंग सभा में हाथ उठा कर ईश्वर से प्रार्थना की कि हे ईश्वर प्रथम

तो मेरी यही प्रार्थना है कि फारिस राज्य की अवनति एवं पराधीनता के कलंक का टीका मेरे सिर से दूर कर, मेरे लिये तेरी यही बड़ी दुआ है कि सिकन्दर यहां से लौट जावे और सारे जीवन भर फारिस का राज्य उतना ही और उसी अवस्था में रहे जैसा कि मेरे राज्यासीन होने के समय था। और दूसरी प्रार्थना यह है कि मेरे बाद (केकुसरो) फारिस की पवित्र गद्दी पर सिकन्दर के सिवाय अन्य विजेता न बैठ सके।

दजला के इस पार स्तातिरा का मृतक कर्म समाप्त करते करते तक सिकन्दर को मालूम होगया कि दूसरे पार पर दारा बहुत से फारसी पहाड़ी और अरबी लोगों की सेना को लिए हुए उसका सामना करने को डटा हुआ है। इसलिये उसने उसी जगह से दजला को पार करके किनारे का रास्ता पकड़ा। दजला के किनारे चलते चलते सिकन्दर को बराबर चार दिन व्यतीत हो गए; पांचवें दिन आधी रात को वह फारसी सेना के पड़ाव की बराबरी पर जा पहुंचा। इस समय यूनानी और फारसी दोनों सेनाओं के बीच में केवल चार कोस का अन्तर था। यूनानी सेनापति परमिनो ने चाहा कि यदि उसी समय धावा मार कर फारसी सेना को परास्त करके दारा को पकड़ लिया जावे तो अच्छा हो। परन्तु वीर सिकन्दर ने इस प्रस्ताव को स्वीकार न किया। उसने कहा कि रात्रि को धावा मारना रण कौशल और पराक्रम का काम नहीं है। अस्तु मैं रात्रि को आक्रमण करके चोर नहीं बना चाहता। सिकन्दर ने सब

फौज को व्यूहवद्ध रख कर खूब सावधान रहने का हुक्म दिया और वह आप अपने खेमे में आराम करने चला गया।

सिकन्दर का विचार था कि वह दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्य्योदय होने पर आक्रमण करे। इधर फारसी सेना को भी सिकन्दर के आ पहुंचने का समाचार मिल चुका था। इसलिये वे लोग स्वयं सुसज्जित और व्यूहवद्ध होकर आगे बढ़ने लगे। दिन निकलते निकलते वे इतने निकट आ पहुंचने कि उनके घोड़ों का हीसना, रथों की चरमराहट, हाथियों की चीकें और परस्पर हथियारों की झनझनहाट का शब्द पहाड़ी मैदान को पार करते हुए यूनानी सैनिकों के कानों में गूंजने लगा। यह देख कर परमिनो से न रहा गया। वह सिकन्दर के शयनागार में बेधड़क चला गया और उसे नींद से जगा कर बोला कि आपके साम्हने इस वक्त दुनिया भर से बड़ी लड़ाई का मौका तय्यार है, और आप इस प्रकार घोर निद्रा में मग्न हैं। मानों आपसे और इस प्रपंच से कुछ सम्बन्ध ही न हो, आप इस समय शत्रुओं को विजय करने पर उतारू हैं इसलिये आपको पूर्ण अमित विजेता की भांति सुख की नींद सोना शोभा नहीं देता। इस पर सिकन्दर ने कहा कि मैं सोता नहीं हूं—वरन अपने शत्रुओं को अपने हस्तगत होने का समय दे रहा हूं। और सच मुच सिकन्दर का यह उत्तर ठीक था; यदि उसने रात्रि को ही फारसी सेना पर आक्रमण किया होता तो विशाल फारसी दल में यूनानी सेना आटे में नमक की भांति खप जाती। सम्भव नहीं सिकन्दर रात्रि को सुख की नींद सोता रहा हो पर यह उचित है कि वह रात्रि भर पड़ा

अपने ताक झांक सोचता रहा हो—और उसने उसी समय बिस्तरे पर से उठ कर शत्रु सेना के सम्मुख भिड़ने के लिये तय्यारी की। उसने ठिहुने तक मोजे चढ़ाए, एक सोफानी सीना बन्द बख़्तर पहिना और ऊपर से एक धगली डाली, बाएं कंधे पर ढाल, कमर में तलवार लगाई और हाथ में सिर्फ एक अच्छा चमकीला बरछा लेकर चल पड़ा। डेरे से निकल कर वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और झपट कर अपने रणोत्साही सैनिकों में जा मिला।

इधर से फारसी सेना बड़े समारोह के साथ रणवाद्य बजाती हुई आगे बढ़ रही थी। फारसी सेना चक्रव्यूहाकार थी। सब सेना के ठीक मध्य में दारा का रथ था जो कि चारों ओर से दे। सौ रणकुशल रथियों से घिरा हुआ था, और उन रथों के आगे २५ मतवारे हाथियों की बांहें थीं जो कि उन रथों के रक्षक स्वरूप थे। फारसी लोग बराबर वेग से बढ़ते आरहे थे और उनका यह विचार था कि वे सिकन्दर की थोड़ी सी सेना को अपने सुविस्तृत विशाल एवं बलवान सेना समूह के बीच में घेर कर सब यूनानी सेना को वहीं खपादें और सिकन्दर को पकड़ लें। इधर सिकन्दर अब तक निस्तब्ध खड़ा हुआ था उसकी सेना भी उसकी आज्ञा की बाट जोह रही थी। जब सिकन्दर ने देखा कि फारसी सेना अब ऐसी पास आगई है कि उन्हें लड़ाई होने तक व्यूह बदलने का समय नहीं है, तब उसने अपनी सेना के तीन टुकड़े किए; पहिले दल को तो परमिनो के आज्ञाधीन फारसी सेना का प्रबल वेग रोकने की आज्ञा दी; दूसरे दल को इस चाल से दहने रुख

से घेरा देकर फारसी सेना के बगल में लगा दिया कि जिसमें वे दारा के शरीर रक्षक रथियों के रथवाहक और घोड़ों को मारें अथवा हाथियों को बिचलावें और आप घोड़े से उत्तम शिक्षित या मित्र मंडली के सवारों सहित घन व्यूह बना बराबर रुख देता हुआ हटा रहा। जिस समय फारसी लोग घबड़ा कर परमिनो के अधीन यूनानी सेना पर टूट पड़े तब सिकन्दर उस तरफ का कुछ ख्याल न करके अपने घन व्यूह सेना सहित बगल से दारा पर झपटा। दारा के रथी लोग तो पहिले से घबड़ाए हुए थे बीचो बीच सिकन्दर के विकट आक्रमण ने उन्हें और भी बेसुध कर दिया और वे तितर बितर होकर पीछे की नीचम पहाड़ियों की तरफ भागने लगे। करीब था कि सिकन्दर दारा को स्वयं कैद करले परन्तु इस समय परमिनो की सहायता करना भी बहुत आवश्यक था। क्योंकि यदि ऐसा न किया जाता तो संभव था कि उधर परमिनो के शिकस्त खा जाने से सिकन्दर को स्वयं सुवृहत फारसी दल रूपी कमल का मधुप बन जाना पड़ता। अतएव सिकन्दर दारा को विचला कर तुरन्त ही परमिनो के साम्हाने लड़ने वाली सेना के पीछे से जा पहुंचा और तब दो तरफ की मार की झार न सह कर वह फारसी सेना भी बिचल पड़ी और सिकन्दर की जय हुई। यह लड़ाई अरबैला के नाम से प्रसिद्ध है परन्तु वास्तव में यह लड़ाई "गोंगा[1]" के मैदान में हुई थी। फारसी सेना

---

(१) Gongamel गोगामील शब्द का अर्थ फारसी भाषा में ऊंटों का मकान है। कहा जाता है कि पहिले किसी समय कोई फारसी बादशाह लड़ाई में ऊंट पर से बच कर भागा था इसलिये यह मैदान गोगामील के नाम से प्रसिद्ध था।

को पूरी शिकस्त देने बाद सिकन्दर ने फिर दारा का पीछा पकड़ा—दारा को उचित था कि वह आगे बढ़ते बढ़ते पीछे की नदियों के पुल तुड़वाता जाता तो सिकन्दर को बड़ी कठिनता पड़ती। परन्तु आजन्म विषय रस का आनन्द लेने वाले फारसियों के ध्यान में यह युक्ति क्यों कर आवे—सिकन्दर दारा के पीछे अरबैला तक चला गया जो कि लड़ाई के मैदान से ४० कोस अनुमान किया जाता है, और जहां के नाम से यह लड़ाई भी प्रसिद्ध है। सिकन्दर अरबैला के सिवाने पर पहुंच कर रात्रि भर तो बाहर ही रहा। सूर्य्योदय होने पर ज्यों ही वह अरबैला के दुर्ग में पैठा तो उसने वहां भागी हुई फारसी सेना के हथियार मात्र पाए और किसी का पता भी न लगा।

बैबलान—इस अरबैला की लड़ाई के जीतने से फारस राजधानी के शासनाधीन सम्पूर्ण सुविस्तृत भूभाग सहज ही सिकन्दर के हाथ आ गया, या यों कहिए की अरबैला की लड़ाई जीत कर सिकन्दर सम्पूर्ण फारिस राज्य का स्वामी बन गया। सिकन्दर अरबैला से बेबलान को गया—बैबलान उस समय संसार भर के उन्नतिशाली एवं सुवृहत् शहरों में शिरोमणि था। पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं के अधिवासी जन समूह बैबलानको अद्वितीय धनी विशाल और सुन्दर शहर मानते थे। बैबलान जैसा सुन्दर था वैसा ही खाई कोट इत्यादि से सुरक्षित भी था—सिकन्दर की चढ़ाई की खबर सुनते ही बैबलान के मध्य में स्थित बेबिल देव के मन्दिर के पुजेरी और प्रोहित लोग शहर के अन्य धनी मानी नेता लोगों को साथ लेकर उसकी अगवानी के

लिये गाते बजाते हुए शहर के बाहर तक आए और बहुत से चांदी सोने और जवाहिरात के उत्तमोत्तम गहने तथा अन्यान्य अमूल्य वस्तुएँ उसे नजर में देने को लाए। बहुतेरे लोग बैबलान प्रान्त के जंगलों के नामी पशु भी सिकन्दर को नजर में देने को लाए थे। सिकन्दर उनसे बड़ी ही नम्रता और उदार भाव के साथ मिला और उसने सबकी नजरें स्वीकार कीं। सिकन्दर चैल्डंस (Chaldeans) के बनाए हुए ज्योतिष सम्बन्धी ग्रहों की चाल और उनके स्थानादि के नकशे पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने उनकी नकलें करवा कर अपने शिक्षक अरस्तू के पास भेजीं। सिकन्दर ने स्वयं शहर बैबलान और बेबिल के देवमन्दिर की परिक्रमा की। (ई० पू०) ४३० में फारिस के बादशाह जर्कसीज ने—जो कि एक मात्र अपने मत के सिवाय अन्य मतों का पूरा शत्रु था—बैबलान के बहुत से धार्मिक स्थानों को तोड़ फोड़ डाला था इस लिये बैबलान वासियों ने सिकन्दर से प्रार्थना की कि यदि वे उसकी आज्ञा पावें तो अपने स्थानों का जीर्णोद्धार करवा लें और विशेष कर बेबिल देव के उस कीर्ति स्तम्भ का जिसे वे धार्मिक विचार से अपने आदि पुरुष का स्थापित मानते थे—सिकन्दर कभी किसी मत का विरोधी न था, उसका विचार था कि धार्मिक मत मतान्तर सम्बन्धी ऐसे विचार जिनके सहारे पर मनुष्य मात्र की जीवन यात्रा निर्भर है कदापि नीरस और निष्प्रयोजन नहीं है। उनमें अवश्य कुछ न कुछ गूढ़ तत्व है जो कि सर्व साधारण की समझ में सहज ही नहीं आ सकता। इसलिये वह प्रत्येक मतों को बड़ी ही रुचि आदर

और मर्य्यादा की दृष्टि से देखता था। अस्तु सिकन्दर ने उन्हें आज्ञा प्रदान की। सिकन्दर बैबलान में केवल एक महीने ठहरा—तब तक उसकी थकी हुई फौज भी आराम लेकर चङ्गी हो गई।

यद्यपि एक प्रकार से सम्पूर्ण फारिस राज्य सिकन्दर के हाथ में आ चुका था किन्तु उसे राजधानी के मुख्य मुख्य स्थानों पर स्वयं जाकर उसकी देख भाल करनी और प्रजा के हृदय में अपना प्रभुत्व जमा देना शेष था। अतएव सिकन्दर बैबलान से चलकर सूसा (Susa) में आया। यहां पर असंख्य धन उसके हाथ लगा। कहा जाता है कि सिकन्दर ने यहां से केवल सोने चांदी से पांच सौ खच्चर और दो सौ ऊंट लदवाए। जिस समय सिकन्दर सूसा में था यूनान से उसकी माता ने अपने हाथ से बनाई हुई एक पोशाक और अपने कुशल समाचार का पत्र भेजा। सिकन्दर उक्त पोशाक को लेकर सिसगैमिलीस (Sisygamilies) के पास गया और उसे वे कपड़े बतलाए और कहा कि उसकी पौत्री अर्थात् दारा की लड़की भी ऐसा ही काम करना सीखे तो अच्छा हो—यह सुनते ही सिसगैमिलीस की आंख से आंसू निकल पड़े उसने समझा कि सिकन्दर उसकी पौत्री को शीघ्रही अपनी रानी बनाया चाहता है और तिस पर भी दुःख यह है कि वह रानी की भांति नहीं वरन गुलाम की भांति रक्खी जावेगी। सिकन्दर इस बात को ताड़ गया और उसने समझा था कि ये चीजें स्वयं मेरी माता और मेरी बहिन की बुनी और सी हुई हैं और इससे यह अभिप्राय नहीं है कि वे सर्वदा यही काम करती हों पर यह मेरे प्रति उनकी सच्ची

प्रीति और वात्सल्य का चिन्ह है। मेरी माता मुझे अब भी वैसा ही प्यार करती है जैसा कि वह मुझे अबोध अवस्था में चाहती थी और मैं अपने को उसके साम्हने अभी वही दुधमुहा बच्चा समझता हूं—वास्तव में सिकन्दर की माता में बड़ी सच्ची प्रीति थी। उसी समय की बात है कि राज्य कर्म्मचारियों ने राज्य शासन प्रबन्ध सम्बन्धी व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि आलेपियस के क्रूर स्वभाव और असहनशील वृत्ति के कारण राज्य प्रबन्ध के नियमों में बड़ा गड़बड़ होता है। यह देखते ही सिकन्दर ने कहा कि उनके ऐसे बर्ताव से दुखित होने के कारण मेरी माता की आंख से यदि एक बूंद आंसू भी गिरा तो वह ऐसी ऐसी दस चिट्ठियों को धो कर बहा देगा—सिकन्दर का अपनी माता के प्रति प्रेम ही नहीं था वरन वह माता और पुत्र के प्रेम सम्बन्धी तत्वों से भी परिचित था और इसी लिये उसने सुतविरहिणी माता गोवियस को सदा इस प्रकार से रक्खा कि जिसमें उसे पुत्र विछोह की ठेस अधिक न पहुंचने पावे।

शहर परसीपोलिस ।

सिकन्दर ने इच्छा की कि वह सूसा चल कर फारस प्रान्त के पहाड़ी किलों में पैठे क्योंकि उसका प्रबल शत्रु दारा अरबेला से भाग कर वहीं पर छिपा हुआ था और पहाड़ी लड़ाइयों में दक्ष विकट फारसी लोग उसकी रक्षा के लिये जी जान से सन्नद्ध थे। इस अवस्था में सिकन्दर का उन पहाड़ियों को पार कर के दारा तक पहुंचना कठिन ही नहीं वरन बहुत असम्भव था परन्तु भाग्यवश सिकन्दर को यहां

पर एक ऐसा मनुष्य मिल गया जो कि यूनानी और फारसी दोनों भाषाएं अच्छी तरह जानता था—कहा जाता है कि इस मनुष्य के मिलने की सूचना उसे स्वप्न में भी हो चुकी थी—उसने सिकन्दर को सलाह दी कि यदि वह अमुक अमुक स्थानों से चक्कर दार चाल से चले तो वह फारिस प्रान्त के आहे जिस भाग में सुगमता से पहुंच सकता है। अस्तु सिकन्दर ने उसीका मत मान कर सूसा से फारसी बादशाहों के (आदि भवन) आदि स्थान शहर परसीपोलिस की राह ली—परसिपोलिस उस समय फारिस राज्य की मुख्य राजधानी होने के कारण एक अद्वितीय धनवान स्थान था। परसीपोलिस में पहुंचते ही सिकन्दर ने शहर में आग लगवा दी और कत्ल आम भी बोल दिया जिसमें करोड़ों रुपए का माल असबाब भस्म हो गया और लाखों बेगुनाह मर्द औरतें सबके सब मारे गए। यद्यपि ऐसा हुक्म देते समय उसके वृद्ध सेनापति ने कहा कि ऐसा करने से क्या लाभ है—आग लगाने से जो हानि होगी वह फारसी राज्य की नहीं है वरन अपनी ही है क्योंकि अब से यह राज्य अपने अधीन है अतएव यहां की रहने वाली प्रजा भी आप ही की है और उसपर आप दया करें तो अच्छा है

परन्तु सिकन्दर ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया—यह काम चाहे सिकन्दर ने फारस देश निवासी मनुष्यों के हृदय पर अपना आतङ्क जमाने या अपने थके मांदे सिपाहियों को लूट में मालामाल करके उनका उत्साह बढ़ाने की इच्छा से ही किया हो परन्तु यूनानी इतिहास लेखक सिकन्दर के इस जघन्य कर्तव्य का कारण इस प्रकार लिखते हैं कि जिस

समय सिकन्दर ने परसीपोलिस के पास पहुंच कर सुना कि दारा यहां पर नहीं है वह अपने प्राणों की रक्षा के लिये फारस की उत्तरी पहाड़ियों में घूम रहा है तो उसने उसी का पीछा करना विचारा । दारा की खोज में कूच करने के एक दिन पहिले सिकन्दर ने अपनी सब फ़ौज का एक आमोद मय जलसा करने की आज्ञा दी और कुछ खास मित्रों की मंडली सहित आप भी गीत वाद्य और मद सेवन में प्रवृत्त हुआ । सिकन्दर की इस अन्तरंग सभा में मिश्र प्रदेशान्तर्गत अटिका नगर की रहने वाली थीस नाम की एक स्त्री भी थी और वह उस समय उत्तमोत्तम गीत गा कर सभासदों का आनन्द बढ़ा रही थी—जब उसने देखा कि सभा मण्डली तथा सिकन्दर स्वयं मदमत्त अवस्था में व्यस्त होकर खुले दिल उसके हाव भाव और कटाक्ष की चोट खा रहे हैं उसने उसी समय बड़ी अदा के साथ कहा—अहा मैं समस्त एशिया खंड पर अण्डवण्ड फिरती फिरती बिलकुल थक गई हूं परन्तु मैं इस बात से प्रसन्न हूं कि आज मैं एक ऐसे स्थान पर आ पहुंची कि जहां पर गत फारसी बादशाहों का दर्प सहज ही चूर्ण किया जा सकता है। अहा तब मैं और भी प्रसन्न होऊं यदि उस जर्कसीज का निवास स्थान जला दिया जावे जिसने कि यूनानी मिश्री लोगों को मनमाना दुःख दिया और उनके पूज्यपाद देवताओं की मर्य्यादा भङ्ग की और यह सब (सिकन्दर की तरफ इशारा कर के) आपके भ्रू निक्षेप मात्र से हो सकता है । यह सुनते ही सिकन्दर अपने स्थान पर से कूद कर खड़ा हो गया । सब दर्बारी भी ताली देते उठ खड़े हुए । सिकन्दर की आज्ञा

पाते ही तमाम यूनानी सेना में कुहराम पड़ गया, जो जहां जैसा था वैसा ही परसीपोलिस की तरफ दौड़ पड़ा। पहिले तो यूनानी सिपाहियों ने मन मानी लूट की और फिर आग लगा दी, यदि कोई भी जीव जन्तु उस अग्नि कुंड से निकल कर भागने की इच्छा करता तो यूनानी सैनिक अपनी तेज तलवारों से काट कर उसे फिर उसी में डाल देते थे। दूसरा कारण यह भी बतलाया जाता है कि जिस समय सिकन्दर रास्ते में आ रहा था उसे पहाड़ियों के बीचो-बीच कुछ यूनानी लोगों का एक ऐसा झुंड मिला जो कि फारसी लोगों के विजित गुलाम थे। उन सब के नाक कान कटे हुए थे। वे सिकन्दर को देखते ही उसकी राज्य वृद्धि के लिये ईश्वर से प्रार्थना कर ढाढ़ मार कर रोने लगे; यह देख कर सिकन्दर का हृदय स्वजाति प्रेम से भर उठा और उसकी आंख से आंसू भी निकल पड़े। उसने कहा यदि वे चाहें तो वह उन्हें उनके घर तक भेज सकता है परन्तु उन लोगों ने इस कुरूप और खंडित अवस्था में घर जाने से नाहीं की और कहा कि हमारे लिये यहीं पर कुछ जीविका का प्रबन्ध कर दिया जावे। सिकन्दर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। अब तक सिकन्दर ने उन लोगों को कष्ट पहुंचाने की चेष्टा न की थी जो कि उसके सम्मुख लड़ने के लिये खड़े न हुए थे परंतु इस दृश्य ने सिकन्दर का दिल फारसी लोगों की तरफ से अत्यन्त खट्टा कर दिया और इसी का परिणाम परसीपोलिस की लूट और वहां के निवासी अगनित जीवों की हत्या है।

सिकन्दर ने परसीपोलिस के बाहरी प्रान्त में खण्डहर में जरक्सीज की क्षित विक्षित पाषाण मूर्ति को देख सिकन्दर फौरन उसके पास खड़ा होगया और उसी मूर्ति को सम्बोधन करके बोला क्या मैं अपने देश यूनान प्रति तुम्हारे अत्याचारों और अपने देशवासी भाइयों प्रति जघन्य व्यवहारों का स्मरण करके तुम्हें इसी घृणित अवस्था में पड़ा रहने दूं? अथवा वीरोचित एवं पुरुषार्थमय उत्तम कार्य्यों का स्मारक स्वरूप मान कर तुम्हें एक उत्तम स्थान पर स्थापित करवा दूं। इतना कह कर कुछ देर चुप चाप उसी पाषाण मूर्ति की तरफ बड़े ध्यान से देखता रहा और फिर चला गया।

सिकन्दर जाड़े के मौसिम भर परसीपोलिस में पड़ा रहा। उसने वहां पर (Cyrus) साइरस के मकबरे को भी खुदवा कर देखा। सिकन्दर राजमहल से लूट में आए हुए दारा के रत्नजड़ित सिंहासन पर भी शकुन के तौर पर बैठा। जिस समय सिकन्दर उस तख्त पर बैठा कौरेन्थियन नामक एक वृद्ध पुरुष जो कि उसके पिता फिलिप का मुंहलगा मित्र था आंसू बहाते हुए बोला-हा! फिलिप को यह सौभाग्य प्राप्त न हुआ कि वह अपने प्यारे पुत्र को दारा की गद्दी पर बैठा देखता। सिकन्दर स्वयं समय का पाबन्द और बड़े कड़े दिल का आदमी था, परन्तु वह औरों लोगों के आराम और खुशी का बड़ा ख्याल रखता था—यह उसका पहिला काम था कि जहां तक बनता अपने साथियों की प्रसन्नता का प्रयत्न करता रहता था और उसे इसलिए यहां पर चार महीने तक पड़ाव डालना पड़ा।

दारा की मृत्यु।

बसंत ऋतु का आरम्भ होते ही सिकन्दर ने फिर अपने लश्कर की बाग उठाई और जिस तरफ को वह सुनता कि दारा गया है उसी तरफ आप भी जाता। जब तक सिकन्दर फारिस के उत्तरी भू भाग के पहाड़ी चट्टानों में चक्कर लगा रहा था तब तक इधर दूसरा गुल खिल उठा। बलख प्रान्त के प्रतिनिधि शासक बेसूस ने स्वयं दारा के विरुद्ध बगावत ठान दी और दारा को कैद करके आप स्वयं फारसी सेना का स्वामी बनने की लालसा से समस्त फारसी सेना का स्वामी बन बैठा। सिकन्दर ने जब यह हाल सुना तो वह फौरन बराबर दिन रात का धावा मारते हुए पश्चिम दिशा की तरफ बढ़ने लगा। सिकन्दर गर्मी की कड़ी धूप में सिर्फ घंटे दो घंटे आराम करता था, बाकी दिन रात चलता था। इस प्रकार से ११ दिन में दिन रात की दौड़ के बाद बारहवें दिन के सवेरे उसने बेसूस के दल को जा लिया। सिकन्दर ने रातों रात बेदाना बेपानी के २५ कोस का रेगिस्तान पार करके सीधे उस रास्ते का नाका जा बांधा जहां से वे लोग घूम करके आने को थे। सिकन्दर के उपयुक्त स्थान पर पहुंचते पहुंचते फारसी सेना भी मन मलीन अवस्था में तीन तेरह होती हुई वहीं पर आपहुंची। सिकन्दर ने दिखादाव होते ही अपने सवारों को फारसी सेना का मुकाबला करने की आज्ञा दी परन्तु फारसी सेना यूनानी सवारों को देखते ही दुम दबा कर निकल गई। सिकन्दर ने सुना कि सेना तो भाग गई परन्तु दारा पकड़ गया है, यह सुन कर ज्योंही वह उसके पास गया तो उसने

लोगों की अब तक की हुई विशद और विमिल विजय में अकट कलंक का धब्बा लग जावेगा। अतएव मेरी इच्छा नहीं है कि उन असभ्य जातियों को विजय किए बिना ही पीछे लौटने की इच्छा करूं। जिन लोगों को जाना हो वे जावें; परन्तु स्मरण रहे कि वे लोग अपने इस कायर कर्म के लिये भविष्य में अवश्य ही धिक्कारे जावेंगे। लोग कहेंगे कि सिकन्दर तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय प्राप्त करता परन्तु उसके कायर साथियों ने उसे मझधार में ही छोड़ दिया। सिकन्दर के इस नैतिक और श्रोजवर्द्धक व्याख्यान की इति भी न होने पाई थी कि सब सैनिक बोल उठे कि हम लोग अपने तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते रहते आपका साथ देंगे। तिस पर भी सिकन्दर ने जिन लोगों को देखा कि वे यूनान जाने के लिये ऐसे उतावले हैं कि उनके रहने से घर की चाह का रोग उसके उद्दण्ड सैनिकों को भी लग जाना सम्भव है उन्हें उसने मन माना धन दौलत और जवाहिरात दे कर यूनान को बिदा कर दिया। और उसी समय एशिया माइनर और परशिया के कैदियों में से तीन हजार नव युवक चुन कर उन्हें यूनानी भाषा और मैसिडोनियन ढंग की सैनिक शिक्षा दिए जाने की आज्ञा दी।

सिकन्दर ने यहां से पृथ्वी पर आक्रमण के लिये बीस हजार पैदल और चार हजार सवार चुन लिए। उसने फारिस को फतह करने बाद यह भी इच्छा की कि अब वह अपने नाम को उन सुप्रतिष्ठित पदों से अलंकृत करे जो कि एशिया भर के शासक के लिये उचित हैं। क्योंकि अब तक वह केवल हुजूर जहांपनाह आदि करके

ही पुकारा जाता था। इस लिये उसने अपने को (पूर्वीय पद) शाहंशाह (सम्राज) के पद से अलंकृत किया। उसके इस दरबार में फारस राज्य से सम्बन्ध रखने वाले सब धनी मानी लोग आए। इन सब लोगों में परशिया राज्य का सब से पुराना और नमकहलाल गवरनर (मंडलेश्वर) आर्टेजेस भी आया जिसकी अवस्था ९५ वर्ष की थी। सिकन्दर ने इसकी ईमानदारी और बुजुर्गी की अत्यन्त इज्जत की। सिकन्दर अपनी फौज की कवायद पैदल होकर लेता था। परन्तु इस जलसे के सम्बन्ध में जो कवायद हुई उसमें सिकन्दर घोड़े पर सवार रहा और वह इस लिये कि जिसमें उसके साथ पैदल रहने से बुड्ढे को किसी प्रकार की तकलीफ और ग्लानि न हो।

यद्यपि सिकन्दर का डेरा स्थायी था परन्तु उसके सेनापति लोग बराबर इधर उधर धावा किया करते थे। उसके पिता का मित्र वृद्ध परमिनियो एलबर्ज पहाड़ के उत्तरी हिस्से में दौरा कर रहा था और उसका पुत्र फिलोटस (Philotas) अपना दौरा करके सिकन्दर के साथ में आमिला था। फिलोटस बड़े चिड़चिड़े स्वभाव का मनुष्य था इस लिये उसके साथियों में से सभी लोग उससे अप्रसन्न रहा करते थे। फिलोटस ने दारा की मृत्यु के समय एक फारसिस स्त्री को अपना लिया था। यद्यपि उसके विचार से वह स्त्री उसकी सच्ची अर्द्धाङ्गिनी हो गई थी इस लिये वह उससे प्रायः अपने गुप्त मन्तव्य प्रगट कर दिया करता था किन्तु वास्तव में वह उसको घृणा करती थी।

जिस समय सिकन्दर ने फारस का बादशाह हो कर उस देश के सनातन पद "शाहंशाह" को धारण किया, उस समय उसने फारसी पोशाक और गहने भी पहिने। इससे फारसी लोग तो प्रसन्न थे किन्तु उसके सब यूनानी मुसाहब उसके नवीन भेष पर ठट्ठे बाजी करने लगे। पहिले तो सिकन्दर ने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया किन्तु जब बात बढ़ गई और उसे यह साधरण उपहास किसी प्रकार मानभंगसूचक जान पड़ने लगा तो उसका इस विषय पर ध्यान होगया। उसने सुना कि परमिनियो और उसका पुत्र फिलोटस उसे "एक छोकरा" कह कर सम्बोधन करते हैं। इसी समय निकोमकस नामक उसके एक पार्श्ववर्ती सेवक ने कहा कि लिमनिस नामक एक यूनानी सिपाही ने उससे कहा कि यदि वह सिकन्दर को जहर दे दे तो अच्छा हो। यह बात सिकन्दर के दिल में जम गई। उसने अनुमान कर लिया कि लिमनिस ऐसे साधारण मनुष्य को मेरे मारने के लिये चेष्टा करने से क्या लाभ है। दाल में कुछ काला अवश्य है और उसने उसे इस जघन्य कार्य्य का हेतु फिलोटस को अनुमान किया। सिकन्दर ने अपने अनुमान को निश्चय करने के लिये लिमनिस के पकड़े जाने की आज्ञा दी, परन्तु वह मारा गया पकड़ा न गया। भाग्यवश वे लोग जो फिलो-टस के विरुद्ध थे उसकी प्रणयिनी उक्त स्त्री को सिकन्दर के सामने लाए और फिलोटस की उन गुप्त लालसाओं का कथन करवा दिया जो कि वह उससे प्रगट कर चुका था। स्त्री के कथन से सिकन्दर का अनुमान पूरा हो गया। उसने उसी समय फिलोटस को पकड़ा मंगाया और सब दर्बारियों के

सामने अपने केम्प से बहुत दूर ले जाकर उसे तलफा तलफा कर मारे जाने का हुक्म दिया। इधर मेदीस के पड़ाव पर पड़े हुए परमिनियो के अधिसेनानायक को एक गुप्त आज्ञा पत्र भेजा गया जिसे देखतेही उसने चारपाई पर पड़े अपना खत किताबत पढ़ते हुए बुड्ढे अफसर को पीठ पर से छुरा भोंक कर मारडाला और उसका सर सिकन्दर के पास भेज दिया। परमिनियो के मारे जाने पर उसके मातहत सिपाही बड़े बिगड़े थे और करीब था कि वे उस सिकन्दर के आज्ञापालक को मार डालते परन्तु सिकन्दर का हस्ताक्षरयुत आज्ञापत्र देख कर चुप हो रहे।

बेसूस को सज़ा।

इस समय सिकन्दर का मुख्य उद्देश्य बेईमान बेसूस पर आक्रमण करके उसे धूलि धूसित करना था। इसलिये उसे हिन्दूकुश पहाड़ के आस पास के उस गहन वनमय, हिमाच्छादित पथरीले भूभाग पर पैर रखना पड़ा जहां कि इस समय कुरुदेशी जाति का निवास स्थान है। उक्त भूखण्ड के निवासी असभ्य जन समूह सिकन्दर के आक्रमण से पहिले अन्य किसी सभ्य जाति से न तो विजय किए गए थे और न शासित हुए थे। इस लिये वे लोग तब तक निरे उज्जड़ और वनचर थे। इस दुर्गम स्थान पर सिकन्दर को बड़ा दुःख और कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। परसीपोलिस के लूटके अमूल्य गहन और कपड़े जिनको युनानी सिपाहियों ने छाती की थाली बना कर रख छोड़ा था यहां उनके लिये भार स्वरूप हो गए। सिकन्दर ने सिपाहियों से कवायद लेते हुए उन सब सामान को इकट्ठा करवा कर आग लगवा

दी । परन्तु तब भी उसे नदी जेहून के उस पार काबुल के आस पास अवश्य ठहरना पड़ा ।

(ई० पू०) ३२९ के वसंत ऋतु के आरम्भ होते ही सिकन्दर ने दरयाय जेहून को पार करने की इच्छा की परन्तु यह नदी आधी मील चौड़ी और इतनी अधिक गहरी है कि इसे विना नाव बेड़े के पैदल पार करना असम्भव था । सिकन्दर ने यहां पर जंगली काठ के बेड़े और जानवरों के चमड़ों में भूसा भरवा कर उन पर से नदी पार की । इसमें सिकन्दर को पांच दिन लग गए । तब तक इधर बेसूस को उसके ही सिपाहियों ने कैद कर लिया । जैसा कि उसने दारा के साथ किया था वैसा आप पाया । अतएव सिकन्दर ने अपने सेनापति टालमी को भेज कर बेसूस को अपने पास पकड़वा मंगवाया । जिस समय बेसूस सिकन्दर के साम्हने लाया गया विलकुल बे परद था, सिर्फ रस्सी से बंधा हुआ एक जूता उसके गले में लटक रहा था । सिकन्दर ने उसे दारा के भाई के हवाले करके इस घृणित और भयानक दशा से मारे जाने की आज्ञा दी कि जिसके डर से पार्श्ववर्ती अन्य असभ्य जन समूह पर भी एक प्रकार का आतंक जम जावे ।

परन्तु वे लोग सिकन्दर के दबाव में न आए । नदी जेहून के किनारे सात नगर ऐसे थे कि जिनके निवासी जातीय धर्म्म-भेद के कारण सिदीयन और तारतंस लोगों के विरुद्ध फारसी जाति की ही एक शाखा समझे जाते थे । वे लोग भी सिकन्दर के विरुद्ध हथियार बांध कर सन्नद्ध हुए । सिकन्दर ने उन पर आक्रमण किया और दोनों दलों

में घोर संग्राम हुआ। उन्हीं लोगों की लड़ाई में समरकन्द के पास सिकन्दर की टांग में एक तीर का घाव आया और साइरोपोलिज़ की लड़ाई में दो एक पत्थर सिकन्दर की गरदन के जोड़ पर इस ज़ोर से लगा कि जिससे उसकी आंख तलमला गई और वह कई दिन तक बेसुध पड़ा रहा। इससे क्रुद्ध होकर सिकन्दर ने ऐसी विजन बोली कि शत्रु लोगों का आबाल वृद्ध युवा एक भी जीता न छोड़ा गया। सिकन्दर की इस क्रोधरूपी अग्नि के वे लोग भी आहुति बने जो कि वास्तव में यूनानी थे जिन्हें जर्क्सीज़ ने १५० वर्ष पहिले, अपोलो के मन्दिर से निकाल दिया था और वे अपनी जन्म भूमि छोड़ कर भटकते भटकते यहां पर आ रहे थे। सिकन्दर के इतना सब कुछ करने पर भी स्वतंत्र सोदियन उसके काबू में न आए। सीदियन मंडलीक से और सिकन्दर से केवल एक लड़ाई हुई जिसमें सीदियन लोग भाग उठे और सिकन्दर ने उनका पीछा किया। इसी धावे में एक झरने का बरफीला पानी पीने से सिकन्दर बहुत बीमार पड़ गया और वह बीमारी यहां लों बढ़ी कि उसके मरने जीने की दो दो पड़ गई। इसलिये उसके डेरे वहीं पड़ गए और दवा दारू होने लगी। तब तक समरकन्द के सरदार ने उसकी अधीनता स्वीकार करते हुए उसे अपने पास बुला भेजा और सिकन्दर समरकन्द को चला आया। सिकन्दर को यहीं पर परमिनियों के मारे जाने का समाचार मिला जिससे उसके जी की एक बड़ी भारी दुविधा दूर होगई क्योंकि वह जानता था कि परमिनियो के सब सैनिक उसे जी जान से चाहते हैं ऐसा न हो कि ऊंट उलटे करवट बैठ जावे।

मादक दृश्य ।

जिस समय सिकन्दर समरकन्द में ठहरा हुआ था उसकी इष्ट आराध्य देवी डायोनीसार के प्रथम दिन का त्योहार आया । यह उसका सब से बड़ा त्योहार था । इस लिये उस दिन सब सेना को मनमाना आमोद प्रमोद मनाने की छुट्टी दी गई । अगनित पशुओं का बध करके पूजन किया गया, रात्रि के समय मित्र मंडली में बैठ कर शराब का दौरा चलना आरम्भ हुआ । शराब पीते पीते जब सब लोग बेसुध होकर अपने आपे से बाहर होगए तब सब अपने अपने मन के गीत गाने लगे, मुंह लगे लोग सिकन्दर की मन मानी प्रशंसा करते हुए उसे कभी सर्व-शक्तिमान का अवतार बतलाते, कभी कुछ कहते थे । सिक-न्दर का धा-भाई क्लीटस जो कि सिकन्दर की तन्दुरुस्ती के नाम के प्याले पीते बिलकुल बदमस्त हो रहा था बोल उठा "ये सब लोग जो तुम्हारी झूठी प्रशंसा कर रहे हैं, तुम्हारे दास और अनुचर हैं यदि कोई स्वतंत्र पुरुष तुम्हें देवता होना स्वीकार करे तब ठीक है । क्या तुम फिलिप के पुत्र नहीं हो ? क्या तुम मेसिडोनियन मनुष्य नहीं हो । अथवा तुम्हारा यह रक्त-मांस-गठित पंच-भौतिक शरीर मेसिडोन के अन्न जल से नहीं पोषित हुआ है ? सावधान ! अब से कभी ऐसा विचार भी न करना कि तुम एमन, जुपिटर (देवी) के पुत्र हो !" सिकन्दर ने कहा, रे मूर्ख ! तू मेरा अपमान और स्पर्धा करते हुए मेरे अधीनस्थ सिपा-हियों में गदर मचाना चाहता है ? तूं ने जो इतनी द्रव्य और मान मर्य्यादा पाई यह किसके यत्न से ? क्लीटस ने कहा

यह सब हमारे ही परिश्रम और पुरुषार्थ का फल है। सिकन्दर ने फिर कहा, रे मूढ़ क्या तू नहीं देखता कि तेरे सब समाज में जंगली लोगों से बड़ा मैं ही देख पड़ता हूं। इसका उत्तर क्लीटस ने बड़े ही कड़े शब्दों में सम्बोधन करते हुए दिया; उसने कहा कि "अच्छा तो जाओ उन्हीं जंगली लोगों में रहो, उन्हीं के से वल्कल वस्त्र धारण करो, वेही तुम्हें अवतार मानेंगे और पूजेंगे। यह सुनते ही सिकन्दर का गुस्सा अधिक बढ़ गया और वह क्लीटस की तरफ भूखे सिंह की भांति घूरने लगा। यह देख कर क्लीटस ने सिकन्दर को एक सेब फेंक कर मारा। सिकन्दर ने फौरन अपनी तलवार की तरफ हाथ बढ़ाया, परन्तु नशा का शुरूर बढ़ने का ढंग देख कर सेवकों ने तलवार पहिले ही से उठा रक्खी थी, इस लिये सिकन्दर खाली हाथ ही क्लीटस से द्वन्द युद्ध करने के लिये झपटा परन्तु लोगों ने बीच बचाव करके क्लीटस को वहां से बाहर निकाल दिया। होनहार वश क्लीटस दूसरे दरवाजे से फिर भीतर रंगशाला में घुस आया और बोला, वह बहादुरी उस समय कहां गई थी जब मैंने ही तुम्हें मरने से बचाया था। यह सुनते ही सिकन्दर ने अपने एक शरीर रक्षक के हाथ से भाला छीन कर क्लीटस की गरदन में ठूस दिया और क्लीटस वहीं मरा हुआ रह गया। थोड़ी देर बाद जब नशा कुछ कम हुआ और सिकन्दर अपने आपे में आया, अपने मित्र क्लीटस की मौत पर अत्यन्त विकल होकर रो उठा और उसके मृतक शरीर से बरछा निकाल कर अपने गले में झोंक देने को था कि लोगों ने पकड़ कर उसके हाथ से बरछा

छीन लिया। सिकन्दर को अपने ही हाथों से अपने जीव रक्षक सच्चे मित्र के मारे जाने का इतना अधिक दुःख हुआ कि वह उसी समय मूर्छित होकर गिर पड़ा। अन्यान्य मुसाहिब लोग उसे उठा कर शयनागार में ले गए। वहां पर सिकन्दर तीन दिन विना अन्न जल के पड़ा रहा। उसके मुसाहवों ज्योतिषियों और प्रोहितों आदि ने यह कह कर उसे संतोष दिलाया कि उस दिन उस थीवियन प्रदेश की देवी को वलि नहीं दिया गया था, यह सब उसी के प्रचंड कोप का परिणाम है, इसमें स्वयं आपका कुछ दोष नहीं है।

इसके कुछ थोड़े ही दिनों वाद सिकन्दर ने पहाड़ी प्रदेश सोगडियन [Sogdian] को फतह किया। वहां का सरदार अकजीआद्रीज़ [Oxyartes] कैद कर लिया गया। परन्तु उसकी लड़की रोक्साना [Roxana] सिकन्दर के हृदय में वस गई। इस लिये उसने उसे अपनी दासी बना कर रखना चाहा परन्तु पवित्रहृदया रोक्साना ने कहा कि यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो आप मेरे साथ नियमानुसार व्याह कर सकते हैं अन्यथा आप मेरे शरीर को छूने की इच्छा न कीजिए। इस पर सिकन्दर ने प्रसन्न होकर उससे यथोचित रीति से व्याह किया। इसी विवाह के उत्सव में एक ऐसी सभा की गई जिसमें यूनानी मेसीडोनियन फारसी अथवा उससे विजित अन्यान्य देशों के माननीय धनी मानी सभ्य पुरुष उपस्थित थे। खान पान आरम्भ होने के पहिले ही सिकन्दर की आज्ञानुसार एनक्सरेकस [Anaxarchus] नामक एक विद्वान पुरुष ने एक व्याख्यान दिया। उसने सांसारिक घटनाएं और ईश्वर की ईश्वरता का वर्णन करते

हुए अन्त में कहा कि एक ऐसे महत्पुरुष को जिसको तुम उसकी मृत्यु के पश्चात् अवश्य ही पूजोगे उसे यदि उसकी जीवित अवस्था में ही पूजो तो क्या हानि है। अर्थात् यह पुरुष यह (सिकन्दर की तरफ़ हाथ करके) है। आप सबको उचित है कि इसको अपना सर्व श्रेष्ठ स्वामी मान कर पूजो। यह व्याख्यान ख़तम होते ही सिकन्दर शराब के प्याले भर भर कर देने लगा और सब उसके साम्हने दोज़ानू होकर सर झुका झुका कर ज़मीन चूमते हुए उसके हाथ से प्याला ले कर पीने लगे। परन्तु जब अरस्तू के भतीजे कैलस्थनीज (Callisthenese] की बारी आई तब उसने सिकन्दर के हाथ से प्याला ले लिया, परन्तु उक्त रीति से सर झुका कर प्रणाम न किया। जब उससे इसका कारण पूछा गया तो उसने ईश्वर और जीव में जो कुछ अन्तर है "सत्य विद्यानुसार" उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि सिकन्दर इस बृहत संसार में मनुष्य जाति का मुकुटमणि अद्वितीय वीर विजेता और उत्तम श्रेणी का नीतज्ञ बुद्धि विशारद पुरुष है। पूजन केवल ईश्वर का करना चाहिए। अस्तु न यह ईश्वर है और न उसके लिये ईश्वर या देवता की भांति प्रणाम करना उचित है। इस पर सिकन्दर ने अत्यन्त कुपित होकर उसे सभा से बाहर निकलवा दिया। और जलसा ख़तम होने पर उसे पत्थरों से मार मार कर मारे जाने की आज्ञा दी। मरते वक़्त उस बुद्धिमान तत्ववेत्ता ने केवल इतना कहा कि मेरे मरने से क्या होगा? यदि आप उन लोगों को—जिन्होंने कि मुझे आपके साथ भेजा विशेष कर अरस्तू अथवा यूनान के अन्य बुद्धिमान पुरुष जिनके

उद्दंड विचार कलुषित न हुए थे—उनको भी मरवा डाले तो अच्छा हो—अन्त में तत्वज्ञानवेत्ता कैलास्थनीज पत्थरों से मार कर कई दिन तक के लिये पेड़ से लटका दिया गया—किसी किसी का कथन है, कि वह बराबर कैद रहा और हिन्दुस्तान में आकर मरा और सिकन्दर बराबर अपने विजय रूपी रास्ते पर बेधड़क चलने लगा।

भारतभ्रमण।

बलख को तावे करने पश्चात् सिकन्दर ने अपने पूर्वजों की विजय सीमा को भी उल्लंघन करके अपने को उनसे भी गौरवशाली बनाने की अभिलाषा से हिन्दुस्तान की तरफ कूच किया। हेमन्त ऋतु का अन्त होने पर ज्यों ही बरफ गलने से पहाड़ी रास्ता साफ हुआ त्यों ही सिकन्दर ने अपने लश्कर की बाग उठाई। उसने बलख से ५० या ६० हजार आदमियों के हजूम के साथ चल कर हिन्दूकुश पहाड़ के उस शिखर के पास डेरा डाला जिसे इस समय "कोह-दामन" कहते हैं। और जहां पर कि उसने बलख पर विजय प्राप्त करने के दो वर्ष पहिले अपनी उत्तरीय विजय का सीमा स्वरूप स्कन्दरिया नामक नगर बसाया था। इस नगर के शासन के *प्रबन्ध* के लिये उसने जिस पुरुष को नियत किया था वह अपने कर्तव्य में कृतकार्य्य न पाया गया। इस लिये सिकन्दर ने परमिनियो के पुत्र अपने सच्चे मित्र निकानर [Nikanar] को स्कन्दरिया का शासक नियत किया। इसके सिवाय उसने आस पास के जिलों के निवासी लोगों को इकट्ठा करके स्कन्दरिया की जनसंख्या और भी बढ़ाई और एक उत्तम रणकुशल सेनासमूह भी वहां पर नियत

किया; क्योंकि स्कन्दरिया उसकी विजय सीमा तो था ही परन्तु उसने अब इसे अपने आगत आक्रमणों की सहायता के लिये एक ऐसा केन्द्रस्थल भी बना लिया कि समय पर उसे वहां से सहायता भी मिल सके और उसको विजय के समाचार इस स्थान से होकर बराबर यूनान तक पहुंचा करें। उसने कोशान पास और काबुल के बीच के मुल्क का मुल्की इन्तज़ाम टेरियसपस के सुपुर्द करके वहां का केन्द्र-स्थान निकाइया नगर को स्थापित किया जो कि प्राचीन जलालाबाद के पश्चिम में काबुल से हिन्दुस्तान को आने वाली सड़क के किनारे पर था।

जून या जुलाई ३२७ (ई० पू०) में सिकन्दर ने यहां पर अपनी सेना के तीन खंड किए और उन्हें जनरल हेफाइस्टन और परडिकस को देकर उन्हें काबुल की घाटी के रास्ते से पूसफ़ज़ी प्रदेश पर अधिकार करते हुए सिन्ध पार करने की आज्ञा दी। उक्त दोनों सेनानायकों ने अपने स्वामी सिकन्दर की आज्ञा पालन कर वहां से कूच किया और (ई० पू०) ३२७ ई० के अगस्त महीने में वे पंजाब में आगए। सिन्ध नदी के उस पार के सब राजाओं ने सहज ही सिकन्दर को अपना विजेता मान कर उन लोगों की अधीनता स्वीकार करली। केवल एक राजा ने जिसे यूनानी लोगों ने (अस्ती) हस्ती करके लिखा है और जो कि प्राचीन हस्तिनापुर के राज्य वंश में से मालूम होता है—उनका सामहना किया परन्तु पूरी शिकस्त खाई। हिफाइस्टन और परडिकस जिस समय पूर्व की तरफ बढ़े टेक्सीला अथवा तक्षशिला का राजा उनका सहकारी बन गया, जिससे उनको सिन्ध नदी का पुल

बनाने में बड़ी सहायता मिली, जिस काम के लिये कि विशेष कर सिकन्दर ने उन्हें आगे आगे भेजा भी था।

दूसरी सेना की वाग सिकन्दर ने अपने हाथ में ली जिसमें अधिकतर पैदल थे परन्तु सिकन्दर के शरीर रक्षक नेजे-बाज सवार और रथी महारथी भी उसके साथ में थे। इसी प्रकार थोड़ी परन्तु रणविद्याविशारद सेना साथ में लेकर काबुल नदी के उत्तरी भाग की पहाड़ियों में रहने वाली भयानक जातियों को विजय करने की इच्छा से सिन्दकर ने उत्तर दिशा का रास्ता पकड़ा। यद्यपि इस प्रदेश में सरदी और धूप इतनी अधिक थी कि यहां के निज बासिन्दों के अतिरिक्त बाहरी आदमी को वहां पल भर ठहरना कठिन है परन्तु सिकन्दर ऐसे कड़े दिल शासक ने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया, जो उसके साम्हने आया उसे मार काट करते रोंदते खोंदते वह आगे बढ़ गया। यह ठीक ठीक तो नहीं मालूम हो सका कि वह किस किस रास्ते से चला और कौन कौन से प्रदेश नगर और जातियां उसने विजय कीं। परन्तु बहुत दिनों के बाद उसने एक छोटे से कस्बे के घाट पर जिसका कि नाम नहीं मालूम है, कुनार नदी को पार किया पर इसी दौरे में से किसी लड़ाई में सिकन्दर को एक गहरा घाव लगा जिससे चिढ़ कर उसने उस प्रदेश को खड़े दम कटवा डाला, बुड्ढा जवान एक भी जीता न छोड़ा।

इसी उक्त जघन्य कर्तव्य के पश्चात् सिकन्दर ने अपने साथी सैनिकों को दो भाग में बांट दिया, एक अनी तो उसने अपने बुद्धिमान सखा क्रियेटेरस के साथ इस अभिप्राय से

कर दी कि वह कुनार नदी की घाटी में रहने वाली जातियों को विजय करता चले और दूसरी अनी सहित आप एसपासियन लोगों पर आक्रमण करने चला, जिन्हें उसने भली भांति विजय किया ।

इस प्रकार सिकन्दर पहाड़ी रास्ते को तै करके बाजौर (१) की घाटी में पैठा और एरीगैान नामक कस्बे तक बढ़ता चला गया । एरीगैान के लोगों ने सिकन्दर की चढ़ाई सुनते ही अपना गांव आप जला दिया और आप पहाड़ों में इधर उधर जा छिपे । तब तक सिकन्दर का सरा सेनापति केटर्स भी कुनार नदी के किनारे के प्रदेश पर अधिकार करके अपने स्वामी से आ मिला, निदान तब सिकन्दर ने यह निश्चय किया कि भारतवर्ष की भूमि पर पैर रखने से पहिले हमें उचित है कि हम पूर्व प्रान्त की उन जातियों को विजय करलें जो कि हमारे रास्ते से किसी प्रकार दाहने बाएं भी क्यों न हों ।

सिकन्दर ने एसपासियन लोगों पर दूसरी चढ़ाई की । इस बार जो लड़ाई हुई उसमें वे लोग अच्छी तरह से हराए गए । चालीस हजार मनुष्य कैद कर लिए गए और करीब दो लाख अच्छे कुलीन बैल भी उनसे छीने गए जिन्हें सिकन्दर ने उसी समय यूनान को भेज दिया । यूनान में कुछ ऐसी कहानियां प्रचलित थीं जो कि सिकन्दर के डाइयोनिसस के पूर्वज एवं पूज्यदेव के पहाड़ी प्रदेश नीसा से कुछ सम्बन्ध

(१) किसी किसी अंग्रेज इतिहासज्ञों का मत है कि सिकन्दर ने निसाल पर भी चढ़ाई की । परन्तु मिस्टर वी० ए० स्मिथ ने इस बात को स्पष्ट कर दिखाया है कि वह निसाल तक नहीं गया ।

बतलाती थीं। इस कारण वश सिकन्दर नीसा प्रदेश प्रति कुछ प्रीति भी रखता था परन्तु उसे उक्त कहानियों की स्थिति निश्चय करने की इच्छा भी थी, इसलिये उसने नीसा प्रदेश पर आक्रमण करने की आज्ञा दी परन्तु उक्त प्रदेश के रास्ते में जो नदी पड़ती थी वह अत्यन्त गहरी थी इसलिये सिकन्दर ने उसे बेड़ों पर पार करना चाहा। किन्तु तब तक नीसा प्रदेश निवासी लोग स्वयं सिकन्दर की शरण में आ गए और वे सिकन्दर की सेना सहित अपने प्रान्त में लेगए। नीसा प्रदेश की राजधानी का नगर एक ऊंचे परन्तु समतल पर्व्वत शृङ्ग पर सुशोभित था जिसके चारों ओर हरी हरी अंगूर की झाड़ियां और और भी नाना भांति के जंगली बेल बूटे लहलहा रहे थे। वहां पर पहुंचते ही सिकन्दर के साथी लोगों की आंखों के साम्हने यूनान देश का मान-चित्र खिच गया और वे अपने को एक प्रकार से अपनी जन्म भूमि में पहुंचने के बराबर समझने लगे। सिकन्दर ने नीसा प्रदेश के जलवायु, प्राकृतिक रचनाएं और निज देश सम्बन्धी दंतकथाओं के कारण अपने साथियों की नीसा प्रदेश प्रति हार्दिक प्रसन्नता देख कर उक्त दंतकथाओं के ऐतिहासिक परिशोध की भी चेष्टा न की। नीसा प्रदेश निवासी लोगों ने जो कुछ फल फूल नजर किया उसने उन्हें सानन्द स्वीकार कर लिया। सिकन्दर ने वहां पर अपनी फौज को दस दिन तक के लिये इसलिये बिल्कुल छुट्टी दी कि वे नीसा प्रदेश के भूमियां लोगों के साथ मित्र भाव से मिल जुल कर वहां के प्राकृतिक आनन्द का अनुभव करें क्योंकि वे इस समय ऐसे भूभाग पर आ पहुंचे थे जो कि एक प्रकार

से उनकी जन्मभूमि का रूपान्तर स्वरूप था। इसलिये यहां स्वच्छन्द रह कर बहुतेरे यूनान देश के दर्शनाभिलाषी सैनिकों के हृदय का संतोष होना सम्भव था। सिकन्दर के इस कृपामय व्यवहार के बदले में नीसा निवासी लोगों ने भी उसका अच्छा आदर सत्कार किया और चलते समय उसके साथ तीन हजार सवार भी कर दिए, जिन्हें उसने हिन्दुस्तान की सफर में उस वक्त तक बराबर अपने साथ रक्खा जब तक कि वह भूपथ छोड़कर जलपथ द्वारा यूनान को लौटने के लिये जहाज पर सवार न हुआ।

नीसा प्रदेश निवासी लोगों की पहुनाई से निश्चिन्त होते ही सिकन्दर ने सुना कि एसकिनोई लोग बीस हजार सवार तीस हजार पैदल और बहुत से हाथियों का समूह इकट्ठा किए हुए उसका सामहना करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं इस लिये उसने बाजौर राज सीमा को उल्लंघन करते हुए पंजकोड़ा नदी को पार किया और वह अपनी सब सेना सहित एसकीनियस लोगों की राजसीमा में धस पड़ा। इस राज की राजधानी का नाम मसागा था। यह मसागा नगर तथा तन्मध्यस्थित मिंगलौर का किला प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों प्रकार की रचनाओं से भली भांति सुदृढ़ और सुरक्षित था। इसके पूर्व ओर से छोटी परन्तु गम्भीर और प्रखर स्वात नदी बहती थी। दक्षिण पश्चिम में घनी झाड़ी, अनगढ़ चट्टानें और बड़े बड़े गहरे गड्ढे थे। यदि कोई कठिनाइयों को पार कर भी ले तो किले की दीवार की मजबूती को ढाहना, और उसको घेरे हुए गहरी खाई को पार करना बहुत ही कठिन था। इस मिंगलौर के किले

की लड़ाई में सिकन्दर के एक तीर का घाव लगा परन्तु घाव ऐसा न था कि जिससे उसके कार्य्य में बाधा पड़े। यद्यपि ऐसे सुरक्षित किले के साम्हने मैदान में लड़ना और उक्त कठिनाइयों को पार करना बड़ी कठिन बात है परन्तु एक ऐसी सेना के लिये जिसका नेता सिकन्दर सा पुरुषार्थी वीर और परिश्रमी पुरुष था, कोई काम अनहोना न था। यूनानी सेना ने नौ दिन की कठिन लड़ाई के बाद पूरते पूरते खाई पर एक ऐसा बांध बांध लिया जिस पर से सेना किले की दीवारों तक पहुंच गई। दैव योग से उसी समय गढ़ रक्षक सेना का स्वामी एवं मुख्य नेता मारा गया। इसलिये वह फौज कुछ मनहार और हतोत्साह भी हो गई। निदान यूनानी सेना ने किला फतह कर लिया।

किसी किसी का मत है कि उक्त सर्दार के मारे जाने पर उसकी विधवा स्त्री ने आप ही सिकन्दर की शरण ली। उसके बाद उसको सिकन्दर के नाम से एक पुत्र भी जन्मा। इसी सम्बन्ध में एक दंतकथा और भी प्रचलित है। कहते हैं कि जिस समय सिकन्दर की फौज किले के बाहर घेरा डाले हुए पड़ी थी सिकन्दर रात के वक्त वेष बदल कर किले के भीतर अकेला चला गया; और इधर उधर घूमता हुआ किलोफिस के दरबार खास में पैठ गया जहां पर कि वह सब तरह के वस्त्र आभूषणों को पहने हुए मसनद से टिकी बैठी थी। सिकन्दर उसकी मोहनी मूर्ति देख कर ऐसा मस्त होगया कि उसे उस वक्त यह भी विचार न रहा कि वह कहां है और उसे इस समय क्या करना

चाहिए। अपनी धुन में मस्त किलोफिस के सामहने जा खड़ा हुआ। किलोफिस भी सिकन्दर के स्वरूप पर आसक्त होगई। परन्तु उसने सम्हल कर पूछा कि तू कौन है। सिन्दर ने उत्तर दिया "शाहंशाह" यह सुनते ही उस स्त्री ने सिकन्दर का हाथ पकड़ कर अपनी गद्दी पर बिठा लिया और आप उठ कर उसकी ताज़ीम की। उसी वक्त से झगड़ा मिट गया, और सिकन्दर बहुत दिनों तक उसका मिहमान रहा।

सिकन्दर के आक्रमण की सूचना पाकर एसकीनियन लोगों ने कुछ फौजी मदद हिन्दुस्तान के राजाओं से मांगी थी। इसपर यहां से सात हज़ार सिपाही भेजे गए थे; परन्तु सिकन्दर ने उनको घेर कर किले वालों की मदद से रोक लिया और उनसे इस बात का वचन ले लिया कि वे लड़ाई के समय सिकन्दर की ही सहायता करेंगे, और अन्त में उन्हें छोड़ भी दिया। इस हिन्दुस्तानी सेना का पड़ाव सिकन्दर की फौज के साम्हने ही एक पहाड़ी पर पड़ा। किन्तु उन्होंने परस्पर सलाह की कि यदि हम लोग किले वालों की सहायता न कर सकें तो न सही, परन्तु विदेशी विजेता की सहायता करके अपने देश पर आप आपत्ति लाना उचित नहीं है। ऐसा विचार करके उन लोगों ने चाहा कि रातों रात कूच करके अपने अपने घर चले जांय। जब यह समाचार सिकन्दर को मिला तो वह उनपर उसी वक्त चढ़ दौड़ा और मारकाट करने लगा। वे लोग इस आपत्ति से बिलकुल बे खबर थे इसलिये उन्हे बड़ी कठिनाई पड़ी। परन्तु उन्होंने विदेशी विजेता के बन्दी एवं गुलाम होकर युद्ध में कट कर मर जाना

ही श्रेयस्कर समझा। उन्होंने अपने स्त्री और बच्चों को बीच में कर के अपने को चक्रव्यूहाकार बनाया और यूनानी सेना के सम्मुख बड़ी वीरता के साथ लड़े। इसमें सन्देह नहीं कि सिकन्दर ने जो इस सेना को किले वालों की मदद देने से रोक रक्खा और अपनी सहायता देने को वाध्य किया यह उसकी उत्तम राजनीति का परिचय देता है। किन्तु जब कि वे चुपचाप अपने घर जाने की इच्छा कर रहे थे तब ऐसे अवसर पर बिना अपराध उन पर रातो रात आक्रमण कर के उन्हें काट डालना, प्रगट करता है कि सिकन्दर क्रोधी अधिक था। ऐसे जघन्य और आतङ्कसूचक कार्य्यों में उसकी रुचि भी अधिक थी।

इसके बाद सिकन्दर ने ओरा या नोरा नगर को अपने अधीन कर के वजीरा नगर पर आक्रमण किया परन्तु वजीरा और उसके आस पास के लोग अपना घर द्वार छोड़ कर सिन्ध नदी के किनारे पर स्थित महावन के पर्व्वत के शिखरों पर जा छिपे। जिस स्थान पर ये लोग छिपे हुए थे उसे यूनानी लोगों ने औरनोस का किला करके लिखा है। सिकन्दर को इस अगम्य एवं अभेद्य स्थान पर जय प्राप्त करने में स्वयं सन्देह था। क्योंकि उसके पास फौज इतनी अधिक न थी कि मरते खपते ऐसे अड़बड़ स्थान पर विजय प्राप्त कर सके। दूसरे यह भी प्रसिद्ध था कि उसका पूर्वज प्रसिद्ध वीर हरक्युलीज़ भी उस स्थान पर से शिकस्त खाकर लौटा है।

वह महावन पर्व्वत जिसपर कि औरनोस का किला बतलाया जाता है बारह मील के विस्तार में समुद्र की

सतह से ३००० फीट और सिन्ध नदी की सतह से ५००० फीट ऊंचा है, इसके दक्षिण पार्श्व में गम्भीर जलपूरित सिन्ध नदी बहती है, बीचों बीच ऐसी दँतीली और बड़ी बड़ी चट्टानें हैं कि किश्ती नाव इत्यादि पर से भी इस पार से उस पार जाना असम्भव है। दूसरी तरफ बड़े बड़े गड्हे ऊंची ऊंची पथरीली पहाड़ी और दल दल इत्यादि इन चीजों का ऐसा विकट अवरोध है कि अत्यन्त रणकुशल सेना भी उसका सामहना नहीं कर सकती। उक्त अपेक्षित स्थान पर जाने के लिये केवल एक ओर से कुछ समतल भूमि है। परन्तु वहां पर भी इतना पानी भरा रहता है कि जिसपर से रास्ता बनाने में बरसों लग जावे। इसके सिवाय पर्वत शिखर स्वयं खड़ी चट्टानों से इस प्रकार घिरा हुआ है जो कि दूर से उत्तम कारीगरों की बनाई हुई किले कीसी दीवारें देख पड़ती हैं।

सिकन्दर ने इस स्थान पर आक्रमण करने के पहिले भोरा, मसागा, बजीरा, सूवात और बुनेर की पहाड़ियों के बीच में स्थित अपने प्रथम विजित स्थानों पर अपने थाने बिठाए और तब शेष सेना सहित आप शाह कोट के दर्रे के रास्ते से अभिप्रेत स्थान की तरफ चला। उसी स्थान के आस पास के दो जमींदार सर्दारों ने उसे बड़ी सहायता दी। सिकन्दर यूसुफजई प्रान्त की सीमा पर अधिकार जमाता हुआ महाबन पर्वत के उपस्थल में आ पहुंचा। उसने अपने एक सेनापति क्रेटेरस को कुछ फौज सहित इसी स्थान पर इस अभिप्राय से छोड़ दिया कि यदि आगे गहरी लड़ाई पड़ने पर उसके साथ वाले सिपाही समहार

हो उठें तो यह ताजी फौज से मुनासिब मदद दे और इस तरह से न तो चलते काम में बाधा पड़े और न शत्रु का उत्साह बढ़ने पावे ।

सिकन्दर ने दो दिन तक निस्तब्ध रूप से ठहर कर इस बात की अच्छी तरह से जांच करली कि अब किस तरह आक्रमण करना चाहिए । उसने अपनी फौज के दो टुकड़े किए । उसने कुछ थोड़े से यूनानी और समस्त स्थानी सेना सहित जनरल टालेमी [Ptolemy] को पूर्व की तरफ से आक्रमण करने को भेजा और आप पश्चिम की तरफ से चढ़ा । जब जनरल टालेमी पूर्वीय खोह में पैठ पड़ा तब किले वालों ने उसपर आग पत्थर बर्साना शुरू किया और यहां तक मार मारी कि आखिर में सिकन्दर को अपना मोरचा छोड़ कर टालेमी की सहायता के लिये जाना पड़ा । सिकन्दर किसी तरह टोलेमी के मोरचे को जमा कर फिर अपने स्थान पर आया और आगे बढ़ा । गहरी मार काट होते होते पूर्व ओर से टालेमी और पश्चिम से सिकन्दर दोनों एक ही समय सब कठिनाइयों को पार करके शहरपनाह नामी खड़ी चट्टानों के पास तक आ गए । यहां से अब यूनानी सेना केवल एक ही मुहासिरे में चोटी पर पहुंचने को थी ।

यूनानी सेना अब तक जितनी कठिनाइयों को पार कर चुकी थी उन सब से इन अड़बड़, खड़ी और दँतीली चट्टानों का पार करना कठिन था । यदि कहीं से इन चट्टानों के बीचो बीच होकर रास्ता भी था तो आगे इतना बड़ा गड़हा था कि जिसमें सब यूनानी सेना एक दम समाजावे ।

इसलिये सिकन्दर ने अपने दौड़ के साम्हने वाले गड़हों को लकड़ी पत्थर इत्यादि से पाट कर साफ रास्ता बनाना चाहा। कहते हैं कि इस कार्य्य के लिये आज्ञा देते समय सिकन्दर ने स्वयं कुछ पत्थर के ढोंके अपने हाथ से ढोकर डाले थे। सिकन्दर के इस उत्साहप्रद कार्य्य कौशल से उसके सैनिक ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने महीने भर का कार्य्य केवल चार दिन में कर डाला। जब गड़हे भरपूर होकर साफ़ रास्ता हो गया तब सिकन्दर के पास उधर से सन्धि के समाचार आने लगे। परन्तु यह सन्धि सूचक प्रस्तावों का सिलसिला उनके हृदय से न था, इधर वे संधि की बातें कर रहे थे उधर अपने बचाव का रास्ता भी खोज रहे थे। एक दिन आधी रात के समय उन लोगों ने चुपके से किला छोड़ कर भाग जाना चाहा और यह चाल चैतन्य यूनानी सिपाहियों के आगे चौपट होगई। यूनानी सिपाहियों ने भागने वालों को पकड़ कर कत्ल कर दिया और उसी दम किले पर अपना झंडा जा जमाया।

सिकन्दर ने इस प्रकार उस अभेद्य दुर्ग पर विजय प्राप्त कर के "जिस पर कि उसका पूर्व्वज वीर हरकुलीज़ हार खा चुका था" बड़ी खुशी मनाई। उसने सम्पूर्ण देवी देवताओं को बली चढ़ा कर पूजन किया। उक्त पर्व्वत इष्ट शृंग पर उसने एक किला बनवाया। और कुछ सेना भी उसमें रक्खी और ससिगुप्त * (Sosikottos) नामक एक

*"ससिगुप्त" यह नाम मेरी तरफ से कल्पित नहीं है बरन मैं अपनी पुस्तक में हर जगह प्रायः हिन्दुस्तानी और यूनानी दोनों नाम लिखे हैं।

हिन्दू सर्दार" को जो कि सिकन्दर के बलख पर आक्रमण करने के समय से उसके साथ था–उस किले एवं उसकी समीपवर्ती भूमि का प्रतिनिधि शासक नियत किया।

यहां से चल कर सिकन्दर ने एसकीपियन लोगों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की इच्छा से उनके राज्यसीमान्तर्गत स्थित उस समय प्रख्यात नगर डयरटा (Dyrta) पर "जो कि उपरोक्त ओरोनस के किले से कुछ थोड़ी दूर उत्तर की तरफ था"–अपना थाना बिठाया। डयरटा नगर के आस पास के निवासी लोगों ने विदेशी विजेता की सेवा स्वीकार न करके अपनी जन्मभूमि को ही छोड़ दिया और वे सिन्ध नदी पार करके झेलम और चिनाब के बीचों बीच निर्जन भूखण्ड पर आन बसे। सिकन्दर ने इनका पीछा करना व्यर्थ जान कर ओहिन्द के पुल की तरफ पैर बढ़ाया। यद्यपि डयरटा से ओहिन्द के पुल तक बहुत कम फासिला है परन्तु झाड़ी जंगल को साफ करते फौज के आने जाने योग्य साफ रास्ता बनाते हुए सिन्ध नदी के किनारे तक पहुंचते सिकन्दर को १५ दिन लग गए।

सिन्ध नदी पर पहुंच कर सिकन्दर ने किश्तियों का पुल तय्यार पाया परन्तु उसने अपनी थकी हुई फौज को आराम देने की इच्छा से पड़ाव डाल दिया और तीस दिन तक बराबर वहीं पड़ा रहा। इस अवसर में उसने अपने कुल देवताओं की पूजा की, नाना भांति के बलिदान दिए और उसकी फौज ने सिन्ध के किनारे किनारे स्वच्छन्द रूप से बन विहार कर नाना भांति की कसरतें और जानवरों का

शिकार करके अपनी थकावट दूर की *

सिकन्दर का पड़ाव ओहिन्द में पहुते ही तक्षकशिला नगर के राजा ओम्फिस [Omphis] का राजदूत उसके पास आया, वह राजा सिकन्दर से पिछले वर्ष निकाइया [Nikaia] में मिल चुका था। इसलिये सिकन्दर के साथ उसका यह सम्बन्ध केवल पूर्व परिचय को दुहराना भर था। इस राजा ने सिकन्दर को सात सौ घोड़े, तीस हाथी, तीन हजार बैल, एक हजार भेंड़े और दो सौ स्वर्ण मुद्रा नजर दिए जिन्हें सिकन्दर ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार किया। इस तक्षकशिला के राजा अम्फिस का सिकन्दर से मिलने का कारण यों बतलाया जाता है कि उस समय उसकी एक लड़ाई तो उत्तर प्रदेश के पहाड़ी राजा अभिसार से हो रही थी दूसरी लड़ाई उस राजा के साथ जिसे यूनानी लोगों ने पोरस करके लिखा है थी। इसलिये राजा अम्फिस ने अपने प्रबल शत्रु सिकन्दर का आश्रय ग्रहण करके अपने बन्धु बान्धवों को दमन करना विचारा था।

टैकशिला नगर जिसे प्राकृत और पाली भाषाओं में तक्षकशिला और संस्कृत में तक्षशिला करके लिखा है सिन्ध नदी के इसी पार सिकन्दर के पड़ाव से तीन मंजिल की दूरी पर था। मिस्टर कनिंगहाम ने (Cunningham) टैकशिला की स्थिति रावलपिंडी के उत्तर पश्चिम शाह

---

* किसी का मत है कि सिकन्दर अटक के पास सिन्ध नदी पार हुआ। राजा शिवप्रसाद ने ऐसा ही लिखा है परन्तु उसका पड़ाव उन्द या ओहिन्द नामक छोटे कसबे के पास था। वहीं सिन्ध नदी पर किस्तियों का पुल बांधा गया था।

घेरी के पूर्व दक्षिण हसन अब्दुल गांव के आस पास बतलाते है। उस समय तक्षकशिला हिन्दुस्तान के पश्चिमोत्तर प्रदेश का साहित्य क्षेत्र था। हिन्दुस्तान के और प्रदेशों के लोग भी वहां आतक विद्या सीखने आते थे। यहां का राजा झेलम और चिनाब के बीच के भूभाग पर बसते हुए तीन सौ गावों पर राज्य करता था।

इस बार तक्षशिला के राजा का पुत्र अम्भिराज दूत बन कर आया था। वह सिकन्दर से बड़े शिष्टाचार और आवभाव से मिला। उसने सिकन्दर की फौज को अपनी तरफ से रसद बरदाम और खाना पीना दिया। सिकन्दर को अपने वा अपने दोस्तों की तरफ से ८०० मोहर नजर की। सिकन्दर ने अम्भि का नजराना फेर दिया और उसने फारिस की लूट का बहुत कुछ सोने चांदी और जवाहिरात का सामान और तीस जिरहबख्तर अपनी तरफ से राजकीय पुरष्कार की भांति अम्भि को दिए और उसकी बड़ी खातिर और इज्जत की। सिकन्दर का अम्भि के साथ ऐसा बर्ताव करना यूनानी सर्दारों को बहुत बुरा मालूम हुआ और उन्होंने सिकन्दर की वास्तविक नीति को न जान कर उसके इस कार्य्य में बाधा देना चाहा परन्तु वह सब व्यर्थ हुआ।

जाड़े के दिन बीतते तथाही बसंत ऋतु का आगमन होते ही (ई० पू०३२६ मार्च के महीने में) सिकन्दर ने सिन्ध नदी को पार किया और वह तक्षकशिला में आया। जिस समय सिकन्दर तक्षकशिला से केवल पांच छः मील की दूरी पर था तक्षकशिला का राजा अपने सैनिक समारोह के साथ

सिकन्दर को लेने के लिये चला । सिकन्दर ने उसकी ऐसी चढ़ाई देखकर समझा कि वह शायद युद्ध करने की इच्छा से आरहा है, इसलिये उसने अपनी सेना को भी चैतन्य होने की आज्ञा दी परन्तु अम्भि ने उसे समझा दिया कि वे आपसे भेट करने आ रहे हैं न कि लड़ने। यह सुनते ही सिकन्दर शान्त पड़ गया। सिकन्दर सेना सहित तक्षक शिला के राजा का बहुत दिनों तक मेहमान रहा। उसमें और सिकन्दर में उक्त रीति से घना सम्बन्ध हो गया। जब कि सिकन्दर तक्षकशिला में पड़ा हुआ था पहाड़ी प्रदेश का राजा अभिसार सिकन्दर का मुकाबला करने की इच्छा से पोरस के साथ मेल करने का उपाय कर रहा था। परन्तु ज्योंही सिकन्दर का सँदेसा उसके पास गया त्योंही उसने प्रसन्नतापूर्वक सिकन्दर की सेवा करना स्वीकार कर लिया। पोरस भी ऐसाही करेगा यह समझ कर सिकन्दर ने पोरस को भी अपने पास बुलाने के लिये दूत भेजा। परंतु वीर पोरस ने उत्तर दिया कि मैं आपसे मिलने को तय्यार हूं परंतु युद्ध क्षेत्र में।

सिकंदर मार्च से लेकर अप्रैल भर तक्षकशिला में ठहरा रहा। इस अवसर में उसकी फौज की सब थकावट दूर होगई और वह फिर से ताजादिल होगई। सिकन्दर ने तक्षकशिला के राजा की सहायता के लिये सेना सहित झेलम की तरफ कूच किया, जिसके दूसरे किनारे पर राजा पोरस पचास हजार सेना लिए उससे लड़ाई छेड़ने को सन्नद्ध था। तक्षकशिला से झेलम तक कुल १०० या ११० मील का फासला है परन्तु जमीन बड़ी ऊबड़ खाबड़ है इसलिये

सिकन्दर को झेलम तक पहुंचते पहुंचते पन्द्रह दिन लग गए। वैसाख ज्येष्ठ की धूप में यूनानी लोगों को सफर करना बड़ा कठिन था। परन्तु भाग्यशाली सिकन्दर के कार्य्य कौशल और पुरुषार्थ से वे अब तक बराबर फतह पर फतह पाते आते थे। उनके उत्साह के साम्हने धूप सीत कुछ चीज न थी। सिकन्दर के झेलम पर पहुंचते पहुंचते गाड़ियों पर रख कर सिन्ध नदी से वे किश्तियां भी आगईं जिनसे सिन्ध नदी पर पुल बांधा गया था और उन्हें झेलम नदी के पानी में पुल के ढंग पर जोड़े जाने का विचार किया गया परन्तु जब सिकन्दर ने समझा कि ज्योंही उसकी फौज नदी के बीचो बीच पहुंचेगी या नदी का घाट छूने लगेगी उसी समय यदि शत्रु की फौज ने उस पर हमला कर दिया तो उन मैसिडोनियन सवारों के जिनका कि उसे सबसे ज्यादा भरोसा था—घोड़े भी शत्रु दल के दँतारे दीर्घ काय हाथियों के साम्हने न ठहर सकेंगे। दूसरे वर्फ के गलने से नदी के पानी का बढ़ाव भी वे मुनारे हो रहा था। अस्तु ये सब बातें सोच विचार कर के सिकन्दर ने झेलम के उसी पार डेरे डाल दिए और फौज में हुकम पुकार दिया कि लड़ाई के वक्त के लिये रसद बरदास का उचित प्रबन्ध कर लिया जावे तब आगे कूच किया जायगा। इधर उसने अपने बुद्धिमान सेनानायकों को हुकम दिया कि वे किश्ती पर सवार होकर रातों रात नदी का कोई ऐसा घाट तलाश करें जहां से सब यूनानी सेना बिना किसी नाव बेड़े के नदी पार कर सके। जनरल एरियन [Arrian] ने यूनानी सेना के पड़ाव से सोलह कोस ऊपर चढ़ कर

एक ऐसा घाट तलाश किया जहां पर कि नदी के उस पार ऐसा घना जंगल था कि यूनानी सेना पार उतर कर उस जंगल में छिप कर रह सके और दुश्मन को उनके आने की कानो कान खबर न हो ।

उसने क्रटेरस को तक्षकशिला की सहायक सेना सहित पड़ाव पर रहने दिया और कुछ सवार और कुछ पैदल सेना सहित तीन सर्दारों को उस घाट पर भेज कर उन्हें हुक्म दिया कि वे समय पाकर तुरंत पार उतर जायँ और उस पार पड़ाव माफ करें । यह प्रबन्ध करके सिकन्दर स्वयं रात्रि के समय ग्यारह या बारह हजार ऐसी सेना जिसमें पैदल, सवार, धनुर्द्धर सवार, रथी इत्यादि भांति भांति के सिपाही थे, और पांच हजार बरछेबन्द मैसिडोनियन सवारों के साथ अभिप्रेत स्थान की तरफ चला। जुलाई का महीना था, एक तो वैसे ही आंधी पानी के जोर से अंधेरा रहता था दूसरे अपनी चाल को शत्रु की नजर से छिपाने की इच्छा से सिकन्दर ने आधी रात के समय कूच किया। सूर्योदय होते होते वह उस जगह पर आ पहुंचा जहां से कि उसे नदी पार होना था । जब वह झेलम की एक धार पार करके समतल परंतु झाड़ीदार भूभाग पर पहुंचा तो उसे मालूम हुआ कि वह भूभाग झेलम नदी का एक टापू था । उसके बाद फिर भी उसे एक गंभीर धारा पार करके तब उस किनारे की भूमि पर पहुंचना था । इस गहरी धारा को सवार लोग तो आसानी से पार कर गए परन्तु पैदलों के पार होने की खबर पहुंचते पहुंचते हिन्दुस्तानी लोग उससे लड़ाई करने के लिये सन्नद्ध हो बैठे ।

सिकन्दर के झेलम पार करने का समाचार पाते ही पोरस का पुत्र दो हज़ार सवार और एक सौ बीस रथियों की सेना लेकर उससे लड़ने के लिये आया। परन्तु यूनानी सेना ने उसे लड़ते ही मार भगाया। पोरस के पुत्र की सेना के रथ और रथी तो प्रायः सब चूर चूर हो गए और चार सौ सवार मारे गए। बाकी लोग भाग पड़े। भागने वाले ने यह आपत्ति जनक समाचार पोरस को जा सुनाया जो कि झेलम के उस पार ठहरे हुए क्रेटरस के आक्रमण से अपने पार परतल को बचाने के लिये उसका साम्हना रोकने की तय्यारी कर रहा था।

सिकन्दर से अपने पुत्र के परास्त होने का समाचार पाकर अपनी मातृभूमि एवं प्रजा को विदेशी विजेता के आक्रमण से बचाने के लिये पोरस ने सिकन्दर के सम्मुख यात्रा की। उस समय पोरस के साथ दो सौ हाथी, तीस हज़ार पैदल, चार हज़ार सवार और तीन सौ रथ थे। पोरस की सब सेना के आगे हाथियों की बौड़ थी और वे एक दूसरे से सौ गज के फासिले पर खड़े किए गए थे। उनके पीछे पैदल सेना की सतरें थीं। इस व्यूह के दोनों तरफ आगे रथों की और तिनके पीछे सवारों की कतारें थीं। हिन्दुस्तानी सेना के प्रत्येक रथ में चार चार घोड़े जुते थे और हर एक रथ पर दो रथवाहक दो रथी और ढाल लिए हुए दो उनके शरीररक्षक, छः आदमी सवार थे। पैदल सिपाहियों के पास लम्बी लम्बी तलवारें, ढालें, और कंधे पर कमानें लटकती थीं। उनकी वे कमानें साढ़े तीन हाथ लम्बी थीं जिनका रौदा हमेशा खुला रहता था।

सिपाही लोग उन पर ऐसे लड़ाई के समय रौदा चढ़ा कर कमान को बाएं पैर में विधा कर दोनों हाथों से चढ़ा कर निशाना मारते थे। यूनानी लोग स्वयं लिखते हैं कि उनके पास कोई ढाल या बख़्तर ऐसा न था कि जो हिन्दुस्तानी सिपाहियों की बाणावली से उन्हें बचा सके। परंतु लड़ाई का मैदान ढालुआं होने के कारण हिन्दुस्तानी रथों की चाल का हेर फेर वैसी उत्तमता से नहीं हो सकता था जैसा कि होना चाहिए और जो हिन्दुस्तानी सवार थे वे यद्यपि यूनानी सवारों से डील डौल और हथियारबन्दी में कहीं बढ़ चढ़ कर थे परन्तु यूनानी सवार युद्ध विद्या में उनसे अधिक दक्ष और रणकुशल थे।

इस प्रकार बड़ी भारी व्यूह बद्ध सेना सहित पोरस अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये करी के मैदान में सिकन्दर के सम्मुख आया। सिकन्दर ने पोरस की सेना को देखते ही मन में निश्चय कर लिया कि वह उससे साम्हने की लड़ाई में पार नहीं पासकता। इसलिये उसने प्रबल शत्रु को कार्य्यकौशल से ही परास्त करना निश्चय किया। सिकन्दर ने अपनी सेना के छः हज़ार पैदल सिपाहियों को पीछे की तरफ हट कर खड़े रहने की आज्ञा दी और उन्हें ताकीद करदी गई कि जब वे देखें कि हिन्दुस्तानी फौज का व्यूह टूट गया और वे कुछ घबड़ा से गए हैं त्योंही वे भी हमला करके उनकी मदद करें। उसने पहिले अपने एक हजार सवार पोरस की सेना के बाएँ बाज़ू की तरफ जो कि बिलकुल झेलम के किनारे से लगा हुआ था भेजे। ज्योंही हिन्दुस्तानी सेना उन सवारों पर झपटी कि सिकन्दर आप

चार हजार सवारों सहित उनकी मदत को पहुंच गया उधर जनरल कोइनोस [Koinos] हिन्दुस्तानी सेना के दाहिने बाज़ू के पीछे आपहुंचा और उन्हें पीछे से मारने लगा। इधर तो बाएँ बाज़ू के सिपाही दोहरे आक्रमण से स्वयं घबराए हुए थे उधर दहिना बाज़ू भी कोइनोस का हमला रोकने के लिये पीछे की तरफ फिर उठा। उसी समय सिकन्दर ने देखा कि हिन्दुस्तानी सेना के दोनों बाज़ू के सवार पीछे को फिर रहे हैं और इस तरह से व्यूह के दोनों बाज़ू बलहीन हो गए हैं। तब उसने आप चार हजार सवारों सहित व्यूह का मध्य भाग भेदन करने की चयेष्टा की। हिन्दुस्तानी सेना जो इस कार्य्य कौशल से चकरा गई थी अपने बचाव के लिये हाथियों के पीछे छिपने लगी। यद्यपि हाथीवालों ने बहुतेरा चाहा कि वे अपने हाथियों से यूनानी घोड़ों को भगावें परन्तु यह न हो सका। यूनानी सेना ने हाथियों पर ऐसी कुशलता से सांग और भाले चलाए कि वे हाथी जो कि हिन्दुस्तानी फौज के बचाव के लिये आगे रक्खे गए थे घबड़ा कर अपनी ही सेना कुचलने और मारने लगे। इसी समय पीछे खड़े हुए ६ हजार पैदल सिपाहियों ने भी आक्रमण किया। हिन्दुस्तानी सेना का व्यूह छिन्न भिन्न होगया और आठ घंटे की कठिन लड़ाई के बाद खेल सिकन्दर के हाथ रहा।

एरियन (Arrian) नामक एक यूनानी लेखक जो कि इस युद्ध में स्वयं सिकन्दर के साथ था लिखता है कि हिन्दुस्तानी सेना के दोनों बाज़ू कमजोर पड़ने पर जिस समय सिकन्दर ने बांए बगल से हाथियों को मारना शुरू किया

और यूनानी भालों से छिद कर बहुत से महावत मारे जा चुके तब वे मतवारे हाथी जो शत्रु की सेना को कुचलने के लिये साम्हने रक्खे गए थे लौट कर अपनी ही सेना को मारने लगे। हिन्दुस्तानी फौज के एक तरफ एक नदी थी, दो तरफ यूनानी सवार थे और तीसरी तरफ से हाथियों की रौंद खोंद थी । यूनानी सवारों ने जो कि खुले मैदान में थे जब देखा कि हाथी घबड़ा कर केवल भागना चाहते हैं तो इन्हें राह दे दी और भाग जाने दिया । हिन्दुस्तानी राजा की फौज को यूनानियों ने घेरा देकर छेक लिया। इसी अवसर में जनरल क्रेटिस भी उस पार से ताजी फौज लेकर आगया। इस लिये यूनानी सेना का बल और भी बढ़ गया और उन्हों ने हतोत्साह हिन्दुस्तानी फौज को बीच में घेर कर तमाम रथ पैदल और सवारों का सत्यानाश कर दिया। हिन्दुस्तानी सेना के एक हजार सवार बारह हजार पैदल मारे गए और नौ हजार सैनिक कैद कर लिए गए। परन्तु यूनानी सेना की मृत्यु गणना एक हजार से ऊपर नहीं बताई गई है।

हिन्दुस्तानी फौज बहुत कुछ कटी मरी, कुछ कैद की गई, बहुतेरे लोग भाग भी गए परन्तु पोरस अपने स्थान से तिल भर भी न हटा। राजा पोरस साढ़े छः फीट ऊंचा और इसी प्रकार हृष्ट पुष्ट देव के समान महान बलवान पुरुष था । उसके शरीर में गहरे घाव लगे थे जिसके कारण वह विकल और बलहीन सा होगया था; किन्तु जिस समय सिकन्दर ने उसके साम्हने आकर प्रश्न किया कि अब मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करूं तब पोरस ने

दृढ़ता पूर्व्वक उत्तर दिया कि जैसा राजा राजाओं के साथ करते हैं। शत्रु से घिर जाने पर उस तनक्षीण वलहीन असहाय अवस्था में भी सिकन्दर पोरस की ऐसी दृढ़ता देख कर कुपित नहीं हुआ वरन उसने उसके उद्दण्ड प्रस्ताव को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। सिकन्दर ने पोरस के राज्य की प्रजा पर भी किसी तरह का अत्याचार न जनाया और न उसकी राज्य शासन प्रणाली में किसी प्रकार का हस्तक्षेप किया। सिकन्दर ने पोरस को अपना एक राजनैतिक मित्र करके माना और उन दोनों में वह मित्रता उस समय तक पूर्ण रूप से निभी भी जब तक कि सिकन्दर हिन्दुस्तान में रहा (१)।

सिकन्दर ने पोरस पर हिन्दुस्तान में पहिली विजय प्राप्त करने के कारण उसने इस विजय के स्मारक में दो गांव बसाए। निकाया (Nikaia) नगर उसने उसी युद्ध क्षेत्र पर स्थापित किया, जो कि उसी अवस्था में रह कर कुछ दिनों बाद उजाड़ होगया। पुरातत्ववेत्ता लोगों ने इसकी स्थिति का पता लगा कर इसे लड़ाई के मैदान (Karri) करी के उत्तर में सुखचैनपुर नामक गांव के पास ही बतलाया है। वहां पर कुछ ईंट चूने के ढेर भी पाए जाते हैं।

---

(१) अंग्रेजी इतिहासकारों ने लिखा है कि सिकन्दर ने बड़ी भारी जागीर भी अपनी तरफ से पोरस को दी परन्तु जहां तक विचार किया जा सकता है इस कथन की असलीयत ऐसी जान पड़ती है कि इस देश के उन छोटे सरदार या राजाओं का जिन्होंने उसकी सेवा करना प्रथम ही से स्वीकार कर लिया था, पोरस से किसी प्रकार का सम्बन्ध करा दिया गया।

सिकन्दर का दूसरा कीर्तिस्थम्भ झेलम के किनारे पर उस जगह पर स्थापित किया गया था जहां से कि उसने झेलम को पार किया था। इस नगर का नाम बोकेफल (Bonkephala) रक्खा गया था। सिकन्दर के साथ पोरस के पुत्र से जो पहिली लड़ाई हुई थी उसमें सिकन्दर का एक नामी सेनापति, कवि और तत्त्ववेत्ता मित्र जिसका नाम बोकेफेलस (Bonkephalus) था, उस स्थान पर मारा गया। इसलिये उसके ही नाम पर सिकन्दर ने यह गांव बसाया। कुछ दिनों के बाद उक्त नगर बहुत बढ़ गया। प्लूटार्क लिखता है कि यह नगर सिकन्दर के बसाए हुए सब नगरों से उन्नतिशाली हो गया था यहां तक कि व्यापार में यह हिन्दुस्तान के सब नगरों का शिरोमणि गिना जाता था, परन्तु अब उसका पता भी नहीं है। अनुमान किया जाता है कि प्राचीन झेलम नगर ही शायत बोकेफल का नामान्तर होगया और उसी के आस पास वह कहीं हो!

पोरस पर विजय प्राप्त करना हिन्दुस्तान के सीमान्तर गत सबसे बड़ी विजय थी, इसलिये सिकन्दर ने फिर भी अपने कुल देवताओं को नाना भांति के पशु बलिप्रदान करके उन्हें सन्तुष्ट किया और फौज को भी आमोद प्रमोद मनाने के लिये कुछ दिनों की छुट्टी दी। इसके बाद उसने सेनापति क्रेटरस को तो कुछ फौज के साथ वहीं छोड़ा कि वह विजित स्थानों का यथोचित प्रबन्ध रक्खे और यूनान को समाचार भेजने की एक चौकी भी कायम करके आप अधिकतर अश्वारोही सेना लेकर पूर्व की ओर रवाना हुआ। उसने पहिले पहल पोरस की राज-

धानों के बगल में रहने वाली ग्ल्यूसाइया ग्ल्युकनिकोई जाति पर आक्रमण किया। उन लोगों का अधिकार तीस कसबों और छोटे छोटे कई गावों पर था। सिकन्दर ने उन्हें जीत कर पोरस की राजधानी में मिला दिया। उसी सिलसिले में एक पहाड़ी राजा ने जिसे यूनानी लोगों ने एबिसारीज करके लिखा है सिकन्दर का सामना करना व्यर्थ जान कर स्वयं सिकन्दर के हुजूर में हाजिर आया। तीसरा सरदार उपरोक्त राजा पोरस का भतीजा जो कि चिनाब और रावी के बीच की उस भूमि का स्वामी था जिसे कि अब गौडलवार कहते हैं अपने आस पास के भूमियाओं को लेकर सिकन्दर की शरण आया।

सिकन्दर बराबर पूर्व्व की तरफ बढ़ता ही गया और आधी जुलाई के करीब करीब चिनाब पार हुआ। सिकन्दर किस घाट से चिनाब पार हुआ यह तो ठीक नहीं मालूम परन्तु यूनानी लोगों के लेख से केवल इतना पता मिलता है कि वह किसी पहाड़ी सिलसिले के करीब से गुजरा और अंग्रेज भूगोलकारों ने इस स्थान को वजीराबाद के तीस मील ऊपर अनुमान किया है। चिनाब पार करने में यद्यपि सिकन्दर को किसी शत्रु का साम्हना नहीं करना पड़ा परन्तु जलधारा की गम्भीरता प्रखरता और उसके बीच में पथरीली पहाड़ियों के कारण उसे बड़ी कठिनता और हानि उठानी पड़ी। बहुतेरी नावें तो चट्टानों से टकरा कर डूब ही गईं। इसके बाद उसने स्यालकोट के पुराने किले को जीता और तब वह आगे बढ़ कर बेखटके रावी पार

हुआ। रावी पार करके पहिले ही उसने सामरल हेफिस्टन को कुछ फौज के साथ पोरस के भतीजे को दमन करने के लिये भेजा जो कि पोरस की मान मार्य्यादा से चिढ़ कर फिर से सिकन्दर का शत्रु बन बैठा था।

सिकन्दर ने रावी पार करने के पहिले ही अनुमान कर लिया था कि उसे पार होते राजा कत्थोय से युद्ध करना पड़ेगा जो कि रावी पार एक प्रशस्त भूभाग का स्वामी था और सहस्त्रों रणकुशल पंजाबी योद्धाओं की सेना सदैव प्रस्तुत रखता था। इसलिये उसने हेफिस्टन को उलटा भेजते समय इस बात का भी प्रबन्ध कर लिया था कि जिसमें उन्हें उचित समय पर पोरस की तरफ से उपर्युक्त सहायता भी मिल सके।

सिकन्दर का अनुमान ठीक उतरा। राजा कत्थोय अपनी देश रक्षा के लिये सन्नद्ध था। इसके सिवाय पंजाब देश के और छोटे छोटे सरदार भी जो कि रावी के किनारे से लेकर लाहौर तक स्वतंत्र शासन करते थे अपने विजेता शत्रु के वार से बचने के लिये कत्थोय के साथी बने। सिकन्दर ने रावी पार करके अद्रुष्टि वंश (Adraistai) के स्थान पिम्प्रमा (Pimprama) पर आक्रमण किया और उसे लगे हाथ जीत लिया। इसके बाद उसने संगल (Sangala) के किले पर आक्रमण किया, जिसे कत्थोय तथा उसके सहायकों ने एक अगम्य स्थान समझ कर यहां से ही प्रबल शत्रु का सामहना करना विचारा था। यह किला कई एक पहाड़ियों और कटीले जङ्गलों से घिरा हुआ था इसके सिवाय कहीं कहीं दलदल भी थी। परन्तु लगातार विजय

पर विजय प्राप्त करनेवाली उत्साही सिकन्दर की वीर सेना के लिये यह सब कुछ कुछ भी न था। सिकन्दर ने मौका देख कर लड़ाई छेड़दी। तब तक पोरस भी पांच हज़ार पैदल बहुत से सवार और हाथी लेकर सिकन्दर की सहायता के लिये पहुंच गया। परन्तु यूनानी सेना ने पोरस के आने के पहिले ही किले की दीवार तोड़ डाली और दुश्मन पर फतह पा ली थी। इस लड़ाई में सिकन्दर के सौ सिपाही मरे और १२०० आदमी घायल हुए। यूनानी सेना को इस मुकाबले में बड़ी हानि पहुंची थी। इसलिये सिकन्दर ने जितने कैदी पकड़े गए थे सब को कटवा डाला और संगल के किले को गिरवा कर सम (ज़िमीदोज़) करवा दिया।

पंजाब की पांच नदियों में से अब केवल रावी सिकन्दर को पार करनी शेष थी। सिकन्दर के चित्त में इस बात का बड़ा उत्साह था कि अब वह रावी पार कर के आस पास के उन किसान सर्दारों को विजय करेगा जो कि अब तक स्वतन्त्र थे और प्रजातन्त्र साधन से ही अपने समाज की रक्षा कर रहे थे। इसलिये सिकन्दर ने रावी पार करने के लिये अपने मन में पूरे पूरे मनसूबे बांध रखे थे। जिस दिन उसे रावी पार करना था उसके दो दिन पहिले उसने अपने सिपाहियों को जमा करके एक व्याख्यान दिया जिसमें उसने यूनान छोड़ने के समय से अब तक की उन सब फतहयाबियों और उनमें प्राप्त हुए नाना प्रकार के धन रत्नों का वर्णन करते हुए कहा कि अब तुम लोग इसी भांति समस्त एशिया महाद्वीप के विजेता कहलाओगे।

सिकन्दर की ये बातें सुनीं तो सब ने गिरे मन से ! सिकन्दर के इस उत्साह तथा ओज-वर्द्धक व्याख्यान ने किसी को उत्साहित न किया परन्तु किसी ने कुछ उत्तर भी न दिया और सब चुपके चुपके सुनते रहे।

जब सिकन्दर के व्याख्यान का अन्त हुआ तब एक यूनानी सेनापति कोइनस ने (Koinos) जिसने पोरस के साथ लड़ाई में अत्यन्त वीरता और कार्यकौशल दिखाया था सिकन्दर को उत्तर देने की हिम्मत की। उसने कहा जिस समय आप हैलिस्पाण्ट की खाड़ी को लांघ कर भिन्न भिन्न देशों पर विजय प्राप्त करने का स्मरण करते हैं उस समय आपको इस बात पर भी ध्यान करना उचित है कि आप के वे यूनानी या मेसिडोनियन सिपाही जो आज से आठ साल पहिले आपके साथ घर से निकले थे अब किस अवस्था में हैं? बहुतेरे लोग तो अपनी प्रसन्नता न होने पर भी आपके बसाए हुए नगरों में उनकी रक्षार्थ छोड़ दिए गए। बहुतेरे भांति भांति की बीमारियों और रास्ते के दुःखों से मरे, बहुतेरे अस्वस्थ होकर ही मरे और शेष ने शत्रु के सम्मुख लोहे की धार में अपने प्राण दे दिए। इस समय जो लोग आपके साथ में हैं उनके चित्त ऊब उठे हैं। वे जैसे विदेश के जल वायु के कारण अस्वस्थ हैं उसी भांति उनका चित्त भी दुखित और अस्वस्थ है। अतएव वे इस योग्य नहीं हैं कि यथेष्ट रूप से आपकी सेवा कर सकें आपने अब तक जहां जहां विजय पाई यह सब इन्हीं बहादुर सिपाहियों के कारण है। अब आप देवताओं को समगर करने की अभिलाषा न कीजिए क्योंकि देवताओं को

बराबरी करना एक मनुष्य के लिये निपट असाध्य बात है।

कोइनस की ये बातें सब सैनिकों को बड़ी प्यारी लगीं इसलिये सब ने प्रसन्नतासूचक ध्वनि करते हुए उसकी बातों का प्रतिपादन किया परन्तु ये बातें सिकन्दर को बहुत बुरी लगीं। उसे मनही मन बड़ा संकोच और दुःख हुआ। वरन यों कहना चाहिए कि एक प्रकार से उसकी उठती हुई उत्साह पताका एक दम पतित हो गई। फिर तीन दिन तक बराबर सन्नाटा रहा। इस बीच में उसने ज्योतिषी और भविष्यवक्ताओं से भी आगे बढ़ने के विषय में जो प्रश्न किया उनका भी उसे यही उत्तर मिला कि अब आगे बढ़ने में कुशल नहीं है। उन्होंने सिकन्दर से कहा कि इस समय ग्रहों की चाल आपके विरुद्ध पड़ती हैं अतएव आगे बढ़ने में अच्छी आशा नहीं की जा सकती। इस बात से सिकन्दर का मन और भी डर गया और उसने सितम्बर महीने के मध्य में (३२६ ई० पू०) टूटे दिल से यूनान को लौट चलने का हुक्म सुनाया। *

सिकन्दर ने रावी के किनारे से लौट कर यूनान की तरफ कदम बढ़ाने के पहिले रावी के इस पार बारह स्तूप या विजयस्तम्भ बनवाए, जो कि सिकन्दर के उत्साह, शौर्य्य, युद्ध कौशल और उसके पौरुष से विजित पृथ्वी तल

---

* राजा शिवप्रसाद ने अपनी तवारीख में लिखा है कि सिकन्दर के लौट जाने का एक कारण मगध के राजा महानन्द का प्रताप भी था। इस जगह उनका लेख ठीक मालूम होता है क्योंकि इस पाठ में से जो कि साफ यूनानी लेखकों की कलम का तर्जुमा है यही ध्वनि निकलती है।

हा सीमा सूचक हैं। ये स्तम्भ बहुत दिन लों स्थित रहे। स्तूप बन जाने पर उसने अपने भिन्न भिन्न पुरखाओं के नाम से प्रत्येक पर बलि प्रदान किए और जमनैस्टिक आदि कसरतें करने की आज्ञा दी। ये स्तूप हिन्दुस्तान की उन जातियों से जो कि सिकन्दर का लोहा जा चुकी थीं, एक प्रकार से पूज्य स्वरूप थे। कहते हैं कि भारतवर्ष का प्रसिद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त उन स्तूपों का बड़ा आदर करता था, यहां तक कि जब कभी उसे रावी पार करना होता तो वह उन स्तूपों का पूजन करता और उन्हें बलि प्रदान करके तब किश्ती पर सवार होता था परन्तु वे यूनानी सिपाही जो सिकन्दर के साथ में थे अपने बयानों में बताते थे कि यह काम जो सिकन्दर के बलबुद्धि के तरंग हैं एक एक दिल्लगी के निशाने थे। क्योंकि उसने इन स्तूपों के बनवाने पीछे यह आज्ञा दी कि कुछ ऐसे मकान बनवाए जावें जो कि फौजी डेरों की भांति हों और वे ऊंचाई या लम्बाई तथा चौड़ाई में साधारण मकानों के तिगुने हों। उनमें जो प्रत्येक सिपाही या सवार के लिये रहने का स्थान नियत किया जावे वह भी ऐसाही तिगुना हो जिससे भविष्य में लोग समझें कि जिस सिकन्दर ने यूनान से आकर यहां तक बराबर विजय पाई, हजारों कोस जमीन सर कर डाली, उसके सिपाही हम लोगों से कहीं तिगुने लम्बे चौड़े और ताकतदार थे और ऐसे सिपाहियों का स्वामी सिकन्दर सो न जाने कितना बड़ा होगा?

सितम्बर मास का अन्त होने को था कि सिकन्दर ने अपने लश्कर की बाग फेरी और लौट कर चिनाब पार

करके उस किनारे पर डेरा जा डाला जहां पर उसके जनरल हैफिस्टन ने पहिले से ही कस्बे की नींव डाल रक्खी थी । सिकन्दर ने जाकर कस्बे को आबाद करवाया और अपने साथ के उन सिपाहियों में से कुछ ऐसे लोगों को जिन्हें उसने देखा कि वे उसके हुक्म की तामील करने में शक्य नहीं हैं उस गांव के रक्षार्थ वहां पर छोड़ दिया । उसी समय कुछ पहाड़ी राजपूत सर्दारों के राजदूत भी उसके पास आए । जिन राजधानियों के राजदूत सिकन्दर के पास आए थे वे स्थान इस समय हजारा जिले में राजौरी और मीसभार के नाम से प्रसिद्ध हैं । सिकन्दर उक्त राजदूतों से बड़े शिष्टाचार के साथ मिला और उसने उनके राजाओं को भी बुला भेजा । यद्यपि सिकन्दर इस समय मनहार होकर लौट रहा था परन्तु यह उसे पूर्ण रूप से निश्चय था कि उसके विजित भारतवर्ष का भूभाग अब सदैव के लिये यूनानी सलतनत के जेरसाया रहेगा। इस लिये उसने उक्त राजपूत राजाओं से बड़े आदर भाव और शिष्टाचार से मिलकर उन्हें रावी और चिनाव के बीच के भूभाग पर अपनी ओर का प्रतिनिधि शासक नियत किया। सिकन्दर ने (वर्तमान) हजारा के राजा से भी भेंट की परंतु उसे भी उपरोक्त सर्दारों के अधीनस्थ रक्खा । यहां से सिकन्दर के कूच की तयारियां हो रही थी कि तब तक वेवलान प्रतिनिधि शासक हरपैलोस के भेजे हुए पांच हजार सवार और सात हजार पैदल उसकी सहा[illegible] के लिये आन पहुंचे। वे लोग अपने साथ [illegible] स वर्दियाँ भी लाए थे जिसे सिकन्द[illegible]

बंधवा दिया और सब फौज के पुराने कपड़े इकट्ठे करवाकर उनमें आग लगवा दी ।

इसके बाद सिकन्दर ने आगे की यात्रा की और झेलम नदी के किनारे पर पहुंच कर उसने इसी पार उस स्थान पर अपने डेरे की मेख गड़वाई जहां पर कि पोरस से लड़ाई हुई थी । यहां पर उसने अपनी जलयात्रा का विचार किया और झेलम के मुहाने से अरब के समुद्र में पहुंच कर जहाज पर से ही फारिस तक जाना चाहा । सिकन्दर की ऐसी इच्छा प्रकट करते ही झेलम के किनारे पर तैरते हुए बेचारे गरीब मछुआहे या मल्लाहों की किश्तियां बेगार पकड़ ली गईं परन्तु वे उस यूनानी लाव लश्कर के ले जाने के लिये काफी न थीं । इस लिये विजित पहाड़ी सर्दारों के पास आज्ञापत्र भेज कर उसी वक्त लकड़ी मंगवाई गई और नवीन नौकाएं बनवाई गईं । इन नवीन नौकाओं के खेवे के वास्ते वे लोग नियत किए गए जो कि साइप्रस मिश्र आदि समुद्र के किनारे के देशों के थे और उसके यहां अब तक कारागार वास करते थे । यह सब काम होते होते (सन ई० पू०) ३२६ के अक्तूबर महीने का अन्त आ गया और उस यूनानी लश्कर के सिपाही सवार और लूट में पाए हुए जर जवा-हिरात को ढोने के लिये दो हजार डोंगियां तयार की गईं । पचीस पचीस डोंगियों के बेड़े बनाए गए और उन प्रत्येक बेड़ों पर ३० रोयट हर एक बेड़े के लिये रक्खे गए (१)

(१) इस विषय में बहुत लोगों का बहुत तरह का मत है किसीने ८०० किसीने एक हजार और किसीने १८०० डोंगियां बतलाई हैं परंतु हमारे(V. A. Smith) स्मिथ साहब ने दो हजार डोंगी साबित की है।

नावों पर सवार होने के पेश्तर सिकन्दर ने एक दरबार किया जिसमें उसने अपनी विजय किए भूभाग से सब राजों महाराजों या उनके राजदूतों को इकट्ठा किया। इसी दरबार में उसने झेलम और चिनाव के बीच की भूमि का प्रतिनिधि शासक नियत किया। उस समय झेलम और चिनाव के बीच में विशेष कर सात जातियां निवास करती थीं और उनका फैलाव कुल दो हजार गांवों में था। सिकन्दर के इस दरबार में तक्षशिला का राजा भी हाजिर था जो कि पोरस का पूरा शत्रु था परन्तु सिकन्दर ने उन दोनों में मित्रता करवा दी और इस मित्रता का सूत्र किसी विवाह आदि का सम्बन्ध करवा कर डाला गया था कि जिससे अब उसके न रहने पर भी फिर वे एक दूसरे के शत्रु न हो सकें। सिकन्दर ने तक्षशिला के राजा को झेलम और सिन्ध के बीच के भूभाग का प्रतिनिधि नियत किया और इस तरह से उसने उसकी उस सहायता का बलदा चुका दिया जो कि उसने अपने देश को विदेशी से विजय करवाने के लिये दी थी।

यह सब कर चुकने के बाद सिकन्दर किश्ती पर सवार हुआ। वह अपने सैनिकों से काम लेने में भी वैसा ही मुस्तैद था। वह अपने राज्य को अपने समाचार भेजने और पड़ाव पर पहुंच कर फौज़ के आराम का सुभीता सोच कर तब आगे बढ़ता था। उसने जनरल क्रटेरस और हैफिस्टन को आज्ञा दी कि वे दोनों कुछ सेना सहित आगे बढ़ कर राजा सौभूति की राजधानी पर आक्रमण करें। इस राजा को यूनानी लोगों ने सोफीटस या सोपीथीज करके लिखा

है। वे लिखते हैं कि "नमक" का यह पहाड़ जो कि भ्रेलम के किनारे से लेकर सिन्ध तक फैला हुआ है उसी सोफीटस की राजधानी का एक अंश था। परन्तु राजा सौभूति स्वयं सिकन्दर की शरण में आगया और उसने उसके साथ लश्कर के लिये रसद बरदास्त का भी उत्तम प्रबन्ध कर दिया (१)।

जिस समय सिकन्दर किश्ती पर सवार हो कर जल यात्रा करता था बारह हजार यूनानी सिपाहियों का दल भेलम के दहिने अर्थात् पश्चिमी किनारे पर से उसकी किश्तियों की रक्षा के लिये साथ साथ चला करता था। इस अनी का जनरल क्रटेरस था और जनरल हेफिस्टन की मातहती में कुछ यूनानी सेना और दो सौ हाथियों की भीड़ के साथ विजित राजाओं की हिन्दुस्तानी सेना बाएं किनारे पर चलती थी। जनरल फिलिपस (Philippos) जो कि अब तक सिन्ध के पश्चिमी किनारे का शासक था, कुछ फौज के साथ तीन मंजिल पीछे पीछे पीठि साहयकों की भांति यात्रा करने को प्रेरित किया गया।

अक्तूबर मास की अन्तिम तारीख के प्रातःकाल ही सिकन्दर की जलयात्रा आरम्भ हुई, पूर्व दिशा में अंशुमाली भगवान का दिग्दर्शन होते ही सिकन्दर ने जहाज पर पैर रक्खा। सिकन्दर का इशारा पाते ही क्या जल क्या स्थल दोनों पार की यूनानी सेना में तुरही के शब्द होने लगे, और उसी वक्त जहाजों के लंगड़ उठाए गए। वे जहाज मधे

(१) कनिंगहाम ने उसकी राजधानी का नाम सौरा करके लिखा है, और उसकी स्थिति झेलम के पश्चिमी किनारे पर बताई है। "सौभूति" सुनाम में पाए हुए उसके सिक्के पर का नाम है।

हुए बराबर एक से एक चलते थे और नदी किनारे खड़े हुए हिन्दुस्तानी लोग उन चलते हुए जहाजों को बड़ गहरी दृष्टि से देख रहे थे। अब तक उन्होंने घोड़ों को किश्ति पर सवार होते हुए न देखा था। बाल सूर्य्य की किरणों जहाजों पर के उड़ते हुए पताका विजेता सिकन्दर के आनन्द की सूचना देते जाते थे। झेलम नदी के गंभीर जल हजारों पतवारों के चलने की खलबलाहट, सैनिकों के उ स्वर से जै जै कार शब्द की चिल्लाहट और नाना भांति रणवाद्यों की आहट से नदी किनारे के कोसों तक के पहाड़ जंगल गूंज रहे थे। यह सब दृश्य किनारे पर खड़े हिन्दुस्तानी प्रजावर्ग को और भी सुहावना लगता था। बहुतेरे आदमी तो कोसों तक किनारे किनारे चले गए। तीन दिन यात्रा करने बाद कथित राजा सौभूति की राजधानी भीरा के पास जहाजों के लंगड़ डाले गए। नदी के दोनों किनारों पर क्रेटेरस और हैफिस्टिन एक दूसरे की तरफ मुकाबले पर खेमा लगा कर ठहरे। सिकन्दर राजा सौभूति का तीन दिन तक महिमान रहा, इस बीच में जनरल फिलिपस भी आगया। उसके पहुंचते ही सिकन्दर ने उसे झेलम के किनारे किनारे पेशखेमे के साथ चलने की आज्ञा दी और आप दो दिन और वहीं ठहरा रहा।

इस पड़ाव से यूनानी बेड़े का लंगड़ पांचवें दिन फिर उठाया गया और वह बेड़ा उस स्थान तक शान्ति भाव से चला गया जहां कि झेलम और चिनाब दोनों नदियां मिली हैं। इस द्वाब में और भी कई छोटी छोटी नदियां आ मिली हैं, उनके ज़ोर से इस पथरीले स्थान में उन दिनों

ग एक प्रकार की भँवर पैदा होती थी। यूनानी बेड़ा इस भँवर के चक्कर में पड़ गया, सब जहाज तीन तेरह होकर बहने लगे। दो जहाज चट्टानों में टकरा कर चूर चूर हो गए और समर के मल्लाहों और सिपाहियों का पता भी न लगा कि कहां गए। सिकन्दर भी इस कठिन आपत्ति के आक्रमण में आ गया था किन्तु अपने साहस और स्वामि-धर्मी मल्लाहों के परिश्रम से वह बच गया। जैसे तैसे और सब जहाज भी किनारे लग गए और उनके लंगर डाल दिए गए। (१)

(१) यूनानी लेखकों ने इस भँवर का स्थान तिम्मू (Timmu. E.Lat 31°. 10) के पास बतलाया है परन्तु इस समय उस द्वीप के स्थान पर ऐसे प्रचर बहाव या भँवर का कुछ भी नाम निशान नहीं है। परन्तु इससे यह भी नहीं विचार किया जा सकता कि ऐसा वर्णन यूनानी लेखकों की कल्पना है क्योंकि उक्त समय को आज दो हजार वर्ष से ऊपर हो चुके। इतने में संसार के विकास क्रमानुसार ऐसा लौट फेर हो जाना आश्चर्य एवं अनहोनी बात नहीं है। महम्मद बिन कासिम के आक्रमण को केवल एक हजार वर्ष का समय हुआ है परन्तु उस समय के यात्रियों के वर्णन किए हुए चिन्ह इस समय नहीं पाए जाते। हाल ही के भूकम्प से धर्म-शाला नगर का निशान लों मिटगया है। इसी प्रकार लौट फेर हुआ ही करते हैं। ईश्वरीय शक्तियां और प्राकृतिक घटनाएं मानव बुद्धि, और शक्ति के बाहर हैं। ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक चिन्हों के विषय में वाद विवाद न करना ही अच्छा है। इस विषय में हमें केवल जाति और देश के नाम मात्र का विवरण देना उचित है, क्योंकि हम देखते हैं कि प्राचीन यात्रियों या इतिहास लेखकों ने जिन जिन स्थानों का वर्णन किया है वे सब उस स्वरूप में नहीं हैं। अस्तु इससे यह सिद्ध है कि वे कुछ दिन में नाश भी हो जावें

झेलम नदी में इस भँवर के पड़ने का पता जो यूनानी लेखकों ने दिया है वह झंग के कहीं आस पास अनुमान किया जाता है। सिकन्दर ने भँवर से निकल कर उसी किनारे पर जहां कि इस समय झंग नगर आवाद है अपने जहाजों के लंगर डलवा दिए। वहीं पर उसे सूचना मिली कि आगे वढ़कर नदी की तराई में रहनेवाली मलाया या मालवा जाति के लोग उसका मुकावला करने पर उतारू होकर वड़ी वड़ी तयारियां कर रहे हैं और यह साहस केवल इन्हीं का नहीं है वरन आस पास के लोग भी उनकी सहायता करने को प्रस्तुत हैं। विशेष करके (झंग के) पूर्वोत्तर दिशा में वसने वाले सिवोई (Siboi) और एग्लेसोई (Agalassoi) * जाति के लोग शीघ्र ही उनकी सहायता के लिये जाने वाले हैं। यह सुनते ही सिकन्दर ने पहिले प्रवल शत्रु के सहायक सिवोई और एग्लेसोई जाति को ही

तो उस अवस्था में यद्यपि वे ऐतिहासिक लेख कल्पित मालूम होंगे, पर वास्तव में उनको कल्पित कहानी विचार करना हमारी भूल है। जो नदी आज से १००० वर्ष पहिले छोटा चश्मा थी वह इस समय वढ़ कर वड़ा नद वन गई तव उसके किनारे पर के गांवों का चिन्ह क्यों कर पाया जा सकता है।

* सिवोई एग्लेसोई ये दोनों शब्द यूनानी भाषा में यूनानियों के लिखे हुए हैं इनको शुद्ध संस्कृत या उस समय देश की भाषा में क्या उच्चारण था इसका पता नहीं। अंग्रेज वेत्ताओं ने निश्चय किया है कि वर्तमान जाट जति के सिवोई वंश की संतति हैं वे उस समय निपट असभ्य जाति की तरह रहते थे।

[द]मन करके शत्रु का पक्ष हीन करना चाहा इसलिये वह कुछ सेना जहाजी बेड़े की रक्षा पर छोड़ कर झंग से तीस मील उत्तर पूर्व आगे बढ़ गया और पहिले उसने सिबोई जाति पर आक्रमण किया। उसने इस जाति के बहुत से लोगों को कत्ल करवा डाला और बहुतों को कैद करके अपनी सेना का तथा बिक्री का गुलाम बनाया। इसके बाद उसने एग्लेसोई जाति को घेरा। उन लोगों ने यूनानी सेना का अच्छा मुकाबला किया। इस घेरे में बहुत यूनानी सेना हताहत हुई। बीस हजार ग्राम वासी मारे गए। परन्तु तब भी जब सिकन्दर ने देखा कि इनसे लगातार युद्ध करके पार पाना कठिन है तब उसने किले पर घेरा डलवा कर किले में बाहरी खान पान की सहायता न पहुंचने देने का प्रबन्ध किया। परन्तु इससे भी उन्होंने विदेशी विजेता की शरण में सिर देना स्वीकार न किया और वे बहादुर लोग स्त्री और बच्चों सहित आग में जल कर आपही अपने प्राण आहुति करने लगे। बहुत कुछ रोक टोक करने पर केवल तीन हजार आदमी बच सके। सिकन्दर ने उन्हें प्रसन्नता पूर्वक क्षमा करके अपना मित्र बना लिया।

जब तक सिकन्दर इस झंझट से निपटा तब तक उसके गुप्त चर मालवा जाति के समाचार लेकर आगए। उन्होंने सिकन्दर से कहा कि मालवा जाति के लोग बड़े कड़े हैं, वे अपनी इज्जत के पीछे जान दे देना कोई बड़ी बात नहीं समझते। छोटे बड़े से लेकर उस जाति के सब लोगों ने यह पक्का प्रण कर लिया है कि मरते मरजाना परन्तु विदेशी विजेता के शासनाधीन होकर अपनी स्वतंत्रा खोकर उसे सिर नहीं

झुकाना और विशेष आश्चर्य्य की बात तो यह है कि मलाया जाति के पार्श्ववर्ती अक्षयद्रुक्य (Oxydrkai) जाति के लोग जो कि रावी नदी के घाटी में दोनो किनारों पर निवास करते हैं और मलाया जाति के सनातन शत्रु हैं वे भी उनकी सहायता में सिर देने को प्रस्तुत हैं। उन दोनों जाति के लोगों ने अपने पूर्व्व वैर को बिलकुल विस्मरण कर दिया है और यह बातों की बातों में नहीं वरन एक जाति ने दूसरी जाति से परस्पर विवाह सम्बन्धी व्यवहार का सूत्र डाल कर घनिष्ट मित्रता उपार्जन करली है। उन सब लोगों का विचार है कि जहाँ पर झेलम और चिनाव रावी को धारा में प्रवेश करती है वहीं पर युद्ध छेड़ा जाकर अब तक अजेय विजेता पर विजय प्राप्त की जावे। उनके साथ अस्सी हजार पैदल, दस हजार सवार और नौ सौ रथी हैं। यह सुनते ही सिकन्दर के छक्के छूट गए। उसने निश्चय कर लिया कि जल यात्रा करके ऐसे प्रबल शत्रु पर जय पाना कठिन ही नहीं वरन असम्भव है। यद्यपि यूनानी सेना अत्यन्त रण कुशल थी परन्तु एक तो थल के जीव जल में, फिर एक की दशा दो होते हैं। अस्तु सिकन्दर ने जहाजी बेड़े को तो खाली चलने की आज्ञा दी और आप रण कुशल मैसीडोनियन सैनिकों की दो अनी लेकर थल मार्ग से चिनाव और रावी की घाटियों को बीचों बीच होकर आगे बढ़ा और मलाया जाति की जन्मभूमि में ऐसी शीघ्रता से पहुंच गया कि वे अपना विचार बाँधते ही रह गए। उनके सहायक अक्षयद्रुक्य लोग उनकी साहयता के लिये आते हुए रास्ते में ही रह गए। सिकन्दर ने वहां पहुंचते ही विजन बोल दी।

खेतों में किसान, जंगलों में चरवाहे, रास्ता चलते राहगीर, जो जहां मिला बराबर काटा जाने लगा। इसी तरह मार काट करते हुए सिकन्दर ने मलाया जाति के मुख्य मुख्य स्थानों पर आक्रमण करना शुरू किया। जिस कसबे पर सिकन्दर का पहिला हमला हुआ उसमें दो हजार आदमी मारे गए। पास के ही एक दूसरे गांव को परदिकस (Perdikkos) ने जा घेरा और लूट मार करके उसे तबाह कर दिया। इस अचानक आपत्ति से समस्त मलाया जाति पर वज्रपात सा हुआ, जो जहां थे सब अपने अपने प्राण बचाने के लिये भागने लगे, कोई पहाड़ों में, कोई घाटियों में, कोई कोई दूसरे देशों को भी जाने लगे, परन्तु यूनानी सेना ने उनका पीछा न छोड़ा। यूनानी सिपाही मालवा जाति को खोज खोज कर काटने लगे। इसी प्रकार मालवा लोग ज्यों ज्यों पूरब की तरफ भागते जाते थे यूनानी सिपाही उनका पीछा किए जाते थे, और उन्होंने मालवा जाति का यहां तक पीछा किया जहां कि इस समय मॉंट-गुमरी के जिले के गांव बसे हुए हैं। यहां पर मालवा जाति की राजधानी थी। इस गांव में प्रायः ब्राह्मण अधिक बसते थे। इसी गांव में उनका राजा रहता था। इस आपत्ति स्रोत का प्रवाह सुनते ही राजा ने गढ़ के फाटक बन्द करवा दिए। इसी जाति के राजा को किले में होकर लड़ने का यह पहिला ही समय था। परन्तु यूनानी सिपाहियों ने उस दुर्ग को बड़ी सवारी ध्वंस कर डाला। पांच हजार सिपाही मारे गए, परन्तु यूनानी सेना के हाथ जीते जागते लोग बहुत कम मिले क्योंकि ये लोग विजेता जाति का गुलाम

यन कर रहने से मरना ही अच्छा समझते थे इसलिये वे वहुधा परस्पर ही कट मरे ।

बचे खुचे मालवा लोगों ने एक दूसरे किले की शरण ली जिसका कि नाम नहीं मालूम है। परन्तु यूनानी लेखकों से इसकी स्थिति मुलतान (मूलस्थानपूर) से अस्सी या नव्वे मील पूर्वोत्तर मुलतान या झंग जिले की भूमि पर अनुमान की जाती है । इस किले में मालवा जाति के पचास हजार योद्धा एकत्रित हुए,परन्तु यूनानी सिपाहियों को किले का खोद बहाना क्या बड़ी बात थी, वे तो इस कार्य्य कौशल में अच्छे अभ्यस्त हो रहे थे, अस्तु जिस समय लड़ाई शुरू हुई दोनों ओर से सैल, सांग, शक्ति, भाले, बरछे आदि नाना प्रकार के हिंसक हथियार चलने लगे। तब सिकन्दर, प्यूकटस, लियोनाटस और अबरिस इन तीन साथियों सहित किले की दीवार पर चढ़ गया और वहां से खड़ा मैदान के मारके मार्क करने लगा। ज्योंही उसे छक मिला वह तुरन्त ही किले के अन्दर कूद पड़ा । उसके तीनों साथियों ने भी उसका साथ न छोड़ा । इन लोगों के किले में दाखिल होते ही अबरिस तो उसी दम मारा गया । परन्तु सिकन्दर एक पेड़ की आड़ में दीवार से दबक कर खड़ा होगया । उसके अभाग्य वश उस पर मालवा सेनापति की नजर पड़ गई और उसने इसके मारने की यथासाध्य चेष्टा की । उस ओर से चलाए हुए शस्त्रों में से एक सांग सिकन्दर की छाती में ऐसी लगी कि जिससे वह उसी दम बेहोश होकर गिर गया। परन्तु ईमान्दार साथियों ने अपनी जान हथेली पर रख कर उसे बचा लिया । इस दुर्घटना का किले

है बाहर की सेना को भी हाल मालूम था इसलिये ये लोग भी कुछ तो दीवारों पर से कुछ फाटक तोड़ कर मरते कटते गुप्तभाव सिकन्दर की सहायता के लिये आपहुंचे और कठिन लड़ाई करके किले पर उन्होंने कब्ज़ा कर लिया।

किले पर कब्ज़ा होजाने पर सिकन्दर के कलेजे में बेधा हुआ हरवा जिस समय निकाला गया तो इतना खून बहा कि जिससे यूनानी हकीमों को भी सिकन्दर के जीवन में सन्देह होगया। परन्तु ईश्वरेच्छा ऐसी न थी। कुछ देर बाद सिकन्दर सचेत होकर उठ बैठा। वह उसी समय डोली में सवार करा कर जहाजी बेड़े पर भेज दिया गया जो कि जनरल हैफिस्टन की हुकूमत में अब तक झेलम और चिनाब के जुड़ाव पर ठहरा हुआ था। इधर यूनानी फौज ने कुपित हो कर मालवा जाति के लोगों को काटना शुरू किया। मालवा जाति के जो लोग जीते जागते बचे उन्होंने सिकन्दर की शरण लेना स्वीकार कर लिया। अक्षयद्रक्ष लोग अपने से बलवान मालवा जाति की ऐसी दुर्गति देख कर फिर सिकन्दर के सम्मुख शस्त्र उठाने का साहस न कर सके उन्होंने आप ही आकर उसकी सेवा करना स्वीकार कर लिया। अस्तु सिकन्दर ने भी "जैसा कि बुद्धिमान विजेता को करना उचित है" उन लोगों को अभयदान देकर उनकी रक्षा की। कहा जाता है कि अक्षयद्रक्ष जाति के लोगों ने सिकन्दर को चार घोड़ों वाले पांच सौ रथ, एक हजार अच्छे बैल, सौ स्वर्ण मुद्रा और बहुत से चित्र विचित्र जंगली जानवरों के चमड़े, कछवों की ढालें इत्यादि नज़र कीं और अपनी तरफ से सोने चांदी

के साजों सहित तीन सौ सवार भी सदा के लिये उसके साथ कर दिए।

सिकन्दर ने अलयद्रक्य जाति की नजरें स्वीकार करके, अपने सेनापति फिलिप्स को उपरोक्त दोनों जातियों पर अपना प्रतिनिध शासक नियत किया। इसी समय काबुल के शासक की बद इन्तजामी की खबर पाई गई। इसलिये सिकंदर ने फिलिप्स की शासन मर्य्यादा को काबुल के आस पास तक बढ़ा दिया। साथ ही इसके सिकंदर ने सिन्ध नदी के किनारे की उपजाऊ भूमि पर कोई होनहार स्थान देख कर वहीं पर एक प्रशस्त नगर की नींव डाली और उसी नगर के पास ही एक बंदरगाहनुमा ऐसा स्थान भी बनवाया जहां पर जहाजी बेड़े सरलता से ठहर सकें और इसी नगर के व्यापारियों से माल का अदला बदला कर सकें। इसी नगर में उसने अपने प्रतिनिधि शासक फिलीप्स को रहने की आज्ञा दी। इस बीच में सिन्ध नदी के किनारे की कई एक छोटी छोटी जातियां जो कि अबलों स्वतंत्रता का आनन्द अनुभव कर रही थीं सिकन्दर की सेवक बनीं। इन जातियों को सिकन्दर ने योक्सथरोई (Oxathroi) ओसाडियोई (Ossadioi) करके लिखा है। उनके निवासस्थान का पता भी लिखा है। परंतु इस समय उसका कोई भी निशान मिलना कठिन है क्योंकि जहां पर उन लेखकों ने स्थल बतलाया है वहां पर इस समय पंजाब की पंचनदियों की गंभीर धारा बहती है और जहां नदी नालों का पता बतलाया है, वहां से वे नदी धाराएं हट कर कहीं की कहीं हो गई हैं। जल यात्रा के आरंभ से ही जनरल क्रटेरस जो

सबतों सेना सहित बाएं किनारे से चलता था दहिने कनारे पर बदल दिया गया । क्योंकि उस तरफ से किसी भारी शत्रु के आक्रमण का भय न था और इससे सफर की चाल में भी सुबीता पड़ा ।

इसके बाद सिकन्दर सिन्ध देश के राजा की तरफ जिसे "यूनानी लेखकों ने सैसिकनोशकरके लिखा है" बढ़ा । उस समय इस राजा की राजधानी अलोर या अरोर नाम से प्रसिद्ध थी और जिसका इस समय कुछ भी पता नहीं है; परन्तु यूनानी इतिहासकारों के लेखों में बतलाए हुए पते से इसकी स्थिति कहीं शिकारपुर के जिले में अनुमान की जाती है । यूनानी लेखकों से अरोर राज्य की प्रजा का वर्णन बड़े ही आश्चर्य और आनन्द जनक शब्दों में लिखा है । वे लिखते हैं कि इस प्रदेश के वृद्ध मनुष्य प्रायः एक सौ पचीस वर्ष से ऊपर की आयु के थे । वे सब हृष्ट पुष्ट और बलिष्ट थे और यह सब उनके ब्रह्मचर्य और नियमित रूप से जीवन चर्य्या के निर्वाह करने का फल था । इस देश के सब लोग नियमानुसार कार्य्य करने वाले थे । यद्यपि उनका देश सोने और चांदी की खानों से खाली न था परन्तु वे इन धातुओं को छूते भी न थे, वे जानते थे कि ये धातु बहुमूल्य हैं परन्तु साथ ही उनका अनुमान था कि ऐसी धातुओं का स्पर्श शारीरिक शक्ति की उन्नति के लिये बाधक है । उस जाति के युवा पुरुष अपना सब कार्य पौरुष के साथ सम्पादन करते थे । उन्हें किसी सेवक के सहारे जीवन बिताने की बान न थी और इसी लिये उस देश में गुलाम रखने की या दास दासी बनाने की प्रथा न

थी। वे लोग घी दूध का भोजन अधिक करते थे। उनके देश में दिवानी मुकद्दमों के फैसले के लिये कोई अदालतें न थीं केवल जघन्य उपद्रवों की जांच के लिये कुछ पंच नियत थे।

सिकन्दर की बुद्धिमता और वीरता और उसकी सेना के युद्ध कौशल की कीर्ति के समाचार राजा मैसिकनोज को पहिले ही मिल चुके थे, इसलिये वह बड़े समारोह के साथ स्वयं सिकन्दर से मिलने के लिये आगे बढ़ रहा था। सिकन्दर की और उसकी भेंट बीच ही में हुई। सिकन्दर उसे बड़े शिष्टाचार के साथ मिला। उसकी नजरें स्वीकार कीं और उसकी राज्य शासन की मर्य्यादा की प्रशंसा करते हुए सिकन्दर ने उसका बहुत कुछ सम्मान किया। किन्तु सिकन्दर के कुछेक दूर आगे बढ़ जाने पर राजा मैसिकनोज के कुलाचार्य्य पंडितो ने उसे बहुत कुछ धिक्कारा और कहा कि उसने एक विदेशी विजेता को साधारणतः सिर झुका कर अपने उच्च कुल में कलंक लगाया है। यह सुनते ही राजा मैसिकनोज का अत्म्याभिमान जागृत हो उठा और उसने उसी समय उस यूनानी सेना की मार काट करना आरम्भ कर दिया जो कि सिकन्दर ने वहां पर निज तरफ से रक्खी थी। अस्तु वहां का नायब प्रतिनिधि शासक पीथन फीलिपस के पास दौड़ गया और वहां से एक बड़ी सेना लेकर फिर से मैसिकनोज पर चढ़ आया। यह समाचार पाकर सिकन्दर ने भी कुछ सिपाही अपनी सेना में से भेजे अतएव पीथिन ने मैसिकनोज की राजधानी को उजाड़ दिया और उसे उसके उत्तेजक ब्राह्मण मंडली सहित बाँध कर फांसी पर चढ़ा दिया।

उधर सिकन्दर राजा असयनोज पर चढ़ दौड़ा और उसे बड़ी सवारी उसने कैद कर लिया और उसके पड़ोसी अन्य दो प्रसिद्ध नगरों को लूट मार कर के उजाड़ दिया। एक तो सिकन्दर के आतंक की चरचा सारे हिन्दुस्तान भर में पहिले से ही फैल रही थी परन्तु जब से मैसिकनोज को फांसी दी गई तब से सब लोग और भी डर गए। एक दूसरे हिन्दू सरदार सम्बोज (१) और पाटल (२) के राजा ने जो कि सिन्ध के डाब (डेल्टा) पर राज्य करता था सिकन्दर की शरण लेना स्वीकार किया। सिकन्दर ने इस स्थान पर अपना प्रकोप सब से अधिक दिखलाया। लोवर सिन्ध की भूमि पर बसने वाले अनुमान अस्सी हजार मनुष्य कत्ल करवा डाले गए। बहुतेरों को गुलामी में बिकवा डाला गया। सिकन्दर ने पाल (३) के राजा को आज्ञा दी कि वह अपनी राजधानी में जाकर यूनानी सेना के आतिथ्य का प्रबन्ध करे।

इसी समय सिकन्दर ने अपने प्रसिद्ध सेनापति क्रटेरस को आज्ञा दी कि वह अपनी सब सेना सहित कन्धार और सीस्तान के बीचों बीच होकर कारमीनिया के रास्ते

---

(१) सम्बोज की राजधानी का नाम सिन्दिमन करके लिखा है जिसका दूसरा नाम सिरवान भी अनुमान किया जा सकता है।

(२) पटल नगर का भी इस समय कोई पता नहीं है परन्तु जैसे जैसे निशान यूनानी लेखकों ने बतलाए हैं उनसे मालूम होता है कि पटल अहमदाबाद के पास ही कहीं होगा जो कि पुराने मझूरिया से ६ मील पश्चिम में है।

(३) यूनानी लोगों ने पाल के राजा का नाम इसी नगर के नाम के आधार पर पाटलपुर करके लिखा है।

से आगे बढ़े और हिन्दुस्तान से पाए हुए मालमत्तै तथा हाथी घोड़े और बैल आदि पशुओं को भी अपने ही साथ लेता जावे। यह आज्ञा पाते ही क्रेटेरस ने ता झेलम के बाएँ किनारे से नदी पार कर दाहिने होकर घर का रास्ता लिया और उसका पुत्र पीथन कुछ घुड़चढ़ी सेना सहित उसके स्थान पर नियत किया गया। एजीनेरस को आज्ञा मिली कि वह विजित स्थानों का पबन्ध करता हुआ पाटल में उससे जा मिले। यह सब प्रबन्ध करके सिकन्दर स्वयं सिन्ध के दाहिने किनारे पर चलने वाली फौज को लेकर आगे बढ़ा।

पाटल में पहुंच कर सिकन्दर ने देखा कि यह स्थान राजसी स्थिति एवं व्यापार क्षेत्र बनने के योग्य उत्तम है, इसलिये उसने हैफिस्टन को वहां रह कर एक दृढ़ नगर और कोट तथा उसके चारों ओर गहरी और चौड़ी खाई बनवाए जाने की आज्ञा दी और जिस जगह से सिन्ध नदी दो शाखाओं में विभाजित होगई है वहीं पर एक व्यापारिक बन्दरगाह बनाए जाने की भी आज्ञा दी। इसके बाद आप कुछ थोड़े से साथियों सहित सिन्ध की दक्षिण धारा में होकर समुद्र की तरफ बढ़ा। यद्यपि उसके जहाजी बेड़े के मल्लाह बड़े चतुर थे परन्तु वे अधिकतर शान्त अवस्था में ही कार्य्य करने के अभ्यस्त थे। इसलिये उन्हें पश्चिमी अर्थात् अरब के समुद्र की झकझोल में बड़ा कष्ट सहना पड़ा। परन्तु सिकन्दर ने इसकी कुछ भी परवाह न की, वह बराबर आगे ही बढ़ता गया और जब गंभीर जल से परिपूर्ण समुद्र में यूनानी किश्तियां फूल सी लहलहाने

इसी तब सिकन्दर ने भांति भांति के पशु और स्वर्ण रजत जवाहिरात समुद्र में डाल कर जलदेव की पूजा का प्रकरण पूरा किया। समुद्र की पूजा करके सिकन्दर फिर पीछे लौट पड़ा और पाटल में पहुंचा। यहां पर आकर उसने अरमकोट के पास स्थित साम्हर झील की सैर की और उसी झील से सट कर सिन्ध के मुहाने पर एक प्रशस्त सामुद्रिक स्टेशन तय्यार करवाया और यहीं पर कुछ सैनिक स्थान भी निर्मित करवाए। इस बन्दरगाह को बनवा कर यहां की आबादी बढ़ाने और इसे एक उत्तम व्यापार क्षेत्र बनाने के लिये सिकन्दर ने दूर दूर के धनी मानी मनुष्यों को बुला बुला कर वहां पर बसाया और इस स्थान को उसने अपने इच्छानुसार फारस और हिन्दुस्तान की सीमा का सम्बन्ध सूचक स्थान नियत किया।

पाटल नगर के सम्बन्ध में उपरोक्त बनावट सजावट करते करते सिकन्दर को चार महीने व्यतीत होगए तब तक अक्तूबर का महीना (३२५) आगया। अस्तु सिकन्दर ने वहां से जल यात्रा त्याग स्थल यात्रा करनी चाही। उसने अपने सामुद्रिक सेनापति नियार्कस को आज्ञा दी कि वह जहाज़ी बेड़े को लेकर परशियन खाड़ी से होता हुआ यूफरटीज़ के मुहाने पर उससे आ मिले और तब तक वह हैड्रोसिया (Hedrosia) (१) प्रदेश में जिसे अब मुकरान कहते हैं,

---

(१) हैड्रोसिया प्रान्त यद्यपि एक प्रकार से भारतवर्ष के सीमान्तर्गत माना गया है परन्तु हैड्रोसिया प्रान्त के समुद्र किनारे को मनुष्यों तथा वहां की भूमि का हाल जो किसी ने लिखा है उससे भी यह प्रान्त हिन्दुस्तान का एक अंश कहा जा सकता है किन्तु

भूमि से अलग होने पर भी वे हिन्दुस्तानियों में से ही किसी की सन्तान अनुमान किए गए थे। नियार्कस ने पुराली नदी के मुहाने में धस कर कोकला नाम के एक स्थान पर जहाजों को ठहराया और आप अपने सब मल्लाहों या सिपाहियों सहित भूभाग पर उतर कर जल यात्रा की थकावट मिटाने के लिये ठहर गया। उसी समय उसे समाचार मिला कि सिकन्दर के साथी एक मैसीडोनियन सेनापति लियोनाटस (Leonnatos) से और इस भूमि पर बसने वाली जाति ओरिगाई से लड़ाई हो रही है इसलिये वह जनरल लियोनाटस से मिलने के लिये आगे बढ़ा परन्तु तब तक यूनानी सेना ने शत्रु पर विजय प्राप्त करली। इस लड़ाई में प्रजा समूह के छः हजार आदमी मारे गए परन्तु यूनानी सेना के बहुत से सिपाही घायल ही हुए। अस्तु सिकन्दर की आज्ञानुसार एपोफनीज़ इस स्थान का प्रतिनिधि शासक नियत किया गया। यहां पर नियार्कस ने अपने थके मल्लाहों को तो लियोनाटस के साथ भूमार्ग पर से जाने की आज्ञा दी और उसकी सेना में से कुछ आदमी अपने साथ मल्लाहगीरी के लिये ले लिया।

इसके बाद पश्चिम दिशा में कई दिन लों जलयात्रा करने के बाद नियार्कस का जहाजी बेड़ा टैमरस नदी के किनारे पहुंचा जिसे आज कल हिंगोला कहते हैं। हिंगोल नदी के आस पास के रहने वाले मनुष्य निरे असभ्य वरन एक प्रकार के वनमानुष थे। वे लोग अन्नपाक आदि का भी व्यवहार करना भली भांति न जानते थे और न उनके पास कोई लोहे का हर्बा था। वे लोग तीर कमान से जंगली

पशुओं को मार मार कर उनका मास खाते और उन्हीं के शुष्क चर्म से काया ढांकते या सीत और वर्षा काल के दिनों में अपनी शरीर रक्षा करते थे। यहां पर नियार्कस को जहाजों के जीर्णोद्धार करने के लिये पांच दिन लों ठहरना पड़ा। छठें दिन जब वह यहां से चलकर एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ का भूभाग चट्टानों और पहाड़ियों से परिपूर्ण था। यहां के निवासी जनसमूह का चेहरा मोहरा हिन्दुस्तानियों से मिलता जुलता था एवं वे शिष्टाचार और आचार व्यवहार में भी हिन्दुस्तानी लोगों से थे, यदि भेद था तो केवल इतना ही कि वे अपने समाज के मृतक शवों को गाड़ते जलाते कुछ भी नहीं थे। वैसे ही उन्हें जंगली पशुओं का भोजन बनने के लिये गांव के बाहर खुले मैदान में फेंक देते थे। इस भूभाग को यूनानी लोगों ने मालन करके लिखा है और इस समय उसे राय मालिन के नाम से पुकारते हैं।

राय मालिन प्रदेश से सटकर ही ग्रोडेशिया प्रदेश की सीमा थी। जिस समय यूनानी मल्लाहों ने ग्रोडेशिया प्रदेश के समुद्र किनारे के रहने वाले मनुष्यों की रहन सहन देखी वे बहुत ही चकित चित्त हुए। नियार्कस लिखता है कि वे लोग केवल मछलियों का मास खाकर जीवन रक्षा करते थे, विशेष कर ह्वेलमछली इन्हें अधिक प्रिय थी और ह्वेल इस स्थान पर पाई भी अधिकता से जाती थी। उन लोगों के बड़े बड़े दुमंजिले और तिमंजिले मकानों के ठहर भी ह्वेल मछली के हाड़ों से बने थे। उन मकानों के बड़े बड़े दरवाजों में ह्वेल मछली के जबड़ों के ढांचे लगे हुए थे। यद्यपि

यूनानी मल्लाह इस विचित्र विचित्र चरित्रों को देख कैरें अत्यन्त प्रसन्न थे परन्तु वे पास वाले ही एक अस्तुला नाम टापू के विषय में भयभीत थे । मल्लाह यधिक इत्यादि नीच जाति के लोग प्रायः संदिग्ध चित्त तो हुआ ही करते हैं, यस यही कारण था कि वे उड़ती दंतकथाएं सुनकर ऐसे भयभीत होगए कि फिर अपने सीधे मार्ग पर यात्रा न कर सके । अस्तु वे जेडूस प्रायःद्वीप के पास से होते हुए कारमीनिया प्रदेश के किनारे पर आए। नियार्कस ने यहां पर अपने बेड़े का लंगर डलवा दिया और आप अपने सब साथियों सहित किनारे उतर गया । इस सभ्य प्रदेश में पहुंचने पर यूनानी मल्लाहों या सिपाहियों के आनन्द की सीमा न रही । यहां पर उन्हें वे सब वस्तुएं प्राप्त हो सकीं जिनके लिये वे अब तक ढूंढ़ रहे थे । साथ ही इसके उन्हें विशेष आनन्द इस बात का हुआ कि कुछ यूनानी सैनिक अपनी देशी पोशाक पहने हुए उन्हें नजर आए और उनकी जबानी उन्हें इस शुभ समाचार की भी सूचना मिली कि सिकन्दर यहां से केवल पांच पड़ाव पीछे आरहा है ।

यह समाचार पाते ही नियार्कस कुछ थोड़े से साथियों सहित सिकन्दर से मिलने के लिये पैदल मार्ग चला परन्तु जब वे लोग सिकन्दर के साम्हने पहुंचे तो सिकन्दर उन्हें पहचान भी न सका क्योंकि एक तो जलयात्रा का परिश्रम दूसरे उनके वस्त्र भी बिलकुल चिथड़े चिथड़े हो रहे थे । नियार्कस ने जब अपना नाम बतलाकर सिकन्दर को सलाम किया तब उसने समझा कि शायद यूनानी जहाजी बेड़ा डूब गया और ये लोग उन अभागे कष्ट यात्रियों में से बचे खुचे

मनुष्य मुझ तक आपहुंचे हैं। नियार्कस बादशाह का म
मलिन देख कर उसके आन्तरिक भाव को ताड़ गया औ
उसने कहा कि आपके प्रताप से सब जहाज खेम कुशल
किनारे पर लगे हैं आपके सिपाहियों में से एक भी मार
नहीं पड़ा।

इसके बाद नियार्कस ने वहां से आकर फिर से अपने
जहाजी बड़े का लंगर उठाया और सिकन्दर की सेना में
मिलने के लिये सुआ की खाड़ी होकर नदी इफरात के
मुहाने पर पहुंचने को चला परन्तु उसने रास्ते में ही
सुना कि सिकन्दर सुआ तक पहुंच चुका और अब वह
उससे मिलने के लिये नदी जदल में होकर फिर से लौटा
आ रहा है।

सिकन्दर का सफर।

जिस समय सिकन्दर नियार्कस को जहाजी बेड़े पर
छोड़ कर आप स्थल यात्रा को रवाना हुआ उस समय उसे
इस बात की खबर भी न थी कि जिस रास्ते से उसे जाना
है उस रास्ते में हाला पहाड़ पड़ता है और वह दुर्गम
पहाड़ केप मालिन को बीचों बीच चीरता हुआ समुद्र के
जल में घुस जाता है। सिकन्दर इस पहाड़ के पास पहुंचा
तो उसे इस पहाड़ का चक्कर लगाने के लिये समुद्र का
किनारा छोड़ देना पड़ा और वह पूर्व्व की तरफ हटकर
मुल्क ओरेटार के ऐसे उजाड़ प्रान्त में जा पड़ा कि जहां
कोसों तक हरयाली का नाम निशान न था, जिस तरफ
आंख उठाकर देखते प्रखर सूर्य्य की किरणों से तपे हुए
बालू के ढेर नजर आते थे। इस भूमि पर चलने में यूनानी

सिपाहियों को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। हजारों आदमी पानी के लिये त्राहि त्राहि करके मर गए और सब से कठिन बात तो यह थी कि उस प्रांत में अन्न अथवा अन्यान्य खाद्य वस्तुओं का सर्वथा अभाव था। उस प्रान्त के रहने वाले लोग अपने जीवन निर्वाह के लिये भेड़ें पाले हुए थे और वे भेड़ें मछलियों का मांस खिला खिला कर रक्खी जाती थीं। इस दुर्गम भूभाग को पार करने में सिकन्दर को साठ दिन लग गए। इस कठिन सफर को पार करके सिकन्दर की सेना जैड्रोसिया प्रांत की सरहद्द में पहुंची। जैड्रोसिया के राजा ने सिकन्दर की चढ़ाई का समाचार पाकर पहिले से ही उसकी पहुनाई के लिये सब तार तद्‌बीर ठीक कर रक्खी थी। ज्यों ही सिकन्दर की सेना ने जैड्रोसिया प्रांत की भूमि पर पैर रक्खा त्यों ही उनका हृदय आनन्द से भर गया। अब लौं दो महीने से जिन लोगों को अन्न तक देखने को न मिला था इस समय पद पद पर उनके लिये खाने पीने के सामान तय्यार थे। सिकन्दर ने भी अपनी सेना को छुट्टी दे दी। इसी तरह से खाती पीती गुलछर्रे उड़ाती हुई जब यूनानी सेना जैड्रोसिया की राजधानी में पहुंची तो वहां पर उस का और भी अधिक आदर सत्कार किया गया। जैड्रोसिया के राजा के सम्मान से सुखी होकर सिकन्दर ने वहां पर एक दरबार भी किया जिसमें उसने वहां के राजा को अपने बराबर आसन दिया और यूनानी सरदारों के समस्यानुसार उस राजा का सर चूम कर उसे बड़ा भारी रुतबा दिया।

इसी पड़ाव पर नियार्कस भी उससे आकर मिला था

जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है। नियार्क्स ने जिस समय सिकन्दर से अपनी समुद्र यात्रा की विचित्र बातों का वर्णन किया उस समय सिकन्दर का चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसकी इच्छा हुई कि वह पुनः जल यात्रा करे और अरब के किनारे का आनन्द देखता हुआ जावे। इस लिये उसने अपनी समुद्र यात्रा के लिये तयारियां भी कर लीं। परन्तु यह आनन्द उसके भाग्य में न बदा था। उसे उसी समय समाचार मिला कि झेलम और सिन्ध के दुआब पर के जिलों का प्रतिनिधि शासक देशी फ़ौज से मारडाला गया है और यद्यपि मारने वालों को फिलिप्स के शरीर रक्षकों ने मारडाला है परन्तु राज्य प्रबन्ध में बहुत गड़बड़ है। इसके सिवाय अन्यान्य विजित प्रदेशों में भी गड़बड़ होने का समाचार मिला। इस विषय में क्या किया जावे? विमुख मनुष्यों को क्योंकर ठीक किया जावे? सिकन्दर यह सब सोच ही रहा था कि तब लों उसे इस समाचार ने और भी बेचैन कर दिया कि उसकी मुख्य राजधानी मैसीडोन में भी कुशल नहीं है। वहां की प्रजा ओलंपियस के अन्यायी शासन से सुखी नहीं है। इसलिये वहां पर भी किसी भारी उपद्रव के होने की अशङ्का की जाती है।

यह सब समाचार पाकर सिकन्दर को अपनी जलयात्रा करने की अभिलाषा शान्त करनी पड़ी। उसने नियार्कस को तो उसी समय अपनी राह लेने की आज्ञा दी परन्तु आप ठहरा रहा। उसने सिन्ध नदी के ऊपरी जिलों पर शासन करने वाले पीथन को आज्ञा दी कि वह मृत फिस्टन

की जगह पर काम करे और एक पत्र राजा पोरस और तक्षशिला के राजा के पास भेजा गया जिसमें उसने उ हमेशा अपना फरमाबरदार रहने की ताकीद करते हुए लि कि उसके विजित मुल्क की देख भाल अच्छी तरह से रक्खें इसके अनन्तर सिकन्दर ने कारमीनिया के कूच किय यहां पर उसने अपने स्वामीधर्मी सेवक एबुलिटस के आक्सरटस के किसी कारण वश मारडाला और एबुलि को कैद करवा दिया और उसके पास जो लूट का माल यह सब जब्त कर लिया ।

सिकन्दर का फारिस में पहुंचना ।

कारमीनिया से चल कर सिकन्दर ने फारिस प्रदेश राजधानी का रास्ता लिया । उसने जिस घड़ी से फार की सीमा पर पैर रक्खा उसी समय से आदमी पीछे एक अशरफी बटवाना शुरू किया कि बहुतेरे आदमियों ने तो उन अशरफियों को नजर के स्वरूप में पुनः फेर दि और बहुतों ने नहीं भी फेरा । जब सिकन्दर फारिस सुप्रख्यात बादशाह काइरू (Crysus) के मकबरे के पास पहुं तो देखता क्या है कि एक पत्थर पर कुछ लिखा हु पड़ा है जिसे सिकन्दर ने यूनानी भाषा में उल्था करवा पढ़ा तो उसमें लिखा था "हे मनुष्य तू कौन है और क से आता है । मैं फारिस राज्य का स्थापक काइरू परन्तु इस समय मेरा शरीर ज़रा सी ज़मीन के नीचे दबा जाता है । धन्य यह घड़ी है" ।

जब कि सिकन्दर इसी स्थान पर था उसके कैलेनुअ नामक एक सत्यवेत्ता मुसाहब ने एक दफी लुटाए ग

जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है। नियार्कस ने जिस समय सिकन्दर से अपनी समुद्र यात्रा की विचित्र बातें का वर्णन किया उस समय सिकन्दर का चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसकी इच्छा हुई कि वह पुनः जल यात्रा करे और अरब के किनारे का आनन्द देखता हुआ जावे। इस लिये उसने अपनी समुद्र यात्रा के लिये तयारियां भी कर लीं। परन्तु यह आनन्द उसके भाग्य में न बदा था। उसे उसी समय समाचार मिला कि झेलम और सिन्ध के दुआब पर के जिलें का प्रतिनिधि शासक देशी फ़ौज से मारडाला गया है और यद्यपि मारने वालें को फिलिप्स के शरीर रक्षकों ने मारडाला है परन्तु राज्य प्रबन्ध में बहुत गड़बड़ है। इसके सिवाय अन्यान्य विजित प्रदेशों में भी गड़बड़ होने का समाचार मिला। इस विषय में क्या किया जावे? विमुख मनुष्यों को क्योंकर ठीक किया जावे? सिकन्दर यह सब सोच ही रहा था कि तब लों उसे इस समाचार ने और भी बेचैन कर दिया कि उसकी मुख्य राजधानी मैसीडोन में भी कुशल नहीं है। वहां की प्रजा ओलंपियस के अन्यायी शासन से सुखी नहीं है। इसलिये वहां पर भी किसी भारी उपद्रव के होने की अशङ्का की जाती है।

यह सब समाचार पाकर सिकन्दर को अपनी जलयात्रा करने की अभिलाषा शान्त करनी पड़ी। उसने नियार्कस को तो उसी समय अपनी राह लेने की आज्ञा दी परन्तु आप ठहरा रहा। उसने सिन्ध नदी के ऊपरी ज़िलें पर शासन करने वाले पीथन को आज्ञा दी कि वह मृत फ़िस्टन

गई थीं। इसके सिवाय बहुतेरे सिपाहियों का भी विवाह किया गया। सिकन्दर ने स्वयं दारा की लड़की से व्याह किया। किन्तु विशेष आनन्द की बात यह थी कि सब लोग एक ही साथ दुल्हा बने, एक ही साथ एकही घड़ी सब के सेगवार चुके। सिकन्दर ने अपने जीवन का प्रथम या अन्तिम सब से बड़ा यही जलसा किया। उसके इस जलसे में देश देशान्तर से छत्तीस हजार पाहुने आए थे, सब पाहुनों के लिये रत्नजड़ित सोने के पात्रों में भोजन परोसे गए थे। इस जलसे में छब्बीस हजार आठ सौ सत्तर टैलेण्ट व्यय हुए। एक टैलेण्ट अब के ग्यारह सौ रुपए के बराबर बतलाया गया है। यह उसकी तौल है परन्तु स्मरण रहे कि यह यूनानी सिक्का सोने का था।

विवाह सम्बन्धी जलसे हो चुकने पर वे तीस हजार युवा सिपाही उसके साम्हने पेश किए गए जिन्हें वह चार वर्ष पहिले लड़कपन की अवस्था में छोड़ गया था। वे लोग इस समय अच्छे हृष्ट पुष्ट बलिष्ट युवा होकर सैनिक शिक्षा में सम्पूर्ण रूप से निपुण होगए थे। उनका रणकौशल देख कर सिकन्दर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उन्हें उसने अपने शरीर रक्षकों में भरती किए जाने की आज्ञा दी। यह बात उसके मैसीडोनियन सरदारों को बहुत खटकी और वे आपस में कहने लगे कि अच्छा अब देखें इन नवीन युवकों के सहारे बादशाह क्या करता है। ये बातें सिकन्दर के कान तक भी जा पहुंची। इसलिये उसने उसी समय सब मैसीडोनियन सिपाहियों या मुसाहबों को अपने पास से अलग कर दिया और उनकी जगह पर वे ही

की इच्छा की और उसकी इच्छा पूर्ण की गई। तब उसने स्नान करके ईश्वर वन्दना की और मद्य की धार देकर देवताओं को तृप्त किया। इसके बाद उसने अपनी चोटी के बाल काट कर रथी पर फेंके और पीछे से आप भी उसी रथी पर चढ़ गया। रथी पर दृढ़ आसन से बैठ कर उसने अपने सब साथियों से विदा मांगी और कहा "हे मित्रो प्रसन्न रहो और अपने जीवन के शेष दिन बादशाह के साथ में खेलते खाते बिताओ। प्यारे भाइयों मैं अपने बादशाह से बैबलान में आकर मिलूंगा" इतना कह कर उसने सदा के लिये अपना बोल बन्द किया और अपने ऊपर बड़े बड़े लक्कड रक्खे जाने की आज्ञा दी। लक्कड़ रख कर उसमें आग लगा दी गई और आग की लौ के साथ ही साथ बहादुर कैलेनुअस की आत्मा भी अन्तर्धान हो गई।

कैलेनुअस की दाहक्रिया करके सिकन्दर ने एक दरबार खास किया और उसमें सम्मिलित अपने मुसाहिबों को आज्ञा दी कि जो सबसे अधिक मद्य पियेगा वह उमदा इनाम पावेगा। अस्तु परयेचस नामक एक दरबारी ने मनुष्य की खुराक से चौगुना शराब पीकर इनाम पाने का हौसिला दिखाया। परन्तु उस शराब ने परयेचस पर ऐसा नशा जमाया कि जब से वह बेहोश होकर गिरा फिर न उठा। केवल वही नहीं सिकन्दर के सौ मुसाहिबों में से चालीस शराब के ही शिकार बने। यहां से चलकर जब सिकन्दर सुआ में पहुंचा तब उसने वहां अपने नव युवक मुसाहिबों के विवाह की तय्यारियां ठानीं। उनके विवाह के लिये फारसी खानदान में से उत्तमोत्तम वंश की बेटियां चुनी

ईं थीं। इसके सिवाय बहुतेरे सिपाहियों का भी बियाह किया गया। सिकन्दर ने स्वयं दारा की लड़की से ब्याह किया। किन्तु विशेष आनन्द की बात यह थी कि सब लोग एक ही साथ दुलहा बने, एक ही साथ एकही घड़ी सब के सेतवार चुके। सिकन्दर ने अपने जीवन का प्रथम वा अन्तिम सब से बड़ा यही जलसा किया। उसके इस जलसे में देश देशान्तर से बत्तीस हजार पाहुने आए थे, सब पाहुनें के लिये रत्नजड़ित सोने के पात्रों में भोजन परोसे गए थे। इस जलसे में उन्नीस हजार आठ सौ सत्तर टैलेण्ट व्यय हुए। एक टैलेण्ट अब के ग्यारह सौ रुपए के बराबर बतलाया गया है। यह उसकी तौल है परन्तु स्मरण रहे कि यह यूनानी सिक्का सोने का था।

बिवाह सम्बन्धी जलसे हो चुकने पर वे तीन हजार युवा सिपाही उसके साम्हने पेश किए गए जिन्हें वह चार वर्ष पहिले लड़कपन की अवस्था में छोड़ गया था। वे लोग इस समय अच्छे हृष्ट पुष्ट बलिष्ट युवा होकर सैनिक शिक्षा में सम्पूर्ण रूप से निपुण होगए थे। उनका रणकौशल देख कर सिकन्दर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उन्हें उसने अपने शरीर रक्षकों में भरती किए जाने की आज्ञा दी। यह बात उसके मैसीडोनियन सरदारों को बहुत खटकी और वे आपस में कहने लगे कि अच्छा अब देखें इन नवीन युवकों के सहारे बादशाह क्या करता है। ये बातें सिकन्दर के कान तक भी जा पहुंची। इसलिये उसने उसी समय सब मैसीडोनियन सिपाहियों वा मुसाहबों को अपने पास से अलग कर दिया और उनकी जगह पर वे ही

फ़ारसी लोग भरती कर लिए गए। परन्तु कुछ दिनों के बाद वे लोग अपनी भूल पर पछताए और उन्होंने सिकन्दर के शरण में आकर अपनी भ्रष्ट कल्पनाओं के लिये माफ़ी चाही। सहनशील सिकन्दर ने उन्हें क्षमा कर दिया परन्तु उनका वह महत्व उसके चित से सदा के लिये दूर होगया।

इसी बीच में उसके प्यारे मित्र एवं वीर सेनानायक हैफिस्टन का स्वास्थ्य विगड़ उठा परन्तु वह इस वात को छिपाता रहा और सिकन्दर के जलसों में शामिल होकर वरावर मद्य पीता और खेल कूद करता रहा। इस अनियमित व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि वह एक ही दिन के वुखार में इस असार संसार से चल वसा।

हैफिस्टन की मृत्यु से सिकन्दर को वड़ा दुःख हुआ। उसने अपनी सेना में भी इस वात की आज्ञा करदी कि कोई भी आमोद-प्रमोद-जनक व्यवसाय का नाम न ले वरन उसने सेना के घोड़े गधे और जानवरों के शरीर पर के वाल कटवा कर उन पर भी वहादुर जनरल की गमी का निशान जाहिर किया और तव तक वरावर यही हाल रहा जव तक एमन के मन्दिर से यह भविष्य वाणी हुई कि हैफिस्टन को अर्द्ध देवता मान कर उसके नाम पर वलि दिया जावे। पशु तो वलि दिया ही गया परन्तु अपने शोकित मन को वहलाने की इच्छा से उसने उसी समय सेना तय्यार करके कासियंस जाति पर हमला किया। उसी जाति के सहस्रों मनुष्यों को कटवा कर लोहू की नदी वहाई और तव कुछ सन्तुष्ट होकर वोला यह नरवलि मेरे मित्र की आत्मा को शान्ति देगी इसलिये अव मैं सुखी हूं। इसके वाद उसने

अपने आप ही के एक चतुर विश्वकर्मा को आज्ञा दी कि वह हैफिस्टन के नाम पर एक ऐसा मकबरा बनावे जो कि संसार की समस्त ईमारतों में बड़ा और विचित्र हो और उसमें भांति भांति के जवाहिरात भी जड़े जावें। इस कार्य्य के लिये उसने दस हजार टैलेन्ट की आज्ञा देकर कहा कि यदि इससे भी अधिक व्यय हो तब भी कुछ परवाह नहीं परन्तु बनाने वाला अपनी विद्वता और चातुर्य्य खर्च करने में कमी न करें।

अन्तिम दृश्य।

इसके बाद सिकन्दर सुआ से बैबलान को रवाना हुआ। बैबलान पहुंचने के कुछ दिन पहिले ही नियार्कस भी उससे आमिला। नियार्कस ने सिकन्दर से मिलते ही कहा कि आप बैबलान जाने की इच्छा छोड़ दें क्योंकि मुझ से एक भविष्यद्वक्ता ने कहा है कि बैबलान में जाने से सिकन्दर की कुशल नहीं है। परन्तु सिकन्दर ने उसकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और वह आगे बढ़ता ही गया। जिस समय सिकन्दर बैबलान के नगरकोट के पास पहुंचा तो देखता क्या है कि आकाश में अगनित काक वृन्द परस्पर लड़ रहे हैं और एक मृत काक सिकन्दर के साम्हने भी आ गिरा। उसी समय उसे समाचार मिला कि बैबलान के सूबेदार ने बलिप्रदान के देव मन्दिर में जो उसकी कुशल के विषय में प्रश्न किया उसका उत्तर भी यही मिला कि बैबलान में आना सिकन्दर के लिये शुभ नहीं है। इन सब बातों से सिकन्दर का दिल बहुत ही डर गया परन्तु उसने अपना मानसिक भाव किसी पर प्रगट न होने दिया और

का मद था और इतना तेज था कि किसी धातु के बर्तन में वह रह भी नहीं सकता था। इसलि गधे के चमड़े में रख कर भेजा गया था। ऐसा तेज जहर दिए जाने पर भी सिकन्दर का आठ रोज लों बोलते चालते बीमार रहना एक असम्भव बात है।

जिस समय सिकन्दर की मृत्यु हुई उसकी स्त्री रोक्साना को गर्भ था। उसको पुत्र भी उत्पन्न हुआ किन्तु सिकन्दर की दूसरी स्त्री नेहाने माता पुत्र दोनों को मार डाला और आप भी मर गई। इसलिये सिकन्दर का वंश नाश हुआ। उसकी कोई सन्तान न रहने के कारण फिलिप का दूसरा पुत्र एरिडियस जो कि एक रक्खी हुई स्त्री से था मैसीडोन के राज्य सिंहासन का स्वामी हुआ।

किंवदन्ती है कि जिस समय सिकन्दर मरने लगा तब उसे इस बात का ख्याल हुआ कि मेरी मृत्यु से मेरी वृद्ध माता को अत्यन्त दुःख होगा। इसलिये उसने अपने मुसाहबों को आज्ञा दी कि वे ओलंपियस को उसकी मृत्यु का समाचार देने के पहिले उससे कहें कि सिकन्दर ने कहा है कि समस्त राज्यकोष खोल कर ओलंपियस अपने राज्य में शहर शहर गांव गांव इस बात का ढिंढ़ोरा पिटवा दे कि जिसके घर कोई मरा न होवे यहां आकर मन-माना धन रत्न उठा लेजावे और तब उसे उसकी मृत्यु का समाचार सुनावें। अस्तु उसकी आज्ञा का पालन किया गया, ओलंपियस ने खजाना खुलवा कर ढिंढ़ोरा पिटवा दिया, परन्तु तीन दिन व्यतीत होगए कोई भी ऐसा न आया जो यह कहे कि मेरे घर कोई मरा नहीं है, मैं यह

द्रव्य लूंगा । तब उससे कहा गया कि तेरा प्रतापी पुत्र सिकन्दर इस असार संसार से चल बसा और अन्तिम समय तेरे लिये यही सँदेसा कह गया है ।

का मद था और इतना तेज था कि किसी धातु के बर्तन में वह रह भी नहीं सकता था। इसलि गधे के चमड़े में रख कर भेजा गया था। ऐसा तेज जहर दिए जाने पर भी सिकन्दर का आठ रोज लों बोलते चालते बीमार रहना एक असम्भव बात है।

जिस समय सिकन्दर की मृत्यु हुई उसकी स्त्री रोक्साना को गर्भ था। उसको पुत्र भी उत्पन्न हुआ किन्तु सिकन्दर की दूसरी स्त्री नेहाने माता पुत्र दोनों को मार डाला और आप भी मर गई। इसलिये सिकन्दर का वंश नाश हुआ। उसकी कोई सन्तान न रहने के कारण फिलिप का दूसरा पुत्र एरिडियस जो कि एक रक्खी हुई स्त्री से था मैसीडोन के राज्य सिंहासन का स्वामी हुआ।

किंवदन्ती है कि जिस समय सिकन्दर मरने लगा तब उसे इस बात का ख्याल हुआ कि मेरी मृत्यु से मेरी वृद्ध माता को अत्यन्त दुःख होगा। इसलिये उसने अपने मुसाहबों को आज्ञा दी कि वे ओलंपियस को उसकी मृत्यु का समाचार देने के पहिले उससे कहें कि सिकन्दर ने कहा है कि समस्त राज्यकोष खोल कर ओलंपियस अपने राज्य में शहर शहर गांव गांव इस बात का ढिंढ़ोरा पिटवा दे कि जिसके घर कोई मरा न होवे यहां आकर मनमाना धन रत्न उठा लेजावे और तब उसे उसकी मृत्यु का समाचार सुनावें। अस्तु उसकी आज्ञा का पालन किया गया, ओलंपियस ने खजाना खुलवा कर ढिंढ़ोरा पिटवा दिया, परन्तु तीन दिन व्यतीत होगए कोई भी ऐसा न आया जो यह कहे कि मेरे घर कोई मरा नहीं है, मैं यह

द्रव्य लूंगा । तब उससे कहा गया कि तेरा प्रतापी पुत्र सिकन्दर इस असार संसार से चल बसा और अन्तिम समय तेरे लिये यही सँदेसा कह गया है ।